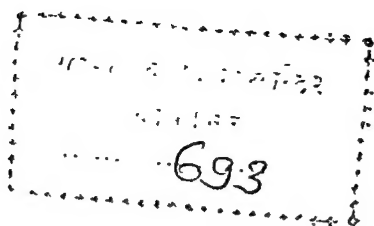
प्रथम संस्करण





लेखिका

१

जब ली चान-चुन अपने सोने की बैरिक में सर्दी सहन न कर सका तो वह तेजी से चु-जू-चेन के छोटे कमरे की ओर गया। चु-जू-चेन अपने कमरे के बीच में बैठा १९०० 'वाट' के बिजली के एक चूल्हे को ठीक कर रहा था। उसके हाथ सर्दी से जम रहे थे। ली चान-चुन उसे ऐसी अवस्था में देखकर ठहाका मारकर हँसने से अपने को न रोक सका, और उसने कहा :

"अरे मूर्ख ! क्या तुमने नहीं देखा कि बिजली पैदा करने की मशीन बिगड़ी पड़ी है ? और वह किस तरह बर्फ के ढेर में फंसी पड़ी है ? फिर तुम इस बिजली के चूल्हे को किस लिए ठीक कर रहे हो ? अगर तुम इस योग्य हो तो तुम्हें उस मशीन को सब से पहले ठीक करना चाहिए।"

चु-जू-चेन ने उसकी बात पर ध्यान भी न दिया और पूरे उत्साह से चूल्हे को ठीक करने के कार्य में लगा रहा और अपने काम पर व्यस्त सिर झुकाए हुए ही उसने उत्तर दिया : "उस कारीगर की क्या उपयोगिता जिसके हाथ सुबह से शाम तक बेकार और सुस्त पड़े रहें ? तुम कहते हो बिजली की मशीन बिगड़ी पड़ी है, पर क्या इसके यह मानी हैं कि वह हमेशा ऐसी ही बिगड़ी पड़ी रहेगी ? क्यों क्या यही मानी हैं ?"

"कौन जानता है ? भविष्य में क्या होगा, बताना कठिन है। सोवियत लाल सेना के जापानियों को खदेड़ देने के बाद से अनेकों

चीनी यहाँ आये; कुछ उन्हें लुटेरे कहते और कुछ उन्हें कुमिन्तांग वाले कहते थे। खैर, इससे कोई मतलब नहीं कि उन्हें क्या कहा जाता था, असल बात तो यह है कि उनमें से किसी ने बिजली की ओर तनिक-सा भी ध्यान नहीं दिया।"

"वे जो भी हों, लुटेरे या कुमिन्तांग वाले, चूँकि जापानी इन्जीनीयर चले गए हैं तो क्या अब ऐसा कोई नहीं जो उन्हें बना सके?"

"यह तो गर्मी के मौसम में बर्फ की आशा करने के समान है। छोड़ो भी उसकी मरम्मत की बात, जो कि बिलकुल असम्भव है। चलो ज़रा बाहर चलें और सूरज की गर्मी से अपने को गर्म करें। लोगों का कहना है कि कुंआरों की जिन्दगी बड़ी मुश्किल की जिन्दगी होती है, पर मैं तो कहता हूँ कि बिना गर्मी के जाड़ा बिताने की मुश्किल के मुकाबिले में यह कुछ भी नहीं है।" चु-यू-चेन को मना करने का अवसर बिना दिये ही, ली उसे बाहर घसीट लाया और दफ्तर की ओर ले चला।

ली थान-चुन बिजली घर के एक विभाग में लकड़ी का काम करता था। उसके बदन का गठन बड़ा ही ठोस और मजबूत था। वह बड़ा ही शान्त प्रकृति का व्यक्ति था लेकिन कभी-कभी वह जिद्दी भी हो जाता था। चु-यू-चेन एक कुली था। जापानी अधिकार के दिनों में वह रोज़ बिजली घर का फर्श साफ करता था। वह मशीनों को बड़े गौर से देखता रहता था; किन्तु उसे न कभी उन्हें छूने का ही अवसर मिला और न नज़दीक से उनके चलाने को ही देखने का अवसर मिला। [illegible] [illegible] घूमने की [illegible] करता और विशेषतः [illegible] उसका ध्यान आकर्षित करता था। वह अपने मन में सोचता रहता, 'मुझे सन्देह है कि ये जापानी मुझे कभी इन [illegible] को [illegible] का अवसर भी देंगे!' [illegible] ली थान-चुन से [illegible] [illegible]। वह उसका [illegible] था, लेकिन उसकी [illegible] [illegible]। वह [illegible] [illegible] और [illegible]

शर्मीला था। उसकी ली चान-चेन जैसे खुले दिल वालों से ही पटरी बैठती थी। उन्होंने दफ्तर के सामने सीढ़ियों पर मुर्दों के गड्ढे की ओर टकटकी बाँधकर देखते हुए बूढ़े सुन को देखा।

"देखो! वह फिर अपने आप ही दिन में ही सपने देख रहा है। क्या तुमने ध्यान दिया है चु-जू-चेन, कि इधर पिछले कुछ दिनों से उस बूढ़े के दिमाग़ में कुछ उथल-पुथल-सी हो रही है?" बूढ़े सुन की ओर देखते हुए ली चान-चुन ने चु को अपनी भवों से उधर इशारा किया।

"क्या ऐसा सम्भव है कि वह गाँव की उस बूढ़ी विधवा में दिलचस्पी रखता हो?"

"मेरा मतलब यह नहीं है। वह उस बिजली की मशीन के बारे में सोचता रहता है। वह कुछ योजना बना रहा है, हो सकता है—ओह अच्छा, वह हमारे लिए पामेन[1] से राशन लेने गया था और वह बूढ़ा है और अनुभवी भी है।"

ली चान-चुन ने ठीक अन्दाज़ लगाया था। इन दिनों बूढ़ा सुन वास्तव में बिजली की मशीन के बारे में ही योजनाएं बना रहा था। वह दफ्तर के सामने बैठा पहाड़ी के साये में स्थित बिजली की मशीन को सिर नीचा किए एकटक देखता रहता, और इस तरह वह घण्टों बैठा रहता था। बिजली की मशीन इससे पहले कभी इतना शान्त न रही थी। उसकी यह खामोशी बड़ी पीड़ाजनक थी। चारों ओर नज़र दौड़ाकर हर कोई यह देख सकता था कि पहाड़ियों की चोटियाँ बर्फ में खो गई हैं; लेकिन पहले के जाड़ों में इस तरह के बर्फीले और कुहरे से भरे स्थान में मशीनें बड़ा शोर मचाती थीं। गर्मियों में पहाड़ियाँ हरे-भरे बालूत के वृक्षों, जंगली खुर्मानियों, जंगली सफेद फल वाले कटीले पेड़ों, छोटी-छोटी कंटीली झाड़ियों, खूबसूरत चमकीले जंगली लाल नरगिसों, कमलों, प्यारे-प्यारे जंगली गुलाबों, बैंगनी रंग के सुन्दर फूलों तथा अनेक अन्य प्रकार से जंगली फूलों से छा जाती थीं। चिड़ियाँ

१. चीनी सरकारी दफ्तर।

चहचहातीं, पतंगें ऊँचे नीले आसमान पर नाचतीं; और पहाड़ी के चरणों में मशीनें शोर करती थीं। जाड़े गरडिल झील का उत्तरी सिरा इतना स्वच्छ और चमकीला था जितना शीशा; केवल जब-तब झील की मछलियाँ उछलकर पानी की सुकुमार सतह को तोड़कर ऊपर आ जातीं। अब यह झील जमकर बर्फ की चट्टान बन गई थी। जंगली फूल और जंगली घास सफेद बर्फ की चादर के नीचे छुप गई थी; पहाड़ी जंगल के जंगली जानवर भी छिप गये थे, और गाँव के सभी लोग इस कड़ाके की सर्दी से भागकर अपने छोटे-छोटे झोंपड़ों में शरण ले रहे थे। सिवाय हवा की सनसनाहट के और कोई आवाज़ नहीं सुनाई पड़ रही थी। बिजली की मशीन के बारे में—सचमुच शर्म की बात थी; जापानी भागते समय उसे तोड़ गए थे। १५ अगस्त के बाद उस जगह पर कुमिन्तांग का अधिकार हो गया था। उन्होंने उसके एक पुर्जे को खोल दिया था ताकि मशीन घर में पानी भर जाय। जिससे अब वह बर्फ की एक मोटी तह में जम गई थी। मशीन के दूसरे हिस्सों की हालत तो और भी बुरी थी। उसके पुर्जे-पुर्जे बिखरे पड़े थे।

यह सब देखकर [illegible] जिसके आँखों के सामने ही इस बिजली घर का निर्माण हुआ था, अत्यन्त ही व्यथित हो रहा था। उसने अपनी लम्बी बाँहें धूप में गर्म होने के लिए फैला दीं। वह एक लम्बा-तड़ंगा आदमी था, गठे हुए शरीर, लम्बी [illegible], लम्बे चेहरे और लम्बी नाक वाला आदमी। वह जो-कुछ भी करता धीरे-धीरे और पूरे निश्चय के साथ करता था। इसी कारण उसे कभी-कभी दूसरा [illegible]। वे कभी-कभी उसे पीठ पर थपथपा जाते और तब वह पीछे घूम कर [illegible] के बीच निकल जाते। लेकिन वास्तव में वह बच्चों पर कभी क्रुद्ध न होता; [illegible] था। [illegible] था। [illegible] थी। तब वह [illegible] करता हुआ

अपने को उनका पिता बनाता और खास तौर से जवान औरतों के साथ तो उसकी यह आदत और भी सजग हो उठती। जवान लोग उसकी इस आदत का दोस्ताना तरीकों से प्रतिवाद करते :

"तुम किसे बेटा कह रहे हो?...."

"किसे चाहिए तुम जैसा बाप?"

पर जो-कुछ भी वे कहते उससे वह क्रुद्ध न होता और दिल खोल कर हँसता। सिर्फ एक बार उसे दुःख हुआ था, और वह भी तब, जब एक अधेड़ उम्र के आदमी ने जो उसके जीवन-इतिहास को जानता था, जान-बूझकर उसे दुःख पहुँचाने के लिए कहा :

"क्या बाप बनने से तुम्हारा मन अभी नहीं भरा?"

बूढ़ा सुन शान्तुंग का रहने वाला था। वह उन्नीस वर्ष की आयु तक और लोगों के यहाँ मज़दूरी करता था। उसी समय उसके पिता की मृत्यु हो गई। मरते समय उसके पिता ने बाहर खेतों की ओर संकेत करते हुए कहा था—"धरती, किसान बिना धरती के नहीं रह सकता। मेहनत करना...अपनी पूरी शक्ति से, जो तुम्हारे अन्दर है, मेहनत करना। परमात्मा...बुरा नहीं होने देगा...अच्छे, अच्छे लोगों का।" उसने अपने पिता की सलाह के अनुसार ही काम किया, और पाँच वर्ष तक गुलामी करता रहा लेकिन वह एक मुट्ठी धरती खरीदने भर को भी न कमा सका। फिर उसकी माँ मर गई और फिर अकाल पड़ गया। वह धैर्य खो बैठा। उसने अपना फावड़ा फेंक दिया। और अपने बीवी बच्चों को छोड़कर शहर में बढ़ईगीरी सीखने चला गया। वह बड़ा ही मेहनती और होशियार था। तीन साल बाद वह बढ़ईगीरी में पूरा माहिर होकर अपने घर वापस आया। जब वह घर वापस आया तो उस समय तक उसका लड़का टाइगर नौ वर्ष का हो चुका था। वह अब आग जला सकता था और अपनी माँ का डोरा बँटने में हाथ बँटाता था। उसकी बीवी बुनने में बड़ी कुशल थी और तीन साल तक माँ-बेटा अपनी गुज़र आसानी से चलाते रहे थे। सुन गाँव में सबसे होशि-

चहचहातीं, पतंगें ऊँचे नीले आसमान पर नाचतीं; और पहाड़ी के चरणों में मशीनें शोर करती थीं। जादे गरडिल झील का उत्तरी सिरा इतना स्वच्छ और चमकीला था जितना शीशा; केवल जब-तब झील की मछलियाँ उछलकर पानी की एकसार सतह को तोड़कर ऊपर आ जातीं। अब वह झील जमकर बर्फ की चट्टान बन गई थी। जंगली फूल और जंगली घास सफेद बर्फ की चादर के नीचे छुप गई थी; पहाड़ी जंगल के जंगली जानवर भी छिप गये थे, और गाँव के सभी लोग इस कड़ाके की सर्दी से भागकर अपने छोटे-छोटे झोंपड़ों में शरण ले रहे थे। सिवाय हवा की सनसनाहट के और कोई आवाज़ नहीं सुनाई पड़ रही थी। बिजली की मशीन के बारे में—सचमुच शर्म की बात थी; जापानी भागते समय उसे तोड़ गए थे। १५ अगस्त के बाद उस जगह पर कुमिन्तांग का अधिकार हो गया था। उन्होंने उसके एक पुर्जे को खोल दिया था ताकि मशीन घर में पानी भर जाय। जिससे अब वह बर्फ की एक मोटी तह में जम गई थी। मशीन के दूसरे हिस्सों की हालत तो और भी बुरी थी। उसके पुर्जे-पुर्जे बिखरे पड़े थे।

यह सब देखकर बूढ़ा सुन जिसके आँखों के सामने ही इस बिजली घर का निर्माण हुआ था, अत्यन्त ही व्यथित हो रहा था। उसने अपनी लम्बी टाँगे धूप में गर्म होने के लिए फैला दीं। वह एक लम्बा-तड़ंगा आदमी था, गठे हुए शरीर, लम्बी पौड़ी, लम्बे चेहरे और लम्बी नाक वाला आदमी। वह जो-कुछ भी करता धीरे-धीरे और पूरे निश्चय के साथ करता था। इसी कारण बच्चे कभी-कभी इसका खाका खींचते। वे कभी-कभी उसे पीठ पर तमाचा मारते और जब तक वह पीछे घूम कर देखता तब तक वे पहाड़ी के नीचे निकल जाते। लेकिन वास्तव में वह बच्चों पर कभी क्रुद्ध न होता; वह क्रुद्ध होने का स्वांग सिर्फ धमकाने के लिए ही करता था। वह बच्चों को अपने बेटों की ही तरह प्यार करता था। बूढ़े सुन को एक अजीब आदत थी। जब वह कभी तीस वर्ष से नीचे की उम्र वालों से मिलता तो वह मज़ाक करता हुआ

अपने को उनका पिता बनाता और खास तौर से जवान औरतों के साथ तो उसकी यह आदत और भी सजग हो उठती। जवान लोग उसकी इस आदत का दोस्ताना तरीकों से प्रतिवाद करते :

"तुम किसे बेटा कह रहे हो?...."

"किसे चाहिए तुम जैसा बाप?"

पर जो-कुछ भी वे कहते उससे वह क्रुद्ध न होता और दिल खोल कर हँसता। सिर्फ एक बार उसे दुःख हुआ था, और वह भी तब, जब एक अधेड़ उम्र के आदमी ने जो उसके जीवन-इतिहास को जानता था, जान-बूझकर उसे दुःख पहुँचाने के लिए कहा :

"क्या बाप बनने से तुम्हारा मन अभी नहीं भरा?"

बूढ़ा सुन शान्तुंग का रहने वाला था। वह उन्नीस वर्ष की आयु तक और लोगों के यहाँ मज़दूरी करता था। उसी समय उसके पिता की मृत्यु हो गई। मरते समय उसके पिता ने बाहर खेतों की ओर संकेत करते हुए कहा था—"धरती, किसान बिना धरती के नहीं रह सकता। मेहनत करना...अपनी पूरी शक्ति से, जो तुम्हारे अन्दर है, मेहनत करना। परमात्मा...बुरा नहीं होने देगा...अच्छे, अच्छे लोगों का।" उसने अपने पिता की सलाह के अनुसार ही काम किया, और पाँच वर्ष तक गुलामी करता रहा लेकिन वह एक मुट्ठी धरती खरीदने भर को भी न कमा सका। फिर उसकी माँ मर गई और फिर अकाल पड़ गया। वह धैर्य खो बैठा। उसने अपना फावड़ा फेंक दिया। और अपने बीवी बच्चों को छोड़कर शहर में बढ़ईगीरी सीखने चला गया। वह बड़ा ही मेहनती और होशियार था। तीन साल बाद वह बढ़ईगीरी में पूरा माहिर होकर अपने घर वापस आया। जब वह घर वापस आया तो उस समय तक उसका लड़का टाइगर नौ वर्ष का हो चुका था। वह अब आग जला सकता था और अपनी माँ का डोरा बँटने में हाथ बँटाता था। उसकी बीबी बुनने में बड़ी कुशल थी और तीन साल तक माँ-बेटा अपनी गुज़र आसानी से चलाते रहे थे। सुन गाँव में सबसे होशि-

यार बढ़ई था। वह बड़ी तेज़ी से काम करता और समय का पाबन्द था। उसका काम बुरा नहीं चल रहा था। उस छोटे से माँ-बेटा और बाप के परिवार में सभी बड़े मेहनती थे। सुन लगातार अपने बाप के मरते समय के शब्द अपने बेटे से दुहराता रहता :

"अगर कोई आदमी मेहनती है और अपनी पूरी शक्ति और योग्यता से काम करता है तो वह जिन्दगी की सारी कठिनाइयों को आसान कर सकता है और कभी भी हमेशा गरीब नहीं रहेगा।" कभी-कभी जब टाइगर स्कूल से घर वापस आ स्टूल पर बैठकर डोरा बटता, तो उसका पिता उसकी बगल में बैठ जाता उसको पंखा झलता हुआ, और कहता :

"कोई काम न करना और सिर्फ पड़े-पड़े खाना और बच्चे पैदा करना कितना अपमानजनक है। ऐसे आदमी के बच्चे भी बड़े होकर काम नहीं करेंगे। वे भी बैठे-बैठे खायेंगे और सिर्फ अपने बच्चे पैदा करते रहेंगे। यह तो अमीर आदमियों का काम है!" तब वह अपनी उँगली पर ऐसे दर्जनों आदमियों के नाम की गिनती करता : "इस परिवार का लड़का सिर्फ अपने खाने-पीने की फ़िकर करता है और किसी काम करने की जिम्मेदारी नहीं लेता है; उस परिवार का लड़का महज़ रुपये बरबाद करता है; वह सिर्फ अच्छे कपड़े पहनना ही पसन्द करता है और वेश्याओं के यहाँ जाता है।..."

अपना काम रोक कर पिता के चेहरे पर टकटकी बाँधे टाइगर चुपचाप उसकी बातों को ग़ौर से सुनता रहता। तब वह बात करना बन्द कर देता और पंखा नीचे रख देता और थोड़ा मुस्कराकर टाइगर के हाथ की चरखी घुमा देता। टाइगर अचकचा उठता और शरमा जाता और मुस्कराते हुए पिता से और आगे कहने की प्रार्थना करते हुए तेज़ी से अपना काम करने लगता :

"पिता! कहते चलो।"

इसी तरह दो साल बीत जाने के बाद जब टाइगर प्राइमरी स्कूल

पास करने को था उसकी माँ को तपेदिक़ हो गई और उसे काम करना बन्द करना पड़ा। उसे लगातार दवा खानी पड़ती जिसमें काफ़ी खर्च पड़ जाता था; और उस तरह से पिछले कुछ वर्षों में बड़ी मेहनत से जो कुछ रुपया उन्होंने जमा किया था सारा-का-सारा खर्च हो गया। अगले दो वर्षों में उसे कुछ आराम हुआ, लेकिन तभी भयंकर सूखा पड़ गया। जमीन भी पानी की कमी से फट गई, नदियाँ सूख गईं। मक्के का एक-एक दाना हीरे की तरह कीमती हो गया। सुन ने सोचा कि अगर उसका परिवार वहीं रहता है तो वह भूखों मर जायगा, इसलिए उसने अपनी बीवी और बेटे को लेकर उत्तर-पूर्व की ओर जाने का निश्चय किया।

धीरे-धीरे टाइगर बड़ा होता गया। उसकी माँ बीमारी के कारण बिलकुल अपाहिज हो गई थी। बाप-बेटा दोनों ही जो काम भी मिलता उसे ही करते—लुहारी का, बढ़ई का, मशीन साफ करने का, सामान ढोने का। लेकिन फिर भी उसके परिवार में अच्छे दिन नहीं ही लौटे।

'कांग ते' के पाँचवें वर्ष के तथाकथित मचकू के पिट्ठू राजा पू० ई के राज्यकाल में जापानियों ने जादे गरडिल झील पर बिजली घर बनाने के लिए मज़दूरों की भर्ती की। दोनों बाप-बेटे वहाँ चले गये। सुन ने अपनी बीवी को सीलियांग चेन में ही छोड़ दिया और टाइगर को लेकर उस सुनसान उजाड़ घाटी में चला गया। उस समय टाइगर की उम्र बाईस वर्ष की थी। वह दुबला पतला पर ठोस था और उसका क़द लम्बा था।

टाइगर का विचार उसे और भी व्यथित कर देता था। अगर वह ज़िन्दा रहता तो वह उस समय ली चान-चुन और दूसरों से बड़ा होता; उसकी शादी भी हो गई होती और बच्चे भी हो गये होते। आह, वह जगह बड़ी ही भयानक थी। उस घाटी में निरे खूँखार भेड़िये भरे हुए थे। जब वहाँ काम करने के लिए जापानियों ने करीब बीस हज़ार मज़-दूर भर्ती किये तब वे भेड़िये वहाँ से दूसरी ओर की पहाड़ी मोतिंग में

खदेड़ दिये गए थे। पहले वहाँ के मालिक भेड़िये थे और उनके बाद जापानी।

एक अस्थायी रेलवे लाइन भी बनाई गई, चट्टानें और पत्थर तोड़े गये; खचर-खचर शोर मचाती हुई गाड़ियाँ इधर-उधर घूमने लगीं। नदी के किनारे इमारतें खड़ी हो गईं। मजदूर वहाँ दिन और रात, जाड़े और गर्मी में ऐसे काम करते जैसे क़ैदी गाली-गलौज और कोड़े से और मरने के डर से विवश होकर काम करते हैं। इस समय भी बूढ़ा सुन उन दिनों की याद करके ऐसा महसूस करता था मानो वह आज भी जापानी फोरमैन के कोड़े से पीटा जा रहा था। उसने ध्यान ही नहीं दिया कि कब ली चान-चुन और चु-जू-चेन उसके पास पहुँच गये। ली ने पास पहुँचकर उसके पीठ पर एक हल्की-सी थपकी दी। सुन तो जापानियों के अत्याचारों के बारे में सोच रहा था। अपने पीठ पर थपकी पाकर वह डरकर चौंक उठा, लेकिन जब उसने दो ईमानदार और भले आदमियों को पास खड़े देखा तो मुस्करा दिया और बोला:

"तो तुम दोनों हो! आओ और पिता के साथ बैठो।"

"तुमने क्या समझा था कि कौन है?" ली चान-चुन ने बच्चे की तरह भोलेपन से मुस्कराते हुए पूछा। बूढ़े सुन के साथ रहते वह ऐसा महसूस करता मानो वह अपने चचा के साथ हो।

"मैने समझा था कि क़ाजिमा है।" मुस्कराते हुए बूढ़े सुन ने जबाब दिया। यह सुनकर चु-जू-चेन हँस दिया, पर ली चान-चुन बुरा मान गया। वे दोनों तुरन्त बोले:

"तो तुम क़ाज़िमा के बारे में सोच रहे थे बूढ़े सुन," चु ने हँसते हुए कहा।

"ली चान-चुन ने कहा: "जब सोवियत लाल सेना उत्तर-पूर्वी चीन को स्वतन्त्र करने में हमारी सहायता कर रही थीं, तब तुम इतने खुश थे जितना हँसता हुआ एक बुद्ध। तुम रोज भुनभुनाते रहते थे कि तुम एक चीनी हो, एक चीनी हो अगर कोई मंचूकू का जिक्र भी कर

देता था तो तुम क्रुद्ध हो जाते थे; और तुम अक्सर अपने सोवियत-यूनियन के दोस्त लम्बी नाक वाले सेमिनोव के बारे में, जिसने तुम्हें अपनी निशानी के तौर पर एक मैडिल दिया था, बातें करते थे—फिर भी आज तुम्हें क़ाज़िमा ही याद आ रहा है और सेमिनोव भूल गया! तुम हम चीनियों को भी क़ाज़िमा समझने की ग़लती करते हो।"

"लेकिन इससे तो तुम क़ाजिमा नहीं हो गये, क्यों हो गये क्या?" बूढ़े सुन ने साँस भरते हुए और अपनी चौड़ी हथेली से उसे थपथपाते हुए कहा : "सेमिनोव का जहाँ तक सम्बन्ध है, मैं उसे और उसके साथियों को कभी नहीं भूल सकता। वे अब अपने देश वापस चले गए हैं। वहाँ उन्हें बहुत काम करना है; वे हमारे साथ नहीं ठहर सकते। मैं क़ाजिमा और सुजुकी की और भेड़िये, कुत्तों की और उन दसियों हज़ारों अपने भाइयों की, जिन्हें उन्होंने अन्याय से मार डार डाला है, याद किये बिना नहीं भी रह सकता...." बूढ़ा सुन अपने इन विचारों से बड़ा ही व्यथित हो गया था। ली ने जब यह सुना तो न सिर्फ उसका गुस्सा ही खत्म हो गया, बल्कि स्वयं भी उसके दुःख से दुखी हो उठा। उसने भी बिगड़ी पड़ी मशीन पर नजर डाली। थोड़ी देर बाद बूढ़े सुन ने नर्मी और गम्भीरता से उन दोनों नौजवानों से कहा :

"आह, तुम लोगों के पास दिन-भर कोई काम करने को नहीं है। जब तुम मशीनों को बिगड़ा पड़ा देखते हो तो क्या तुम्हें अच्छा लगता है?"

ली चान-चुन उठ खड़ा हुआ और तीखी पर अमैत्रीपूर्ण हँसी के साथ नहीं, बोला! "बूढ़े सुन कहना क्या चाहते हो? जब जापानी यहाँ थे तो मैंने गौर किया था कि तुम कैसे दिखते हो। तुम ऐसे लगते थे मानो किसी ने तुम्हें दुखी कर दिया है। तुम घण्टों बिना एक शब्द भी बोले गुमसुम बने रहते थे। जब जापानी आये तो तुमने काम तो किया पर जब हम कुछ ही तुम्हारे पास रह जाते तो तुम व्यथित हो कहते, 'हम और क्या कर सकते हैं? हमारे सिर के ऊपर की हर चीज़

उनकी है। हमारे पैरों के नीचे की हर चीज़ उनकी है। सारा खाना उनका है। जब वे आये हैं तो हमें काम तो करना ही है। अब वे चले गए हैं तो हम थोड़ी देर सुस्ता लें।' तुमने हमें सुस्त होना सिखाया। और जब कुमिन्तांग अफ़सर आये तो तुम्हीं ने हमसे कहा था, 'इन्तजार करो और देखो।' अब सभी मशीनें बन्द हैं और सभी बेकार हैं और तुम पूछ रहे हो कि क्या हम बेकार बैठने से थकते नहीं—आखिर तुम्हारा संकेत किस ओर है ?' पिछले कुछ दिनों से ली और दूसरों की ही तरह लम्बी बेकारी से थक गया था। उसने अपनी भावना को अपने तक ही रखा था लेकिन अब उसने अपनी कसक को बूढ़े सुन के सामने भी प्रकट कर दिया।

चूँकि दिन अच्छा था और हवा नहीं चल रही थी। सूरज काफी गर्म था और लोग ज्यादा-से-ज्यादा बाहर आ रहे थे। उनके लिए सीढ़ियों पर जमा होना नितान्त स्वाभाविक था। उनमें से अधिकतर जवान थे, लेकिन उनमें छप्पन वर्ष का बूढ़ा कुआन, बूढ़ा ल्यू जो अब भी बौद्धमत में विश्वास रखता था और तीस वर्ष का तुंग जो उसी स्थान का रहने वाला था, भी थे। वह यहाँ उस समय से था जब इस बिजली घर का निर्माण हुआ था। पहले दूसरे लोग तुंग का साथ पसन्द नहीं करते थे क्योंकि वह उनकी बातचीत की रिपोर्ट जापानियों से जाकर कर देता था। पर जहाँ भी कुछ लोग जमा होते वह वहाँ घुस ही जाता। जब सोवियत लाल-सेना यहाँ थी तो उसमें भी उसने मुस्कराते हुए अपना रास्ता बना लिया था। लेकिन उनके साथ उसकी चालाकियाँ नहीं चलीं। अभी कुछ दिन पहले जब कुमिन्तांग अफ़सर यहाँ आये थे तो कोई भी मजदूर उन्हें नहीं समझता था, और वे उनसे डरते थे; पर तुंग उनके पास अपने-आप ही गया, ठीक वैसे ही खुशामद के शब्द इस्तेमाल करता हुआ जैसे उसने जापानियों के साथ किये थे। परिणामतः वह फिर सभी मजदूरों के ऊपर हुकूमत करने लगा था। उस समय किसी ने यह नहीं समझा था कि अफ़सर बिजली घर को

पुनः चालू करने नहीं आये हैं, वल्कि थोड़े दिन तफ़री और दृश्यों को देखने-भर के लिए आये हैं और थोड़ा पैसा पैदा करने। थोड़े दिन पहले आठवीं रूट सेना ने लु मिंग नदी पर पुनः अधिकार कर लिया था और अफ़सर डर के मारे सकपका गए थे। उन्हें मशीनों को और भी बुरी तरह तोड़-फोड़कर वहाँ से भाग जाने की वात ही सूझी। उस दिन अफ़सरों ने पान यू-शान और बूढ़े सुन को ही मशीन घर में पाया, इसलिए उन्होंने उनसे ही पूछा कि मशीन का कौन-सा भाग सबसे जरूरी है। पान यू-शान मूर्ख था। वह न तो मशीन के बारे में ही कुछ समझता था और न उनके सवाल का असली मतलव ही। वह जवाब न दे सका। बूढ़े सुन ने तुरन्त ही अफ़सरों की मंशा को ताड़ लिया कि उनका मतलव उन टूटी हुई मशीनों को और भी तोड़कर वर्बाद करना है। उसने सोचा—'क्या वह जानना चाहते हैं कि मैं कितना जानता हूँ या और कुछ? अगर वे मशीन को और भी तोड़ना चाहते हैं तो मैं इन्हें ऐसा नहीं करने दूँगा।' वह हिचकिचा रहा था, तभी अफ़सर उससे उत्तर पाने के लिए उसकी ओर मुड़ा। उसका दिल धड़कने लगा। सच बताने में वह इनसे भी उतना ही डरता था जितना जापानियों से। वह डरता था कि अगर उसने जान-बूझकर मशीन के बारे में झूठ बोला तो वे उसे गोली मार देंगे, और अगर सच बताता है तो वे मशीन को विगाड़ देंगे। 'और अगर वे उन्हें डायनामाइट से उड़ा देते हैं तो फिर उनको ठीक करने का सवाल ही कहाँ रह जाता है?' उसने उन्हें धोखा देने का एक रास्ता सोच लिया। अपने को निहायत मूर्ख और बुद्धू जाहिर करते हुए उसने इन्सपैक्शन होल[1] की ओर इशारा कर दिया और मद्धिम आवाज़ में अफ़सर से कहा :

"मैं मशीन के बारे में नहीं समझता, पर मैंने सुना है कि वह हिस्सा ही मशीन का सबसे जरूरी हिस्सा है। एक बार अगर यह खुल जाय तो फिर इस स्वर्ग के सारे देवता भी इसे नहीं बन्द कर सकते : सारा

१. मशीन का एक हिस्सा।

मशीन घर पानी से भर जायगा और पानी पहाड़ी की चोटी तक भी पहुँच जायगा।" उसकी बातों पर विश्वास करके ही क्योंकि अफ़सर जा रहे थे और जल्दी में थे, उन्होंने उस इन्सपेक्शन होल को ही खोल दिया और फिर जान लेकर भाग गये। उस छेद में से पानी की तेज धार आने लगी और सारा मशीन घर पानी से लबरेज़ हो गया और जब पानी की सतह एक फुट से ऊँची हो गई तो वह बाहर बहता हुआ एक धारा का रूप धारण कर लू मिंग नदी में जाकर मिल गया।

बूढ़े सुन की होशियारी ने उन बदमाश और बेवकूफ अफ़सरों से मशीन को तो बचा लिया। उसके बाद 'पानी पहाड़ी की चोटी तक भी पहुँच जाता' एक मज़ाक बन गया। जब भी मजदूर अच्छे मूड में और तरंग में होते तो वे उस मज़ाक को दुहराते, और बूढ़े सुन की होशियारी को सराहते। जब-जब तुंग उसे सुनता वह अपने दिमाग़ में उन्हें बैठाता जाता : यह सोचकर कि जब कुमिन्तांग वाले वापस आयंगे तो उन्हें बताने के लिए उसके पास अच्छा मसाला होगा। वैसे तो उसे बूढ़े सुन से कोई दुश्मनी न थी, पर वक्त के हाकिम से दूसरे लोगों की शिकायत करना और इस तरह अपनी 'वफादारी' साबित करके खुशामद करना उसके स्वभाव में था।

वास्तव में उस छेद को बन्द करना बड़ा आसान था। उसके लिए उन्हें सिर्फ झील के उत्तरी किनारे की मोरी बन्द करनी थी। पर बूढ़े सुन को डर था कि डाकू या कुमिन्तांग वाले फिर लौटकर न आ जायें और आकर मशीन को बर्बाद न कर दें। इसलिए वह उसे बन्द नहीं करने देता था। जब जाड़ा आया, तब उसने कहा कि अब उसे बन्द किया जा सकता है लेकिन जब तक वे उसे बन्द करते : थोड़ा-थोड़ा पानी आता रहा और मशीन घर में जमा होता गया और जाड़े में सारा मशीन घर और मशीनें बर्फ में जम गईं।

बूढ़ा सुन मशीन घर में एक साधारण मज़दूर था। लेकिन चूँकि वह वहाँ पर सबसे पुराना मज़दूर था और बड़ा भला और खुले दिल

का था, और चूँकि वह जो भी कहता और करता था उसमें सभी की सलाह और इच्छा निहित होती थी, इसलिए वे सभी उसकी बातें सुनते थे। मा यू-शान लुटेरे के हमले के बाद वही था जिसने जिला सरकार के पास सहायता की माँग लेकर प्रतिनिधि भेजने का प्रस्ताव रखा था; और उसीने अपनी होशियारी से कुमिन्तांग अफसरों से मशीन की रक्षा की थी। इन कारणों से मज़दूरों के दिलों में उसके प्रति विश्वास और श्रद्धा भी गहरी हो गई थी। जब सोवियत लाल सेना के यहाँ थी तब उसे फोरमैन बनाया गया था।

तुंग बूढ़े सुन से ईर्षा करता था, लेकिन कुमितांग वालों के चले जाने के बाद उसकी शक्ति समाप्त हो गई थी। इसलिए हर आदमी उससे घृणा करता था। वह समझता था कि एक काहिल आदमी की ही तरह उसमें कोई बूता नहीं है। अगर उसके अन्दर अपनी रक्षा करने का ज़रा भी बूता होता तो वह जमीन-आसमान एक कर देता। लेकिन अपनी कमज़ोरी समझकर वह बड़ी पस्तहिम्मती अनुभव करता था।

बूढ़ा सुन को यह देखकर कि सारी मशीनें बर्फ से जम गई हैं बड़ी व्यथा होती थी। और अब जब ली चान-चुन ने उसकी व्यथा को कुरेद दिया था तो उसकी पीड़ा और भी बढ़ गई थी। अपने पास इतने आदमियों को देखकर उसका दिमाग़ फिर काम करने लगा और उसने ली चान-चुन के कथन को सुधारने का अवसर पाना चाहा। उसने बड़ी गम्भीरता से कहा :

"चान-चुन, तुम्हें इस तरह बात नहीं करनी चाहिए। कोई क्या कहता है, क्या करता है यह सब परिस्थिति पर निर्भर करता है। मेरी उम्र अड़तालीस साल की है और इन अड़तालीस वर्षों से मैंने काम से भागना, लोगों की झूठी कसमें खाना, लोगों को धोखा देना और किसी भी चीज़ में विश्वास न करना नहीं सीखा है। लिस्ट गिनाने में बड़ा समय लग जायगा। जब मैं छोटा था और फसल की देखभाल करता

था तो उस समय मुझ से अधिक मेहनत करने वाला कोई दूसरा न था, तुम दो मिलकर भी मेरे बराबर काम नहीं कर सकते थे। पर सचमुच वह बीते कल के चीन की बात थी।"

"ओह, तो तुम कभी किसान भी थे!" पान यू-शान ने कहा।

"मेरे हाथ कभी भी आधी चिलम (चीनियों की, अंग्रेज़ों के पाइप की तरह की लम्बी, एक अजीब तरह की चिलम होती है) पीने को भी खाली नहीं होते थे। मैं सिर्फ आराम करने से ही घृणा नहीं करता था बल्कि दूसरे को सुस्त बैठे आराम करते देखकर भी मुझे गुस्सा आता था।"

"तब फिर तुमने काम से भागना कब सीखा?" एक ने पूछा—

"तुम सुनना चाहते हो? यह एक लम्बी कहानी है, पर साधारण सी। मैं गरीब था, मेरे पास जोतने को अधिक खेत नहीं था और न व्यापार शुरू करने को अधिक पैसा ही था, और इन सबसे ऊपर हमारे परिवार में बीमारी घर किये बैठी थी, और उस पर से सूखा। तो तुम समझ सकते हो कि हमारे वे दिन कितनी मुसीबतों के दिन थे। जब हम उत्तर-पूर्वी चीन से आये तो जापानियों के शासन में स्वाभाविक तौर पर और भी बुरे दिन थे। जब वे बिजली घर बनाना चाहते थे तो उन्होंने हमें अच्छा चावल; आटा और तनखा देने का वायदा किया था। समझे! उन्होंने हमें धोखा दिया। हमें रद्दी-से-रद्दी चावल और मक्का खाने को दिया गया; और हमें दो-तीन महीने बाद तनखा दी जाती, उसमें से भी वे खाने के मद में कुछ काट लेते थे, इस तरह जो बच जाता था वह परिवार की गुजर के लायक नहीं होता था! बहुत से आदमी मर गए, कुछ बीमारी से और कुछ अधिक काम के के कारण। यहाँ बीस हज़ार काम करने आये थे लेकिन बिजली घर के बनकर तैयार होते-होते करीब पन्द्रह हज़ार व्यक्ति मर चुके थे।"

बूढ़े सुन को गर्मी के दिनों की याद आई जब मज़दूर नंगे बदन पसीने से तर-बतर लगातार मेहनत करते हुए एक मील दूर पत्थर की

खान से मिट्टी और पत्थर के टुकड़े लाते थे। हर कदम पर मज़दूर पसीने से नहा जाते थे, तो एक मील चलने पर कितना पसीना निकला होगा! वे दिलों में आशा संजोये हुए पहुँचे: कि उन्हें पहुँचकर अच्छा चावल और आटा मिलेगा और बिजली के मज़दूरों का सुन्दर भविष्य। लेकिन थोड़े ही दिनों में उनको असलियत पता चल गई और उनकी सारी आशाएँ उनके शरीर से टपकी एक-एक बूँद के साथ बहकर धूल में मिल गईं।

पसीना बहाने और बिना उबला पानी पीने के बाद हैज़ा और पेचिश होना लाज़िमी था। थोड़े दिन पेट में दर्द होता और बस फिर सब खतम। अगर सिर दर्द करता होता बुखार होता तो भी काम करना ही पड़ता था। बस जब आँखें बन्द हो जातीं तभी कहा जा सकता था कि अब सारी मुसीबतों का अन्त हो गया। बहुतों ने भागने की कोशिश की, जो भाग्यवान थे, वे तो कामयाब हो जाते थे। जिनकी किस्मत खराब थी वे पकड़े जाते थे और सता-सताकर मार डाले जाते थे। पहले जब लोग मरते थे तो जापानी उनकी लाश को झील में मछलियों के खाने के लिए छोड़ देते थे। लेकिन बाद में जब मरने वालों की संख्या अधिक बढ़ गई तो घाटी में ही एक जगह उनका ढेर लगा दिया जाता भेड़ियों के खाने के लिए। घाटी में सफेद हड्डियों का एक ऊँचा-सा ढेर लग गया था। वह स्थान मज़दूरों से मुर्दों के गड्ढे के नाम से जाना जाता था। और जब वह उन दसियों हज़ार के बारे में सोचता जिन्होंने जापानियों के अत्याचारों से जान दी थी, तो स्वभावतः उसका ध्यान अपने बेटे की असामयिक मृत्यु पर चला जाता। टाइगर बड़ा ही उत्साही मज़दूर था, उतना ही जितना उसका पिता उसकी उम्र में उत्साही था। उसमें काम करने और परिस्थिति को अच्छा बनाने का निश्चय था। और उसका यही उत्साह उसकी मौत का कारण बना। बात यों हुई थी:

एक दिन, जापानी एक बहुत ही खतरनाक चट्टान को उड़ाना

चाहते थे। वे हमेशा कम-से-कम मज़दूर और सामान से काम निकालना चाहते थे। चूँकि उन्होंने नीचे लोहे की टिकानिएँ नहीं लगाई थीं, इसलिए कोई भी मज़दूर गुफा में घुसकर बारूद में आग लगाने की हिम्मत नहीं करता था। जापानियों ने इस समय मज़दूरों को डराया धमकाया नहीं, बल्कि उन्हें उभारा : "आह, मँचूक्, तुममें से जो बहादुर है उसे इनाम मिलेगा, जो नहीं डरते…" जोश ने जोकि जवानों के लिए स्वाभाविक है टाइगर को उत्साहित किया और वह गुफा में घुस गया। उसका पिता उसे रोकने में असमर्थ था। उसने आँखें बन्द कर ली थीं। कई मिनट बीत गये पर कुछ नहीं हुआ। वह नहीं समझता था कि उसे एक मिनट इतना बड़ा लगेगा। अब उसने समझा कि वे इसलिए लम्बे लग रहे थे क्योंकि उन कुछ क्षणों में उसके लड़के की जिन्दगी अटकी हुई थी। चट्टाने उड़ाने के बाद टाइगर पहाड़ी खरगोश की तरह भागता हुआ आया। उसके शरीर के एक रोंये को भी चोट नहीं पहुँची थी। गुफा के बाहर खड़े सभी मज़दूरों ने उसे बधाई दी। उसका बाप भी मारे खुशी के रो दिया, जापानियों ने उसकी पीठ थपथपाई। उसके बाद से जब भी कोई खतरनाक विस्फोट करना होता वे उसे ही वह काम सौंपते थे। एक महीने बाद जब टाइगर एक चट्टान उड़ा रहा था तो उसकी मृत्यु हो गई।

जब बूढ़ा सुन यह कहानी सुना रहा था, तो उस समय बहुत-से लोग सुन रहे थे, उनमें से कुछ औरतें भी थीं। बूढ़े मर्द और बूढ़ी औरतों के आँसू बह रहे थे। बूढ़ा सुन स्वयं बिलकुल शान्त था मानो उसे कोई दुःख ही न हो। वास्तव में उसका दुःख काफी पहले ही गुस्से और क्षोभ में बदल गया था।

"वह रोने और चीखने से अपने को कैसे रोक सकता है ?"

"आदमी, जो आदमी है वह खून बहाता है आँसू नहीं," किसी ने बूढ़े सुन के बजाय जवाब दिया," उसे कहने दो।"

मैंने पूरी तरह समझ लिया है कि अगर हम कड़ी मेहनत नहीं

करते, तो हम गरीब आदमी भूख से मर जायेंगे। और दूसरी तरह अगर हम कड़ी मेहनत करेंगे तो हम काम के बोझ से मर जायेंगे या बीमारी से! बस मौत ही है, जिसकी हम आशा कर सकते हैं। कहावत है—'हर बादल का चौखटा चाँदी का होता है,' हर कुत्ते को अपना दिन देखना होगा, पर मैं उनमें से किसी पर विश्वास नहीं करता।" बूढ़े सुन ने एक गहरी साँस ली और बात जारी रखी—"हम क्या कर सकते थे? मन मसोसकर काम पर जाने के अलावा क्या हम और भी कुछ कर सकते थे?

"कांग ते के नवें वर्ष में बिजलीघर बन कर पूरा हुआ। जब मोरी खोली गई तो झील का पानी नहर में बहने लगा। पानी का पहिया घूमने लगा, और बिजली तैयार होने लगी। उन तमाम चीनियों के बारे में सोचो जिनका खून उस तीन हजार मीटर लम्बी नहर के लिए निकाला गया था। उन तमाम जिन्दगियों के बारे में सोचो, जिनकी इसके लिए कुर्बानी दी गई थी। दिन-पर-दिन बहते पानी को कोई नहीं नाप सकता; पर वह सारा पानी भी हमारे दिलों की घृणा को नहीं धो सकता!…"

जब बूढ़े सुन ने यह लम्बी कहानी खतम की, हर कोई अपने-अपने दुःख की कहानी सोचने लगा। किस बूढ़े आदमी के बच्चा नहीं था? किस जवान आदमी के बाप और माँ नहीं थे? जब तक कोई इनके बारे में बात नहीं करता था तब तक भावनाएँ दबी रहती थीं या हर एक ने जापानी अत्याचार इतने अधिक सहे थे और उनके आदी हो गये थे कि उनके बारे में ध्यान ही नहीं देते थे। अब बूढ़े सुन की बातें सुनकर सभी के घावों की कसक ताज़ी हो गई थी। बूढ़े कुआन की बहू के साथ पुलिस ने बलात्कार किया था; ली चान-चुन का चाचा बाहर काम करने गया था और फिर कभी वापस लौटकर नहीं आया; बहुतों के मकान और जमीनें किसी-न-किसी बहाने से छीन ली गई थीं, छोटे-मोटे व्यापारियों पर कोई-न-कोई आर्थिक व्यवस्था का कानून तोड़ने का

अपराध लगाकर उन्हें गिरफ्तार किया गया और मार-पीट और धमकी तो रोजाना की आम बात थी।

"वह बिल्कुल ठीक कहता है; ठीक ऐसा ही सब-कुछ हुआ है," बूढ़े कुआन ने ऊपर देखते हुए और अपनी मूँछें घुमाते हुए जोर देकर कहा।

"हम कारीगरों के दिल में दरअसल बहुत कुछ कसक भरी पड़ी है। हम लोगों को मशीन देखने तक की इजाज़त न थी," चू जु-चेन ने घृणा से कहा।

"यह सब जो-कुछ कहा गया और हुआ इसमें हमारी ही गलती थी। उन्होंने हमारे साथ बुरा व्यवहार किया या नहीं, सवाल यह नहीं है। अगर हम थोड़ा और धीरज से काम करते तो ऐसी मुसीबत न होती।" जब तुंग यह कह रहा था तो उसकी छोटी-छोटी आँखें हर-एक के चेहरे पर नाच रही थीं यह देखती हुई कि उसके कहने की क्या प्रतिक्रिया हो रही है। वह थोड़ी देर के लिए रुका और अपने होंठ काटे और आगे बोला :

"आदमी को दिन में तीन दफे खाना खाने को चाहिए और रात को सिर पर एक छत। इसलिए अगर आज्ञाओं का पालन करते हो तो वह तुम्हारे ही फायदे में है। मंचुकू के लोग क्या इस सचाई को नहीं समझते ?"

"बूढ़े तुंग, तुम अब भी मंचूकू के बारे में बातें करते हो ? क्या तुम मंचूकू से अभी भर नहीं पाये ? तुम्हारा मतलब क्या है ? खुशामद करना बहुत अच्छा है पर यह हमारा रास्ता नहीं है ! अगर सभी चीनी तुम्हारी तरह के होते, तो क्या तुम सोचते हो तब पिछले साल जापानी हराए जा सकते थे ? क्या हम लोग अब भी यहीं होते ?" बूढ़ा सुन धीरे-धीरे उठकर खड़ा हो गया और अपने को तनकर सीधा किया। उसने महसूस किया कि यह उसकी बर्दाश्त से बाहर है। उसे गुस्सा हो आया। उसकी हमेशा की हँसी और धीरज जाता रहा, उस आदमी

की तरह जिसने जरूरत से ज्यादा शराब पी ली हो और उसके दिमाग में जो-कुछ है उसे उगल देना चाहता हो।

तुंग बुरा मान गया, पर वह क्रुद्ध नहीं हुआ। वह सिर्फ ठण्डी हँसी हँसा : "अब यहाँ क्या है ? यहाँ क्या अच्छाई है ? मशीनें बिगड़ी पड़ी हैं और कोई उन्हें ठीक करने नहीं आता, और न कोई हमें तनख्वा दे रहा है। आह, अगर गरीब आदमी जिन्दा रहना चाहते हैं तो उन्हें काम करना चाहिए।"

"यह ठीक है। तुम जानते हो, हमारे पास अब जिन्दा रहने के लिए कुछ नहीं है"

"हमें खाना चाहिए, लेकिन हम अपमान सहने के लिए तैयार नहीं हैं !"

"अब ? अब कोई मालिक नहीं है। लेकिन फिर भी जापानियों के समय से हम मज़े में हैं।"

"ठीक है। दो हाथ रखते हुए हमें भूखों मरने की चिन्ता नहीं करनी चाहिए।"

हर कोई अपनी-अपनी बात और तर्क रख रहे थे और बूढ़ा सुन और तुंग दोनों ही कुछ निश्चय नहीं कर पा रहे थे। एक बिजली का कारीगर ल्यू फू उठकर खड़ा हुआ और बोला : "बूढ़े सुन, हमें अपनी सलाह दो। सोवियत लाल सेना ने जापानियों को मार भगाने में हमारी सहायता की, आठवीं रुट सेना ने कुमिन्तांग अफसरों को डराकर भगा दिया। लेकिन आठवीं रुट के आदमी स्वयं अभी तक नहीं आये। तुम्हारी राय में ऐसी परिस्थिति में हम क्या करें ?"

बूढ़े सुन ने हर एक की बात सुनी थी और जानता था कि तुंग के पक्ष अधिक आदमियों का समर्थन नहीं था। उसने मुस्कराते हुए कहा : "मैं नहीं जानता कि मुझे क्या करना चाहिए। आओ हम सब एक-साथ इस पर विचार करें। आज आठवीं रुट सेना के लोग यहाँ नहीं हैं, पर क्या इसके यह मानी हैं कि वे कल भी यहाँ नहीं आयेंगे ?"

"इसका ज्यादा विश्वास भी नहीं करना चाहिए। हो सकता है कुमिन्तांग वाले ही फिर वापस आयें," तुंग ने विश्वासपूर्वक कहा।

बूढ़े सुन ने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया और कहता गया: "शात्तुंग के लोगों को कहते मैंने सुना है कि आठवीं रुट सेना के लोग किसानों के साथ बड़ा अच्छा बरताव करते हैं इसलिए लोग-बाग भी उनके साथ सहयोग करते हैं। पता नहीं हम-जैसे मज़दूरों के साथ उनका बरताव कैसा है?"

"उनका मजदूरों के साथ भी बड़ा अच्छा बरताव है। उस बार जब जिला सरकार ने सुना कि मा यू-शान ने हमारी सभी चीजों को लूट लिया है तो उन्होंने तुरन्त हमारे लिए खाना और कपड़ा भेजा। और मैंने सुना है कि वे शहर में भी लोगों को खाना देते हैं। ऐसा नहीं जान पड़ता कि वे जापानियों या कुमिन्तांग की तरह हैं।"

ल्यू फू चुप नहीं रह सका, बोल पड़ा—"मैं नहीं पूछता कि आठवीं सेना के लोग कैसे हैं। मैं तो सिर्फ पूछता हूँ कि हम इस बिजली घर का क्या करें।"

ल्यू फू की बात जब तक उसने पूरी न कर ली, बूढ़ा सुन ध्यान से सुनता रहा। फिर उसने स्पष्ट और सधे हुए शब्दों में मुस्कराते हुए कहा: "यह ठीक है। इससे कोई मतलब नहीं है कि कौन आता है कौन नहीं आता। यह बिजली घर चीन का है। हमें मशीनों को ठीक करने की कोई तरकीब सोचनी होगी।…" इसके पहले कि वह अपनी बात समाप्त करे बहुत से चिल्लाते हुए बीच में बोल पड़े:

"यह ठीक है; यह चीन का है!"

"तब हमें कोई योजना सोचनी चाहिए।"

"हम उसे कैसे पूरा कर सकते हैं? हमें कोई नेता ढूँढना चाहिए। शहर जाकर लू को वापस लाना चाहिए। उसने जापान में शिक्षा पाई है। वह मशीनों के बारे में सब कुछ समझता है।"

"यह ठीक है। लू को प्रधान इंजीनियर के पद पर आने को कहो।

वह ऊपर के अधिकारियों और हमारे बीच का बड़ा अच्छा अधिकारी हो सकेगा। पिछली बार प्रतिनिधि बनकर हम शहर गये थे। दरअसल वह बड़ा बुरा लग रहा था। हम सब गूदड़ पहने हुए थे और डर के मारे हकलाते थे। यह अच्छा ही था कि हमारे साथ बूढ़ा तुंग हमारी ओर से बोलने के लिए था।"

"कपड़ों से कुछ नहीं बनता बिगड़ता," ल्यू फू ने कहा, "शहर में सरकार के लोग भी बहुत मामूली कपड़े पहनते हैं। सिर्फ मुश्किल यह है कि लु लुटेरों से डरता है और जाड़े गरडिल झील में आने का कभी साहस न करेगा, इसलिए क्या किया जाय ?"

"बदकिस्मती से सोवियत यूनियन का वह साथी भी अपने देश वापस चला गया है," एक मज़दूर ने कहा। "वह बिजली के बारे में सब-कुछ जानता था। वह बड़ा ही योग्य इंजीनियर था।"

बूढ़ा सुन उठकर खड़ा हो गया और उसने अपने लम्बे हाथ फैलाए और सबको शान्त हो जाने का संकेत किया, फिर उसने एक प्रस्ताव रखा—पहले हमें बर्फ साफ करनी चाहिए और टूटी हुई मशीनों को साफ करना चाहिए। फिर हम इस पर बाद में बहस कर सकते हैं।" एकदम लोग-बाग सहमति में चीख उठे :

"हाँ। पहले हमें हर चीज साफ कर देनी चाहिए, तब लू को बुलाना चाहिए।"

"ठीक है हमें यही करना चाहिए। हो सकता है फिर अधिकारी अपने-आप ही किसी आदमी को यहाँ भेजें।"

बूढ़े सुन ने अभी अपनी बात खतम नहीं की थी कि वह बोला—जब हम मज़दूर कहते हैं—हमें यह काम करना चाहिए तो हम पूरी तरह से उस काम को करते हैं। हम अच्छा करते हैं या बुरा करते हैं, हम ही उसके लिए जिम्मेदार होंगे। फिर अगर बाद में वे किसी को काम सम्हालने के लिए भेजते हैं तो उन्हें हममें से एक या दो की गलती पकड़ने का अवसर नहीं मिलेगा।"

"ठीक है ! अगर हम अच्छा काम करते हैं तो सफलता में हर एक का हिस्सा होगा; और बुरा करते हैं तो हरएक बुराई का हिस्सेदार होगा।" बहुत-से लोगों ने बूढ़े सुन के विचारों का समर्थन किया।

जाड़े के दिन बहुत छोटे होते हैं। उन लोगों ने ध्यान भी न दिया था कि सूरज पश्चिम में छिप रहा था। मज़दूरों ने अब महसूस किया कि बड़ी सर्दी हो रही है। वे लोग अपने-अपने झोंपड़ों को लौट आये।

२

मज़दूरों की झोंपड़ियाँ बिजली घर की सतह से करीब सौ गज ऊपर पहाड़ी पर थीं। उन तक पहुँचने के लिए करीब दो सौ अस्सी सीढ़ियाँ थीं। मरम्मत विभाग के दो बूढ़े दिन-भर में शायद ही कभी एक या दो बार से अधिक ऊपर जाते थे। जवान लोग तीन या चार बार चक्कर लगा लेते थे। हांलाकि झोंपड़ियाँ इतने ऊँचे पर थीं फिर भी बिजली घर की आवाज़ वहाँ तक सुनाई पड़ती थी। बर्फ की चट्टान को तोड़ने की आवाज़ पहाड़ी के लोगों को साफ सुनाई पड़ती थी। करीब-करीब एक दर्जन मज़दूर बर्फ तोड़ने का काम कर रहे थे। ड्राइवर चांग जुंग-सी अपना कमरा छोड़कर झोंपड़ियों और दफ्तर को पार करता हुआ जब सीढ़ियों पर पहुँचा तो वह वहीं रुक गया। पिछले कुछ महीनों ने उसे बड़ा सुस्त बना दिया था। वह कभी-कभी शहर सी लियांग चेन में पुरानी चीजें बेचने जाता था। जब उसके पास पैसा होता तो वह शहर से गोश्त खरीद कर लाता और फिर हर किसी को खाने की दावत देता; जब उसके पास पैसा न होता तो बिना किसी चीज़ पर ध्यान दिये वह चुपचाप अपने कमरे में सोने चला जाता। अब वह इस समय बिजली घर को देख रहा था, जिस तक पहुँचने के लिए करीब तीन सौ सीढ़ियाँ उतर कर उसे जाना था। उसने जाने या न जाने का निश्चय करने से पहले धूप में थोड़ी देर बैठने का निश्चय किया।

"फरवरी में बर्फ तोड़ने से क्या फायदा ? थोड़े दिन बाद वह

स्वयं ही पिघल जायगी," चांग जुंग-सी अपने-आप से भुनभुनाया।

चांग की बीवी भी अब अपने घर से बाहर निकल आईं और अपने पति को अब भी सीढ़ियों पर बैठा देखकर वह क्रुद्ध होने लगी। उसका क़द नाटा था और उसने एक रुई का सलूका पहन रक्खा था। उसके गाल की हड्डियाँ चौड़ी थीं और आँखें बड़ी-बड़ी थीं। उसका ऊपर का होंठ बड़ा ही पतला था। सब मिलकर उसके चेहरे का भाव एक योग्य और प्रभावशाली औरत का सा था। उसका पति दरअसल उससे डरता था। लेकिन इस बार उसने तुरन्त ही बुरा-भला कहना नहीं शुरू किया वह सिर्फ सीढ़ियों पर उसके बगल में जाकर बैठ गई और बोली : तुम नीचे क्यों नहीं जा रहे हो?"

"मेरा काम मोटरें ड्राइव करना है, बर्फ तोड़ना या कुली का काम करना नहीं," चांग ने बुरा-सा मुँह बनाकर कहा।

"अहा, आप कारीगर हैं, कुली नहीं! पर देखो अगर तुम अभी उनके साथ मिलकर काम में मदद नहीं देते, तो क्या तुम समझते हो कि जब मशीन चालू हो जायगी तो वे तुम्हें चाहेंगे? वे तुम्हें धता बता देंगे और फिर हम भूखों मरेंगे। उस तरह की बातें करना तो तुम्हारे लिए आसान है।"

जब श्रीमती चांग चौदह वर्ष की थीं तभी उसकी माँ मर गई थी। उसके पिता और बड़े भाई किसी और के खेतों पर काम करते थे। और उसे घर पर तीन छोटे भाइयों और बहनों की देख-भाल करनी होती थी। उसे सूअर के और मुर्गी के बच्चों की देखभाल करनी होती, रसोई में काम करना होता, सिलाई करनी होती। वह हर प्रकार के साधारण और कारीगरी के काम कर सकती थी। उसके पिता उसे बड़ा दुलार करते थे, जिसके कारण उसकी बड़ी बुरी आदतें पड़ गईं थीं—परिवार में हर एक को उसकी सहनी पड़ती थी। स्वभावतः उसके भाई और बहनें उससे बहुत डरते थे। जिस तरह हर गरीब परिवार के बच्चे चाहे जितने बिगड़ जायें पर वे बड़े ही सीधे और खुले दिल के होते हैं, उसी तरह

वह भी बचपन से ही बड़ी योग्य और आत्म-विश्वासी हो गई थी। जब वह उन्नीस वर्ष की थी तो उसने चांग से शादी की और रेलवे लाइन के किनारे-किनारे के अनेक छोटे शहरों में उसके साथ-साथ काम पर घूमती रही। चांग ज़ुंग-सी को ठीक रास्ते पर रखना जरा मुश्किल काम था, पर वह इस औरत के साथ बड़ा ही दब कर और शान्ति से रहता था उसे वही करना होता था, जो उसकी मंशा होती थी। केवल जब वे दोनों तरंग में होते तो चांग उसकी गर्दन में हाथ डालकर पूछ सकता था, "औरतों की क्या उपयोगिता है? सिवाय चिल्लाने-चीखने और बनाव श्रृंगार के वे और क्या कर सकती हैं?" हालांकि वह अपनी बीवी की गर्दन में अपनी बाहें डाले. उसे पकड़े होता, फिर भी वह हमेशा की तरह तुनककर जवाब देती? "तो तुम बनाव श्रृंगार नहीं करते हो? तुम स्टेशन पर धुआँ छोड़ते उसे अपने पर ही पोतते हुए आते एक एंजिन के समान हो!" और कहते हुए हँस देती।

चांग एक ड्राइवर की ज़िन्दगी से बहुत ही सन्तुष्ट था पर आज़ादी के बाद से जादे गरडिल झील का नक्शा ही बिलकुल बदल गया था और उसके साथ ही उसका जीवन भी। पिछले कुछ महीनों से उसने कोई नया काम नहीं सीखा है सिवाय बिना किसी उद्देश्य के इधर-उधर गाँव और शहर के बीच घूमने के। वह पुरानी चीज़ें बेचकर पहले से ज्यादा कमा लेता था, इसलिए उसे मशीनों से वैसे भी कोई दिलचस्पी न रही थी। इस सुबह ही उसकी बीवी ने उसका बिस्तर खींच लिया था और उसे उठने पर मजबूर किया था क्योंकि वह चाहती थी कि वह भी बर्फ तोड़ने में दूसरे लोगों का साथ दे। वह बिस्तर पर तो जितनी देर रह सकता था रहा, किन्तु वह यहाँ भी उसके कन्धे पर आकर सवार हो गई थी। वह दरअसल उसके लिए बवाल थी। इसलिए उसने बहुत ही रूखेपन से उत्तर दिया, तुम ऐसी बातें करती हो, मानो मुझे जादे गरडिल झील में भूखों ही मरना है। क्या चांग चुन जाने के लिए

मेरे पास पैर नहीं हैं ! कारीगर हमेशा अपनी रोज़ी कमा सकते हैं । क्यों क्या नहीं कमा सकते ?"

यह देखकर कि उसका पति गुस्से में है उसने बड़ी नर्मी से कहा : "चांग चुन चांग चुन है और यह यह है । एक जानी-बूझी जगह हमेशा नई जगह से अच्छी होती है । उसके लिए इतनी मुश्किल क्यों ? नीचे जाकर कुछ घण्टों के लिए उनकी मदद करने में नुकसान ही क्या है ?"

"हमारे पास आकर बर्फ तोड़ने के लिए किसने कहा था ?"

"तुंग ने आकर कहा था ।"

"हिश, मुझे अच्छा नहीं लगता। वह कामयाबी का सेहरा अपने सिर ले लेता है, और जो-कुछ बुराई होती है उसे दूसरे के सिर पड़ने के लिए छोड़ देता है । उसके पिता और बड़े भाई अच्छे आदमी जान पड़ते हैं : उन्होंने उस-जैसा आदमी कैसे पैदा किया ?"

"कहावत है कि 'अच्छे आदमी कभी शक्ति में नहीं आते' । थोड़े दिनों में अधिकारी अपने आदमी यहाँ भेजेंगे और तब फिर तुंग अपनी जगह पर आ जायगा । बूढ़े सुन और बूढ़े कुआन जैसे अच्छे लोग कभी पसन्द न किये जायंगे । सच तो यह है कि बूढ़े सुन ने ही बर्फ तोड़ने की बात सुझाई थी । जैसे परसों सुना था, वह फिर अपने बेटे के बारे में कह रहा था और चीख रहा था । वह कभी अपने बेटे के बारे में बातें नहीं करता, पर पता नहीं उस दिन उसे क्या हो गया था । पर तुम मेरे ऊपर विश्वास करो उसने अपने बेटे के बारे में कहा और चीखा और तब उसने कहा, 'बिजली घर को ठीक करो, उससे मेरे टाइगर को खुशी होगी । आओ हम मोरी को खोलें और अपने सारे गुस्से को धो डालें ।' तब हर एक ने उसकी बात सुनी । सचमुच हर कोई चाहता है कि काम शुरू हो और वे फिर कामकर अपनी रोज़ी कमा सकें ।"

अपनी बीवी की बातों को बिना ध्यान से सुने कि वह क्या कहती है, चांग तुंग-सी धीरे-धीरे सीढ़ियों से उतरता हुआ नीचे जाने लगा ।

काम का टूटा हुआ ढाँचा एक ओर झुका बर्फ में आधा गड़ा हुआ

था। उसे देखकर उसे दुःख हुआ। उसने एक गहरी साँस भरी। "जब से जापानी गये हैं सब यों ही बेकार पड़ा है। हम कुछ नहीं कर सकते, बर्फ तोड़ना बिल्कुल व्यर्थ है।"

बर्फ में बहुत-सी चीजें जमी पड़ी थीं। जिनकी वजह से जमीन ऊँची-नीची हो गई थी। वह बर्फ पर लोगों के चलने से बने रास्ते पर होकर चलने लगा और मशीनघर में पहुँचा।

नम्बर एक और नम्बर दो की मशीनें बिजलीघर में बीचोंबीच बुर्ज की तरह खड़ी थीं। १२० टन की बड़ी क्रेन (वजन उठाने की मशीन) और छोटी २० टन की क्रेन की सारी चमक जाती रही थी, और वे बड़े दयनीय दशा में शान्त खड़े थे। जमीन पर बर्फ की दो-तीन फुट मोटी तह थी, नम्बर एक और नम्बर दो मशीन के चक्कों के दो-दो हत्थे थे। स्वचालित चक्के के नीचे का सारा हिस्सा बर्फ में जम गया था। मशीन के हिस्सों पर जमी बर्फ छोटे-छोटे बर्फ के पहाड़ों-जैसी लग रही थी। चार या पाँच कुली हत्थों और स्वचालित चक्कों के नीचे की बर्फ तोड़ने में लगे थे। बूढ़े सुन को डर था कि क्योंकि वे लोग तगड़े थे कहीं मशीन को अपनी बेखबरी से और नुकसान न पहुँचा दें। इसलिए वह दो और अन्य बूढ़ों के साथ वहाँ बड़ी सावधानी से बर्फ तोड़ रहा था। दोनों मशीन के बीच पान यू-शान बर्फ पर आग जला रहा था। मरम्मत-विभाग में ली चान चुन लकड़ी चीर रहा था और चू जु-चेन लकड़ी काट रहा था और फिर वह उन्हें मशीनघर में ले जाता था। तुंग कुछ नहीं कर रहा था सिवाय इधर-उधर भागने-दौड़ने के। यह ठीक नहीं है, यह गलत है, वह गलत है कहता फिर रहा था। मानो वही सबसे ज्यादा व्यस्त हो और फोरमैन हो।

फरवरी के महीने में भी इस उत्तर-पूर्वी हिस्से में काफी जाड़ा था। कपड़े से काम के लिए हाथ बाहर निकालते ही सर्दी से ठिठुरा जाता था। आमतौर पर ऐसे जाड़े के मौसम में अगर आम लोगों से कहें कि वहाँ सोना गड़ा है तब भी वे उसे खोदने का कष्ट नहीं उठा-

येंगे। लेकिन कठिन मेहनत सभी मुश्किलों को आसान कर देती है। कुदाली के दो-चार हाथ चलाने के बाद ही खून में गरमी आ गई और खून की रवानी बढ़ गई। उनमें मज़बूती और विश्वास भी उत्पन्न हुआ। बर्फ तोड़ने के लिए किसी ने आज्ञा नहीं जारी की थी और न किसी ने किसी को विवश ही किया था, सिर्फ उस दिन बूढ़े सुन ने एक प्रस्ताव रखा था। सभी ने मिलकर उस पर विचार किया था और आज काम भी शुरू कर दिया। कोई नहीं समझता था कि वह कौन सी शक्ति है जिसने उन्हें ऐसे जाड़े में भी काम करने के लिए प्रेरित किया था।

हर बार जब चु जु-चेन लकड़ी के टुकड़े मशीन घर में ले जाता तो वह गौर से देखता कि तेल के पम्प पर से बर्फ साफ हुई या नहीं। और सोचता कि एक दिन जब मशीन चालू होगी तो वह पूरे एक दिन उस तेल के पम्प के पास खड़ा होकर देखता रहेगा कि उसमें क्या है जो घूमने की आवाज करता है। और उसने सोचा कि अगर अधिकारी उसे मशीन पर नौसिखिये के तौर पर ही काम करने और मशीनों में तेल डालने का अवसर देंगे तो उसे बड़ी खुशी होगी। सोचते-सोचते उसके हाथ और भी तेजी से चलने लगे। वह चाहता था जल्दी-से-जल्दी काम खतम हो।

ली यान-चुन मरम्मत के विभाग में लकड़ी चीर रहा था। वह सोच रहा था कि बूढ़े सुन ने जो कुछ कहा है वह सचमुच ही सही है और जैसा उसने बताया है उस तरह काम करके कोई गलती नहीं कर सकता। जापानी और कुमिनतांग अफसरों के अत्याचारों की याद करके उसे अब भी डर हो रहा था और गुस्सा भी आ रहा था। उसका दिल उतना ही खुला हुआ था जितना दिन। वह चालाकी और मक्कारी बर्दाश्त नहीं कर सकता था। अगर कोई उसके साथ अच्छा बरताव करता तो वह उसके साथ और भी अच्छा व्यवहार करता था; और अगर कोई उसके साथ बुरा बरताव करता तो वह भी उसके साथ वैसा ही बरताव करता था। जब वह लकड़ी चीर रहा था तो उसने पूछा

और कहा : कोई मतलब नहीं यह कितनी अच्छी तरह चल रही थी, इस पर जापानियों का अधिकार था। अब यह सब टूटी पड़ी है तो क्या, पर अब यह हम चीनियों की चीज है।"

पचास-साठ वर्ष की आयु के दो बूढ़े अपनी पूरी शक्ति से काम कर रहे थे। वे अपने शरीर में ही इतनी गर्मी महसूस कर रहे थे जिससे बर्फ पिघल जाती। हालाँकि उत्तरी-पूर्वी चीन पर जापानी चौदह वर्ष तक जमे रहे, पर वे एक क्षण के लिए भी अपनी मातृभूमि को नहीं भूले थे।

पूरे दृश्य को देखकर बूढ़ा सुन बड़ा ही खुश हो रहा था। वास्तव में हर एक अपने-अपने स्वप्नों और विचारों में मस्त था और हरएक अपने स्वप्नों को हर तरह से पूरा करने के लिए दृढ़संकल्प था। यही हाल बूढ़े सुन का भी था। स्पष्ट था कि उसके स्वप्न अपने लड़के के लिए नहीं थे जो बड़ी निर्दयता से मर चुका था, और न अपनी बीवी के लिए थे जो दयनीय मौत मरी थी। उसका स्वप्न था कि वह दिन आयगा जब मशीनें ठीक होकर फिर चलने लगेंगी और बिजली पैदा होने लगेगी और लोग कड़ी मेहनत कर अच्छी जिन्दगी गुजार सकेंगे। उसके विश्वास पुराने समाज के कटु सत्यों के कारण बिखर चुके थे, लेकिन अब नया युग आशा की एक नई किरण पैदा कर रहा था, जिसके स्पर्श से वह नई स्फूर्ति का अनुभव कर रहा था। सोवियत-यूनिअन की विजयी लाल सेना ने सबसे पहले उसके दिल में यह आशा और विश्वास उत्पन्न किया कि सभी लोग बराबर की स्थिति लेकर पैदा होते हैं और दुनिया के सभी मज़दूर भाई-भाई हैं। उसे बहुत थोड़ा-सा ज्ञान था कि यह नया समाज किस प्रकार विकास करेगा, वह सिर्फ इतना जानता था कि नया समाज विकास कर रहा है। "जापानी मालिक हैं और चीनी मजदूर उनके गुलाम"—यह निकम्मा गुलामी का समाज खत्म हो गया है। यह सचाई ही उसके अन्दर नई आशा

और स्फूर्ति का संचार कर रही थी। यही उसके अन्दर नई शक्ति, नई सूझ और उत्साह पैदा कर रही थी।

वास्तव में उसे कोई ज्ञान नहीं था कि भविष्य में इस बिजली घर पर किसका अधिकार होगा। वह तो सिर्फ इतना जानता था कि बिजली घर को मजदूरों की जरूरत है और मजदूरों को बिजली घर की। इसलिए इससे कोई मतलब नहीं कि उसका चार्ज कौन आकर लेता है। अगर मशीनें बिगड़ी पड़ी रहती हैं तो यह मजदूरों के लिए बड़ी बुरी बात होगी। इसी कारण उसने अपनी चालाकी से और अफसरों को धोखा देकर मशीनों की हिफ़ाजत की थी और अब सभी मजदूरों को उत्साहित कर बर्फ तोड़ रहा था। जो लोग उसके उद्देश्य के साथ सहमत होते वह उनके साथ सहयोग करता, जो उसके विरुद्ध होते उन्हें वह सुधारने की कोशिश करता; वह सबको मेहनत करने में मदद करता था। वह जाहिर करता था कि वह मुश्किलें झेलने में प्रसन्न है, हर सम्भव तरीके से त्याग करने को तैयार है। उसके स्वप्न, उसकी आशाएँ, उसके उद्देश्य वही थे जो दूसरे मजदूरों के थे। जब आदमी बिना किसी स्वार्थ के काम करता है तब वह बड़ी प्रसन्नता और शान्ति का अनुभव करता है। यही बात बूढ़े सुन के साथ थी।

पहले तो मजदूरों के विचार इतने साफ न थे, पर हर एक में उत्साह को देखकर हरएक ने अपनी कोशिशों को दुगना कर दिया और सभी दूनी शक्ति से काम करने में लगे थे। इस तरह परस्पर के सहयोग और उत्साह ने सभी के उत्साह और शक्ति में वृद्धि की।

सभी यह अनुभव करते थे कि यह एक नये प्रकार का जोश है जिसका अनुभव उन्होंने पहले कभी नहीं किया था।

पाँग लुंग-चेन भी मशीन घर में बूढ़े सुन के पास ही काम करने आ गया। उसे आया देखकर मुसकराते हुए उसके हाथ में एक कुदाली देते हुए बूढ़े सुन ने कहा : "मिस्टर पांग तुम मशीनों के बारे में समझते हो इसलिए आओ इन्हें साफ करने में हमारी मदद करो। हम लोग बूढ़े

ठहरे, अच्छा काम नहीं कर सकते।"

"फिजूल की बात," चांग ने मुस्कराते हुए कहा, "कहावत है, बूढ़े होने का मूल्य चुकाना चाहिए : जितने ही बूढ़े होंगे उतने ही अच्छे होंगे।"

"नहीं, हमारे अन्दर शक्ति नहीं है, हम बहुत बूढ़े हो गए हैं," बूढ़े कुआन ने गर्दन उठाते हुए कहा। "फिर भी हमें मशीन साफ करनी ही है। जो भी इसका चार्ज लेने आता है कम-से-कम वह जापानी तो न होगा। अगर हम मशीनें साफ करने में देर करते हैं तो न सिर्फ मशीनों में जंग लग जायगी, बल्कि हमारे अन्दर जंग लग जायगी।"

जब तुंग चिन-कुह ने इन तीनों बूढ़ों को आपस में मैत्रीपूर्ण बातें करते देखा तो उसे डाह हुई। वह अपने को भी उनमें शामिल करने के खयाल से उन तीनों के लिए सिगरेट बनाता हुआ उनके पास आ पहुँचा। चांग जुंग-सी ने उसकी ओर विशेष ध्यान नहीं दिया और सिगरेट लेते हुए अपने-आपसे ही बोला : "आज क्या बात है मिस्टर! तुंग-जैसे बड़े आदमी सिगरेट पेश कर रहे हैं?"

तुंग जानता था कि चांग उससे कितनी घृणा करता था, इसलिए ऐसा भाव प्रदर्शित किया कि मानो उसने उसकी बात सुनी ही न हो और बोला : "तुम वास्तव में बड़ी मेहनत कर रहे हो और सचमुच तारीफ के हकदार हो। थोड़े दिनों में जब कुमिन्तांग वाले फिर से काम शुरू करने आयेंगे तब तुम सब को अच्छी जगह मिलनी चाहिए, और मुझे आशा है कि तुम लोग मेरी सिफारिश में भी एक-दो शब्द कहना न भूलोगे।"

"बेकार की बात मत करो। किस तरह अच्छी जगह हमें मिल सकती है। बाद में जब सरकार आयेगी और तुम्हें महत्वपूर्ण स्थान मिलेगा तो हमें बड़ी खुशी होगी। अगर तुम अपने पुराने साथियों को याद रखोगे और हमारी हिफ़ाजत करोगे और कृपया कम-से-कम अधिकारियों से हमारी गलतियों की रिपोर्ट मत करना।"

जब चांग तुंग पर यह छींटा-कशी कर रहा था उधर बाहर जवान मजदूर जमा होकर शोर मचा रहे थे। बूढ़ा सुन डरा कि कहीं वे आपस में झगड़ा तो नहीं कर रहे हैं, पर वे आपस में झगड़ा नहीं बल्कि मिलकर एक गाना गा रहे थे :

इसे एक बार तोड़ो, दो बार तोड़ो,
सब मिलकर बर्फ को तोड़ो !
बूढ़ा सुन ईमानदार है,
उससे सीखने में हमें प्रसन्नता होती है।
उसने एक बार हमें राशन का चावल दिलवाया,
और वह हमें अच्छी-अच्छी नेक सलाह देता है।
जब कि वे महान अफसर भागे
उसने उन्हें चरखा देकर मशीनों की रक्षा की।
इस ढेर से कचरे को देखो,
हम जल्दी ही इस सब को साफ कर देंगे।
देखो, हममें से कौन कितना ज्यादा-से-ज्यादा काम कर सकता है,
हमारा समूह बड़ा मजबूत और बड़ा दिलवाला है।

इतने में ही बूढ़े कुआन ने बीच में ऊँची आवाज में कहा :

हम बूढ़े बड़ी होशियारी से काम करते हैं;
हम कसम खा के कहते हैं कि हम कोई चीज नहीं तोड़ने देंगे।

किन्तु जवान मजदूरों ने उधर कोई ध्यान नहीं दिया और जोर-जोर से चिल्लाकर उन्होंने कहा : "हम भी काफी होशियारी रखते हैं। हम कोई चीज नहीं तोड़ेंगे।"

"चीखो मत," बूढ़े सुन ने उनसे प्रार्थना की। "गाते चलो, गाते चलो !"

गाने बजाने में और लकड़ियाँ लाने में,
ली और चू बहुत अच्छे हैं।
चान [illegible], पेंग गुइ-मी,

सिर्फ देख रहे हैं कि उनकी कुल्हाड़ी कैसे चलती है।
तुंग चिन-कुइ भी उसमें शामिल है,
ज़रा देखो तो उसने खुद कितना किया है।

पर तुरन्त ही किसी ने धीमी आवाज में उसमें सुधार किया : "नहीं, इसे भी बदलना चाहिए : उसने बहुत ही कम काम किया है?"

"कोई बात नहीं है, अच्छा हो कि उसकी तरह के आदमियों को दुखी मत करो," किसी ने कहा।

चार मोटे मजदूर पहाड़ी पर,
वे सुस्त काहिल अब भी पहाड़ी पर सो रहे हैं।

जब बूढ़े सुन ने यह सुना तो उसने अपने मन में गिना कि कौन चार आदमी गायब हैं। सचमुच ही चार आदमी गायब थे। उसने अपने मन में कहा : 'ये जवान लोग काफी तेज़ हैं; उनकी निगाह से कोई चीज़ बच नहीं सकती।'

"तुम लोग बिना समझे इतनी कड़ी मेहनत कर रहे थे! तुम यह बर्फ किस लिए तोड़ रहे हो?" चांग जुंग-सी ने पूछा।

"हम लोग मशीनों को साफ करके ठीक कर रहे हैं ताकि केन्द्रीय सरकार आकर इनका चार्ज ले सके।" तुंग ने तुरन्त जवाब दिया।

"वे अफ़सर भाग गये हैं और फिर लौटकर आने की हिम्मत नहीं कर सकते," किसी ने उसकी बात काटी :

हमें कोई चिन्ता नहीं कि कौन आता है,
आठवीं रूट सेना या कुमिन्तांग वाले।

ल्यू फू ने, जो बर्फ को एक कोने में जमा कर रहा था, अपनी कड़ी जोड़ी :

लेकिन जब तक मरम्मत चलती है,
खाना या पैसा हमें कुछ नहीं मिलेगा।

"ठीक है। हम मज़दूर अपनी मेहनत पर ही अपनी रोज़ी के लिए निर्भर करते हैं," किसी और ने समर्थन करते हुए कहा।

डायनामाइट से तोड़ी गई मशीन का,
मलबा दायें बायें बिखरा पड़ा है।
उसमें भाप और तेल की टंकियाँ,
ढक्कन और दूसरी चीजें हैं
जिन्हें वह नष्ट करना चाहते थे।
इधर-उधर तार के टूटे टुकड़े
और उलझी हुई तार की गड्डियाँ हर जगह पड़ी हैं
इस मज़ाक में कौन शामिल होने को आयेगा!
इस समय क्या करना ठीक होगा!

गाना उस समय तक समाप्त नहीं हो सकता जब तक काम खत्म नहीं होता। क्योंकि वे जो भी करते उसे ही गाने में जोड़ देते थे। चार-पाँच दिन में वे मशीन घर की बर्फ साफ़ कर पाये। रात-दिन उन्होंने आग जलाए रक्खी ताकि बर्फ जल्दी से गल कर बह जाय। लेकिन मशीन के कुछ हिस्से फिर जम गये और उन्हें फिर साफ़ करना पड़ा।

एक महीने से अधिक दिनों तक सफाई का काम चलता रहा। इस बीच दो बार मज़दूरों ने चू के-सुन, तुंग और बिजली के कारीगर ल्यू-फू को अपना प्रतिनिधि चुनकर शहर से खाने का राशन लाने के लिए भेजा। दूसरी बार अधिकारियों ने कहा कि वे अधिक चावल नहीं दे सकते, और तीनों आदमियों ने तभी बगल के दूसरे कमरे में एक-दूसरे अफ़सर को ऊँची आवाज़ में कहते सुना:

"हम अधिक खाना कहाँ से पाएं? मज़दूरों को निकाल देना ही ठीक होगा या फिर उनका सम्पर्क सीधा केन्द्रीय दफ्तर से करा दिया जाय, ताकि वहाँ से वे अपना राशन ले सकें। यह छोटा-सा शहर कैसे मिस्त्रियों को पाल सकता है? आखिरकार बिजली ही तो सब-कुछ नहीं है। क्या युद्ध के पूर्व आठ वर्षों तक हम मिट्टी के तेल के लैम्प नहीं इस्तेमाल करते रहे हैं? फिर भी पर इस समय अपनी मांगों

शक्ति लुटेरों और कुमिन्तांग वालों को खत्म करने में लगाना है।"

दूसरे ने कहा, "मज़दूर यहाँ हैं, और मशीन की मरम्मत में पैसा खर्च करने की समस्या नहीं है, इसलिए मजदूरों को क्यों अलग किया जाय? कारीगर मिलना मुश्किल होता है इसलिए हमें उनकी सहायता करने और उनके खाने-पीने का प्रबन्ध करने पर विचार करना होगा। क्या तुमने नहीं सुना? उन्होंने अपनी पहलकदमी से ही मशीनों की रक्षा करने के लिए बर्फ साफ की है!"

बाहर जब तीनों आदमियों ने यह सुना तो वे फिर सन्तोष की साँस लेने लगे। तुंग ने दूसरे के कान में कहा: "पहला जरूर राजनीतिक कार्यकर्ता होगा।"

"नहीं, वे कमांडर चेन थे" ल्यू फू ने कहा, "दूसरा राजनीतिक कार्यकर्ता था। मैं उसकी आवाज़ पहचानता हूँ।"

जब वे आधे महीने के लिए काफी खाना ले चुके तब तुंग ने खुद 'मुँह मिया मिट्ठू' बनते हुए कहा कि उसके लिए उसे धन्यवाद देना चाहिए। बूढ़ा सुन जानता था कि वह झूठ बोल रहा है पर उसने एक शब्द भी नहीं कहा। बाद में उसने सुझाव रखा कि वे लोग एक वक्त सूखे चावल और दूसरे वक्त सिर्फ उसका माँड़ खाएँ ताकि चावल अधिक दिनों तक चल सके। हर एक सहमत हो गया।

अप्रैल के मध्य तक सारी बर्फ गल चुकी थी; जमीन के नीचे के कमरों में पानी भरा था और उसकी सतह पर तेल की मोटी तह पलरा रही थी। यह तारपीन का तेल था, जो तेल के गोदाम से, जिसे जापानियों ने तोड़ दिया था, रिसकर बाहर निकल आया था। सभी आराम के मूड में थे, कोई ताश खेल रहा था, कोई सो रहा था और कोई चुटकुले या भूतों की कहानी कह रहा था। पर बूढ़ा सुन मशीनघर में मशीन के कल पुर्जों को देखता घूम रहा था कि हर चीज़ दुरुस्त है या कि सफाई की और आवश्यकता है। उसने पानी की सतह पर तेल की मोटी तह को पलराते हुए देखा। उसने सोचा: 'यह तारपीन का तेल

है जो, जब जापानी यहाँ थे, बड़ा कीमती था। उसे लेने के लिए चांग-चुन या मुक्डन जाना पड़ेगा। कितने दुख की बात है! सेमिनोव कहता था कि सोवियत यूनियन में यह तेल बहुत है और उनके बाँध बहुत बड़े-बड़े हैं—दस-दस मील लम्बे-चौड़े, जो लाखों आदमियों को बिजली पहुँचाते हैं···हम अपने औद्योगिक नवनिर्माण में उनकी बराबरी में कब पहुँच सकते हैं?···'

उसने एक योजना सोची: 'अगर दो बड़ी बाल्टियाँ लेकर उनमें इस तेल को काछ लिया जाय तो फिर से इसे साफ कर इस्तेमाल करने योग्य बनाया जा सकता है। इस पर मुझे जवानों से फिर सलाह करनी चाहिए, अगर उन्हें दिलचस्पी नहीं है तो कुछ भी नहीं हो सकता।' लेकिन तुरन्त ही उसे ख्याल आया—'इधर कुछ दिनों से उनका सारा जोश जाता रहा है—आजकल उनके पास खाने के लिए सिर्फ माँड़ ही है। इसके लिए उन्हें दोष नहीं दिया जा सकता बल्कि कोई और अच्छी योजना सोचनी होगी।···'

जैसे ही वह मशीनघर से बाहर निकला उसे तुंग चिन-कुइ मिल गया। तुंग भी जब-तब मशीनघर जाया करता था, पर उसका वहाँ जाने का उद्देश्य सुन के उद्देश्य से भिन्न था। वह वहाँ यह देखने आया था कि वहाँ ऐसी कौनसी चीज़ है जिसे उठाकर लाया जा सकता है जिससे वह पैसा पैदा कर सके। वहाँ से वह चीज़ें उठाकर ले जाता और अपने बड़े भाई से बिकवाकर पैसे खड़े कर लेता। बूढ़े सुन ने तेल साफ करने की अपनी योजना उसे बताई। जैसे ही उसने सुना, उसने सोचा: 'अगर सारा श्रेय इसे ही मिलता है तो जब ऊपर के अधिकारी यहाँ आयेंगे तो वे इसके बारे में अच्छी राय बनायेंगे और इससे खुश होंगे।' लेकिन उसने कहा:

"बहुत अच्छा है! मैं आज ही शाम को या कल सबेरे ही सब लोगों को यहाँ जमा होने के लिए खबर भेज दूँगा, फिर किसी की हिम्मत नहीं है कि न आये। तुम चिन्ता मत करो, सब काम मेरे ऊपर छोड़ दो।

पिछले दो महीनों से अधिक दिनों से बिना किसी खास उद्देश्य के काम करते-करते लोग थक गये थे और बर्फ तोड़ते समय उनमें जो जोश था वह अब जाता रहा था। दूसरे दिन सवेरे सिर्फ पान और बूढ़ा कुआन मशीनघर पर उपस्थित हुए। यह देखकर तुंग नाराज़ हुआ और इधर-उधर घूमता हुआ बोला, "वे लोग क्यों नहीं आये? क्या वे समझते हैं कि यदि वे काम नहीं करेंगे तो यहाँ योंही पड़े खाते रहेंगे?"

बूढ़े सुन ने उसे शान्त किया और पहाड़ी पर जाकर शान्ति से औरों से कहा: "हमें कुछ और काम करना चाहिए, ताकि जब ऊपर के लोग उसका चार्ज लेने आवें तो उन्हें यह कहने का अवसर न रहे कि हम कुछ नहीं करते रहे हैं। अधिकारियों को यह सोचने पर विवश कर दो कि जापानियों के अत्याचार के बिना भी हम चीनी मज़दूर काम कर सकते हैं। आओ, मेरे साथ नीचे आओ; यह अच्छा तेल है। सोचो, क्या हम उसे नहीं काँछ सकते? आओ हम कोशिश करके देखें। दोपहर के बाद हम बढ़िया ठोस खाना खायेंगे।"

सब लोग नीचे गये। उन्होंने देखा कि पानी तेल से काला पड़ गया है। सबने अपने-अपने विचार सामने रखे। एक ने कहा कि कुछ पानी तेल काँछने से पहले बाहर बह जाने दो, दूसरे ने कहा कि तेल बिलकुल खराब हो चुका है। बूढ़ा सुन पलराती हुई तेल की मोटी तह और लोगों के चेहरों को देख रहा था। फिर उसने अपनी पेटी खोली, कपड़े उतारे और कहता हुआ पानी में घुसा: "रुको, पहले मुझे देख लेने दो कि यह कितना गहरा है।"

श्रीमती चांग और श्रीमती ल्यू आदमियों के पीछे खड़ी थीं, लेकिन जब उन्होंने बूढ़े सुन को कपड़े उतारते देखा तो वे घूमकर भागने को हुईं। ठण्डे गन्दे पानी के छूते ही बूढ़े सुन ने सर्दी के मारे अपने दाँत भींच लिए। साथ ही दोनों औरतों पर हँसते हुए उसने कहा: "तुम

भाग क्यों रही हो? तुमने किसी आदमी को इस तरह नहीं देखा है क्या?" सभी लोग हँस दिये।

"वाह, जब सुन जैसा बूढ़ा आदमी सर्दी से नहीं डरा, तो हम जवान होकर क्यों डरते हैं?" ली चान-चुन ने अपने कपड़े उतारते हुए कहा और वह भी पानी में कूद गया।

इस तरह सभी काम में लग गये। कुछ ने पानी निकाला, कुछ ने तेल छाँटा और कुछ ने मेंढक पकड़कर चिल्लाते हुए कहा कि वे उन्हें खाने के लिए तलेंगे।

पिछले कुछ दिनों से श्रीमती चाँग बड़े अच्छे मूड में थीं। वह भी श्रीमती व्यू और चू जू-चेन की जवान बीवी तथा छोटी लिंग को साथ लेकर काम में जुट गईं और वे तब तक काम करती रहीं जब तक उनके हाथ सर्दी के मारे नीले न पड़ गये। उन लोगों ने बहुत-से झींगुर पकड़ लिए, और लोगों के खाने के लिए झींगुर और सेम की बहुत-सी चीजें तैयार कीं और जब बाद में पानी बरसा तो श्रीमती चाँग उन सबको फिर कुकुरमुत्ते और जंगली जड़ी बूटियाँ जमा करने ले गईं।

इन दिनों में लोगों ने चार बड़े टीन भरकर तेल बचा लिया।

३

"माँ, कार! एक कार आ रही है।"

जब श्रीमती ल्यू की छोटी लड़की लिंग ने चिल्लाकर यह कहा तो सभी मर्द और औरतें भागकर बाहर दफ़्तर के सामने आ गयीं और दूर पहाड़ के ढलवान की ओर देखने लगीं। दूर पहाड़ के चक्करदार रास्ते पर उन्हें एक मोटर आती हुई दिखाई दी। वह एक भौंरे की तरह भनभनाती और चक्कर काटती बिजलीघर की ओर चली आ रही थी। उन्होंने अन्दाज़ लगाना आरम्भ किया—कुछ ने सोचा कि ये लोग बिजलीघर का चार्ज लेने आ रहे हैं; कुछ ने कहा कि ये लोग मशीन को यहाँ से हटाने के लिए आ रहे हैं; और कुछ ने सोचा कि ये लोग ज़िला सरकार द्वारा ताज़ी मछलियाँ ख़रीदने आ रहे हैं। बड़ी ही दिलचस्प बहस चल रही थी, तभी तुंग ने सबको चेताते हुए कहा: "जल्दी करो और स्वागत का कमरा साफ़ करो। श्रीमती ल्यू, तुम जल्दी से जाकर कुछ पानी उबालो। हमें कुछ आदमी मुख्य दरवाज़े पर ही उनका स्वागत करने के लिए भेज देना चाहिए।"

हर कोई इधर-उधर दौड़ने-घूमने लगा। भाग्य से मोटर पुरानी थी और बहुत धीरे-धीरे चल रही थी। दूर से ऐसा लगता था मानो वह बिलकुल चल ही नहीं रही है। उसे बिजलीघर तक पहुँचने में पूरा आध घण्टा लग गया। इस बीच में चाय बना ली गई थी और दो कुर्सियाँ किसी के घर से लेकर दफ़्तर में रख दी गई थीं। आश्चर्य था कि तुंग में यकायक बड़ा उत्साह आ गया था। वह इतना व्यस्त था

कि पसीने से नहा रहा था। जापानी अधिकार के दिनों में भी उसमें ऐसा ही जोश देखने को आता था। बाद में जब कुमिन्तांग अफ़सर आये थे तब भी वह बड़ा सक्रिय था लेकिन जब वे चले गये तो उसका उत्साह भी चला गया था। बूढ़ा सुन सुस्त आदमी था ; वह बड़ी शान्ति के साथ एक पत्थर पर बैठा सोचता रहा कि ऐसे अवसर पर उसके करने योग्य कुछ है भी या नहीं।

'वे बहुत ही ठीक समय पर आ रहे हैं, मशीनें साफ़ की जा चुकी हैं और तेल भी बचा लिया गया है। अच्छा, मान लो...' वह इसी तरह सोच रहा था।

तुंग अन्य बूढ़े और जवान मज़दूरों के साथ आगे बढ़कर मुख्य दरवाज़े पर पहुँच गया। बाकी मज़दूर तो सड़क से हटकर थोड़ी दूर पर खड़े हुए थे और औरतें और बच्चे छोटे-छोटे पेड़ों के पीछे नये पत्तों की आड़ में थे। जब मोटर रुकी तो कई आदमी गहरी भूरी और हल्की भूरी पोशाक पहने मोटर से बाहर कूद पड़े। उनमें से चार के पास राइफ़िलें थीं और एक के पास स्वचालित बन्दूक थी। ड्राइवर के बग़ल की सीट से एक आदमी, जिसकी उम्र लगभग तैंतीस-चौंतीस वर्ष की थी और औसत क़द का था, उतरा। वह भी वैसी ही भूरी पोशाक पहने था, पर उसके पास राइफ़िल न थी और उसकी जाकेट के चार बटनों में से कुल तीन ही लगे हुए थे, और पाँचवाँ ग़ायब था। वह बड़ा भला आदमी लग रहा था। वह लोगों की ओर मुस्कराता हुआ बढ़ा और बोला : "मज़दूरो, तुमने बड़ी-बड़ी मुश्किलें सही हैं। तुम लोगों का इन्चार्ज कौन है ?"

किसी ने कोई उत्तर नहीं दिया। वे सिर्फ़ खुलकर मुस्करा दिए। तुंग ने इस अवसर से लाभ उठाया और आगे बढ़कर बड़े अदब से बोला : "हमारा यहाँ कोई भी इन्चार्ज नहीं है, लेकिन जब हमें शहर से ज़रूरत की चीज़ें लानी होती थीं तो लोग मुझे ही अपना प्रतिनिधि चुनते थे और मैं ज़िला सरकार के पास कई बार हो आया हूँ। जनाब

क्या हम भी जान सकते हैं कि आप लोग कहाँ से आये हैं ? मेरा नाम तुंग चिन-कुइ है…"

"ठीक-ठीक। मेरा नाम वांग है। केन्द्रीय दफ्तर ने मुझे आकर तुम लोगों से मिलने का आदेश दिया है। मशीनों की क्या हालत है ? क्या मशीनें ठीक हैं ?"

जब वे लोग मेहमानों को लेकर दफ्तर में गये तो राइफ़िल लिये सिपाही बच्चों के साथ खेलते और वहाँ की हालत पूछते हुए बाहर रह गये। इस समय तक सिवाय बच्चों के कोई शान्त नहीं बैठा था। कुछ चाय लाने में, कुछ पानी लाने में, कुछ सफ़ाई करने में और कुछ खाना तैयार करवाने में व्यस्त थे। कुछ गाँव से अंडे लाने गये थे। रसोइये ने उन्हें बहुत ही अच्छा खाना खिलाने का निश्चय किया था। श्रीमती चांग आलू के बड़े सुन्दर वर्क काट रही थीं। श्रीमती ल्यू पीतल का तसला ले आईं। यह उन्हें उनकी शादी के अवसर पर मिला था। इन सभी व्यस्त आदमियों के अपने-अपने ख़्याल थे और अलग-अलग आशाएँ थीं। लेकिन आशा सभी की समान थी : 'अगर वे किसी तरह जल्दी से मशीनों की मरम्मत कराके उन्हें चालू करा दें तो सब ठीक हो जायगा।'

कुछ दिन पहले चांग जुंग-सो ने शहर में देखा था कि आठवीं रुट सेना कितनी फटे-हाल लगती थी। इस वजह से कुछ आदमी तो उसे 'भिखमंगों की सेना' कहते थे, और उसने भी उनका यह उपनाम ठीक ही समझा था। वास्तव में उसे आठवीं रुट सेना से कोई झगड़ा नहीं था और न वह यही कह सकता था कि वह उससे घृणा करता है; लेकिन जब भी वह उन्हें देखता तो उसे हँसी आ जाती थी : 'उनमें मंचूकू पुलिस की तरह भी तो रोबदाब नहीं है !' इसलिए जब हर कोई मेहमानों की ख़ातिर में व्यस्त था वह अपने कमरे में जाकर सो रहा।

मेहमानों में से एक को, जिसका नाम वांग युंग-मिंग था, केन्द्रीय दफ्तर की ओर से बिजली कम्पनी का डायरेक्टर बनाकर भेजा गया था। वह

इस जादे गरडिल झील के बिजलीघर के अलावा दो और बिजलीघरों का भी जिम्मेदार था। उसका खास काम इस बिजलीघर का पुनर्निर्माण करना था, क्योंकि अगर यह एक बार बिजली पैदा करने लग जाय तो फिर उन दोनों स्टीम इन्जन के बिजलीघरों की ज़रूरत न रहेगी। फिर वे सिर्फ बिजली परिवर्तित करने का काम करेंगे और इस तरह काफ़ी शक्ति और सामान की बचत हो जायगी। वह अभी ता शेंग के बिजली घर से आया था और अपने साथ वहाँ के दो कारीगरों को भी लेता आया था।

एक प्याला चाय पीने और हाथ-मुँह धोने के बाद डायरेक्टर वांग ने जाकर बड़े ध्यान से बिजलीघर की देखभाल की; चार-पाँच मज़दूरों से बात की और फिर सभी मज़दूरों की एक मीटिंग बुलाई। मीटिंग में उसने सबको समझाया कि जनता की सरकार ने इस बिजलीघर को पुनः चालू करने का निश्चय किया है। उसने मज़दूरों को सारी मुश्किलों का सामना करते हुए मशीनों को पुनः चालू करने के लिए उत्साहित किया। उसने उनसे अपने विचार साफ़-साफ़ और बिना किसी हिचक के रखने को कहा। दोपहर के बाद मोटर में बैठकर वह वापस चला गया। जो ता शेंग के दो मज़दूर उसके साथ आये थे वे वहीं रह गए।

ता शेंग से आये कारीगरों में से एक का नाम चेन सू-तिंग था। उसकी उम्र करीब उन्तीस साल की थी। दूसरे ल्यू एह-सुआन की उम्र कुल चौबीस साल ही थी। जब आठवीं रूट सेना ने ता शेंग विजय किया था तब चेन सु-तिंग पहला मज़दूर था, जो आठवीं रूट सेना का दोस्त हो गया था और जब मज़दूरों की यूनियन बनी तो वह उसके सबसे ज़्यादा जोशीले सदस्यों में से था। जब आठवीं रूट सेना वहाँ से पीछे हट रही थी तो उसे डर हुआ कि कुमिन्तांग वाले उस पर बड़ा अत्याचार करेंगे; इसलिए उसने अपनी बीवी और बच्चे को साथ लेकर कामरेड वांग युंग-सिंग के साथ जाकर क्रान्ति में शामिल होने का निश्चय किया। वैसे तो क्रान्ति के सिद्धान्तों के बारे में उसका ज्ञान

औरों से कुछ अधिक न था, पर वह बड़ी जल्दी जोश में आ जाता था और बड़ा ही उत्साही और भावुक था। वह तेल की उस बूँद की तरह था जो पानी पर पलराती ही रहती है। हर आन्दोलन के आरम्भ में आप ऐसे लोगों को पायेंगे। ल्यू एह-सुआन दो साल तक मिडिल स्कूल में पढ़ा था और उसे मशीन के बारे में सीखने का बड़ा चाव था। जापानी अधिकार के दिनों में वह अपनी मेहनत से ही कुछ किताबें पढ़-कर थोड़ा-सा सीख पाया था। जैसे ही आठवीं रुट सेना ता-शेंग पहुँची तो उसने जापानियों के मुक़ाबले में कहीं ज्यादा आज़ादी का अनुभव किया। वह हरदम अपने साथ किताब रखता और जब भी उसे मौका लगता वह उसे निकालकर पढ़ने लग जाता। एक दिन जब वह ड्यूटी पर था और बिजली के सम्बन्ध की एक किताब पढ़ने में व्यस्त था, वांग युंग-मिंग चुपचाप आकर उसके पास खड़े हो गये और अपना गला साफ करते हुए बोले : "क्या पढ़ रहे हो ?"

जब ल्यू एह-सुआन ने डायरेक्टर वांग को अपने पास खड़े पाया तो वह डर के मारे काँपने से अपने को न रोक सका और उसकी किताब फर्श पर गिर गई। वांग युंग-मिंग ने उसे उठा लिया और देखा कि वह किताब कैसी है तो मुस्कराते हुए बोले : "बहुत अच्छा है। मज़-दूरों को न सिर्फ यही जानना चाहिए कि बिजली को कैसे इस्तेमाल किया जाय, बल्कि उसके बारे में उन्हें पूरा ज्ञान रखना चाहिए। तुम कितने साल स्कूल में रहे हो ?"

ल्यू एह-सुआन ने देखा कि आठवीं रुट सेना के अफ़सर जापानी अफ़सरों से बिलकुल भिन्न हैं तो वह स्वस्थ-चित्त हो गया और सिर नीचे झुकाकर बोला : "मैं मिडिल स्कूल में दो साल तक रहा हूँ। उसके बाद मेरे पिता मर गए और मुझे पढ़ाई छोड़नी पड़ी और मैं एक बिजलीघर का मज़दूर बन गया।"

इसके बाद से वांग युंग-मिंग उस पर विशेष ध्यान देते रहे और अक्सर उससे बातचीत किया करते तथा उसे उत्साहित करते रहते।

ल्यू से आप जो कुछ भी करने को कहें वह करने को तैयार हो जाता पर वह बातें करने में बहुत शर्माता था; जब भी उसे थोड़ा-सा अवकाश मिलता तो वह कुछ-न-कुछ बनाता रहता या फिर अपनी किताबें पढ़ता रहता। उसे सभाओं में जाने से बड़ा डर लगता था और लोगों से मिलना-जुलना भी उसे अच्छा नहीं लगता था। जब आठवीं रुट सेना ता-शेंग खाली कर रही थी और वांग युंग-मिंग ने उससे पूछा था कि क्या वह आठवीं रुट सेना के साथ जाना पसन्द करेगा तो उसने अत्यन्त सूक्ष्म-सा उत्तर दिया था: "जब तक मुझे पढ़ने और मशीनों के बारे में ज्यादा-से-ज्यादा जानने का अवसर मिलेगा, मैं उस समय तक कहीं भी जाने को तैयार हूँ।"

तीन दिन के बाद ही वांग युंग-मिंग फिर जादे गरडिल झील आये। इस बार उनके साथ कारीगर लु पिंग-चेन, दो भाई यांग फू-तिन और यांग शेन-तिन, जिन्होंने जापान में शिक्षा पाई थी और चेन सू-तिंग का परिवार और कुछ सिपाही भी थे। इस बार उन्होंने सरकारी घोषणा सुनाई कि वे कारखाने के डायरेक्टर नियुक्त किये गए हैं, लू पिंग-चेन सहायक डाइरेक्टर, चेन सु-तिंग विभाग मैनेजर तथा व्यापार मैनेजर और ल्यू एह-सुआन बिजली विभाग के मैनेजर नियुक्त किये गए हैं। और उन्होंने सभी से आपसी सहयोग द्वारा बिजलीघर को फिर से चालू करने की अपील की।

चेन सु-तिंग ने जब काम आरम्भ किया तो उसने एक दिन सभी मज़दूरों की दो-तीन मीटिंगें बुलाईं और उनको अपनी यूनियन बनाने को कहा। उसने तुंग-पान, यू-शान, ल्यू-फू और एक नये आये मज़दूर ली सी-स्यान और कुछ दूसरों से यूनियन के बुनियादी संगठन-कर्ता की हैसियत से काम करने को कहा। बहुत जल्दी ही जादे गरडिल झील के बिजलीघर के मज़दूरों की यूनियन संगठित हो गई। चेन सु तिंग उसका सभापति और प्रचार विभाग का प्रधान चुना गया, ल्यू एह-सुआन को संगठन-सम्बन्धी देखभाल करने को नियुक्त किया गया।

तुंग चिन-छुइ मजदूर-हित-विभाग का जिम्मेदार बनाया गया और ल्यू-फू, पान यू-शान और वूढ़ा सुन ग्रुप लीडर बनाये गए।

बिजलीघर में आठ या नौ नये भर्ती किये गए मज़दूरों में से एक ली सी-स्यान तुंग का भानजा था। ये मजदूर छोटे सुंग, यांग फू-शेन और चिन युंग-सुआन ली सी-स्यान के कहने पर रक्खे गये थे।

एक हफ्ते से सभी लोग मशीनों की मरम्मत करने में लगे हुए थे। डायरेक्टर वांग को आशा हो चली कि शीघ्र ही मशीनें फिर पूरी तरह से ठीक हो जायँगी। मज़दूरों की यूनियन संगठित हो गई थी और चेन सु-तिंग बड़ी योग्यता और लगन से काम चला रहा था। मज़दूरों में भी काम के प्रति उत्साह दिखाई दे रहा था। इसलिए वांग ने वापस शहर जाने का निश्चय किया। जिस शाम को वे वापस जा रहे थे उन्होंने चेन-तिंग और ल्यू एह-सुआन को अपने कमरे में बातें करने के लिए बुलाया।

"क्या डायरेक्टर वांग, आप एक हफ्ता और नहीं रुक सकते ?" चेन सु-तिंग ने पूछा। "मुझे भय है कि मैं ठीक से काम नहीं चला पाऊँगा और फिर इन्जीनियर लू सहायक डायरेक्टर हैं तो मैं उन्हें कैसे आदेश दे सकता हूँ ? रही मज़दूर यूनियन की बात तो उसे भी ता-शेंग की तरह ठीक से चलाना आसान नहीं है। मैं यहाँ के सभी मज़दूरों को भी तो अभी पूरी तरह नहीं जानता।..."

"क्या मैंने बार-बार तुम्हें नहीं बताया है ?" अपनी आँखें चौड़ी करते हुए वांग युंग-मिंग ने कहा। उनके अन्दर जेचुनीज़ के गर्म खून की सभी विशेषताएँ थीं, और उनकी बातें बड़ी सरल और स्पष्ट होती थीं। जब उत्तर-पूर्व के वर्षों से घुसे-पिसे मज़दूर उनकी बातें सुनते थे तो उन पर उनका विश्वास बढ़ जाता और वे उन्हें और भी अधिक प्यार करने लगते थे। चेन सु-तिंग के साथ भी ऐसी ही बात थी। "टेकनिकल मामलों में वह फैसला करेगा, लेकिन मज़दूरों की यूनियन के सम्बन्ध में सारी जिम्मेदारी तुम-दोनों की है। समझे ? मज़दूर

रक्खा था। जब वह शहर में रहते तो वह जादे गरडिल झील के बारे में फ़िक्र करते, और जब वह जादे गरडिल झील में होते तो शहर के बारे में फ़िक्र करते। बिजली कम्पनी के सभी कर्मचारियों में से सिवाय सेक्रेटरी लु ल्यु-ई, उनकी बीवी और व्यापार मैनेजर ली के, जो तीनों ही उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के बाहर से आये थे, पहले पिट्ठू सरकार के नौकर थे। ये अपने अधिकारियों से भिन्नता का बरताव करते थे, हालाँकि वे कम्युनिस्ट तरीकों को अपनाने की पूरी कोशिश करते थे, इससे कोई मतलब नहीं कि वे क्या करते थे, चाहे जनवादी सिद्धान्तों पर बहस करते थे, या झुककर सलाम करने की जगह पर बराबर से हाथ मिलाते और या हिम्मत कर डायरेक्टर वांग के साथ बैठकर बराबरी से बातें करते, इन तमाम परिवर्तनों के बावजूद भी उनके विचारों में परिवर्तन नहीं आया था। डायरेक्टर वांग ताड़ने में बड़े तेज़ थे। वे जानते थे कि इन साथियों के दृष्टिकोण में कोई बुनियादी परिवर्तन नहीं आया है। वह यह भी समझते थे कि अगर काम को सही ढंग से पूरा करना है, तो उन्हें साफ़-साफ़ बताना होगा कि वे किसके लिए काम कर रहे हैं ताकि उनका नकारात्मक, भाड़े वाला दृष्टिकोण बदले और वे सकारात्मक रूप से काम में उत्साह से सक्रिय भाग ले सकें। लेकिन उनमें ज़रूरत से ज्यादा अधीरता थी। वे चाहते थे कि जल्दी-से-जल्दी काम पूरा हो जाय। इसी कारण वह कभी-कभी अपनी बीवी की आलोचना करते और कहते, "अगर मैं कहूँ कि तुम एक औरत हो, तो तुम फिर गुस्सा हो जाओगी। पर मैं कुछ नहीं कर सकता, वास्तव में औरतें कामरेड मर्द कामरेडों के मुकाबले की नहीं हैं। उदाहरण के लिए अगर तुम इन पुराने मज़दूरों को सुधार लो तो मैं कारखाने को विकसित करने पर पूरा ध्यान दे सकता हूँ। वास्तव में मैंने तुंग के विश्वविद्यालय में जो कुछ सीखा था सब भूल गया हूँ।

"जब मैं तुमसे जल्दी करने को कहता हूँ तो तुम कहती हो, 'दृष्टि-कोणों में परिवर्तन होने में काफी समय लगता है और हमें यहाँ आये

अभी एक महीना ही हुआ है। अगर हर कोई उतना ही प्रगतिशील हो जितना तुम हो तो क्या अब तक सारे विश्व में मार्क्सवाद न हो जाता ?' और अगर मैं अधीर होकर तुमसे असम्मानपूर्वक बात करूँ, तो तुम कहोगी, 'अधीर मनुष्य जरूर गलती करेंगे। अगर पार्टी तुम्हें और अधिक जिम्मेदारी का काम सौंप दें, तो सचमुच भय है कि तुम अपनी अधीरता से सब काम गुड़-गोबर कर दोगे।' ल्यू-ई अगर मैं साफ शब्दों में कहूँ, तो मुझे तो अपनी अधीरता के कारण काम बिगाड़ने का डर नहीं है लेकिन तुम जैसी सुस्त साथियों से—ओह, मुझे सन्देह है कि कभी भी क्रान्ति पूरी होगी।"

लु ल्यू-ई मोटी और आश्चर्यजनक रूप से अच्छे स्वभाव की औरत थी। न वह कभी अधीर होती थी और न कभी गुस्सा होती थी। नम्रता, शीलता और सहनशीलता उसके खास गुण थे। इसी कारण कम्युनिस्टों और पुराने नौकरों दोनों की ही उसके बारे में बड़ी अच्छी राय थी। आदमी की अच्छाइयाँ और बुराइयाँ एक-दूसरे के साथ अक्सर ऐसी जुड़ी होती हैं कि उन्हें अलग नहीं किया जा सकता। उसकी नम्रता और शील इस कारण नहीं थी कि वह अनुभवी थी और वह लोगों को समझाकर उनकी गलत मनोवृत्तियों को सुधार सकती थी; किन्तु इसलिए थी कि उसमें वास्तविक समझ की और दूसरों का विरोध करने के साहस की कमी थी। इस तरह अच्छे गुणों के साथ ही उसमें और किसी निश्चित दृष्टिकोण के न होने के अवगुण भी थे। फिर भी वह कितनी ही सहनशील थी पर अपने पति की आलोचना न सहन कर सकती थी, खास तौर से रोज़ाना के काम के बारे में। वह हमेशा उसकी काट करने के लिए तर्कों की तलाश में रहती थी। वांग युंग-मिंग कमज़ोरियाँ तलाश करने के उतने इच्छुक न थे पर चूँकि वह उसकी बीवी थी इसलिए वह बजाय दूसरों के उसकी कमज़ोरियों को ज्यादा सफाई से देख सकते थे, क्योंकि पति-पत्नी से ज्यादा नज़दीक और कौन होगा, इसलिए वह उसकी प्रायः आलोचना किया करते थे। इस

तरह पति-पत्नी में गरमा-गरम बातचीत हो जाती थी। कभी-कभी तो मज़ाक में और कभी-कभी सचमुच में ही, पर शायद कभी ही वे सच-मुच गुस्सा होते थे; और हमेशा ही लु त्यू-ई ही गुस्सा होती थी। वह महसूस करती थी कि उन्हें औरों की अपेक्षा उसे अधिक पसन्द करना चाहिए और अधिक सहूलियतें भी देनी चाहिएं।

फिर भी, इन तमाम बातों के बावजूद वे दोनों बड़ी गम्भीरता से अपना काम करते थे और लोगों के प्रति जिम्मेदारी महसूस करते थे, क्योंकि दूसरे कामरेडों की ही तरह क्रान्ति में उनका एक ही उद्देश्य था : हर सम्भव तरीके से जनता के अधिक-से-अधिक फायदे के लिए अपने काम को विकसित करना।

गर्मी के दिनों में जादे गरडिल झील में सूरज जल्दी उगता था। साढ़े पाँच बजे हां नाश्ता हो जाता था और हर किसी को—औरत-मर्द, बूढ़े-जवान सभी को—पाँच बजे उठना पड़ता था।

लु यिंग-चेन देर से सोकर नहीं उठता था, लेकिन उसे आठ बजे के बाद तक यांग बन्धुओं के उठने तक अपने नाश्ते के लिए इन्तजार करना पड़ता था। नाश्ते से पहले वह खिड़की के किनारे बैठकर अपने नोट्स पढ़ता रहता था। जब रसोइया उसे आकर कई बार बुला जाता तब वह आराम से खाना खाने जाता। एक बार जब रसोइया ने उसे खाने के लिए बुलाया और उसे वहाँ औरों के आने तक इन्तजार करना पड़ा, तो वह बड़ा गुस्सा हो गया था। इस घटना के बाद से जब तक सब नहीं आ जाते थे, तब तक रसोइया उसे बुलाने नहीं जाता था। वह दोनों इन्जीनियरों के साथ बड़ी नर्मी का बरताव करता था, करीब-करीब वैसा ही जैसा पिट्ठू-शासन के समय में करता था, सिर्फ अन्तर इतना था कि जापानी अधिकार के दिनों में वह उनके प्रति ज्यादा आदर प्रदर्शित करता था। अब उनकी शक्ति जाती रही थी उसी तरह जैसे जापानियों की, इसलिए वह अनुभव करता था कि उन्हें उसके प्रति अधिक नम्रता का व्यवहार करना चाहिए। इसके अलावा वह यहाँ

का सहायक डायरेक्टर भी था इसलिए कोई भी, वह स्वयं भी उस पद के सम्मान को बट्टा नहीं लगा सकता था। वह उनके ज्ञान और शिक्षा के कारण उनका आदर करता था।

पहले वह लू मिंग नदी के किनारे घने फू सिंग इन्जीनियरों के कारखाने में काम करता था और अक्सर जापानियों की मशीनों की मरम्मत करने के लिए जादे गरडिल फील जाया करता था। वह सिद्धान्त में काफ़ी तगड़ा था पर 'चेहरे' पर अधिक ज़ोर देता था। अगर मज़दूर उसके साथ ज़रा भी रुखाई से पेश आते थे तो वह बुरा मान जाता था। इसी कारण मज़दूरों ने उसका उपनाम रख लिया था—औरत के समान तु। जब वह गुस्सा होता था तो व्यंगात्मक भाषा में कहता, "जब तुम लोग भी शिक्षा का आदर करने के योग्य काफी शिक्षित हो जाओगे तो सारी दुनिया सभ्य हो जायगी।" या कहता, "अशिक्षा कितनी बुरी चीज़ है!" वह समझता था कि इस तरह के घृणायुक्त व्यंग-वाक्य लोगों पर गहरी चोट करेंगे। पर वास्तव में जब वह बोलता होता तो कोई उसकी बातों पर ध्यान ही नहीं देता था और 'हाँ, हाँ' कर देते थे। पर काम करते समय वे उसके शब्दों का मज़ाक बनाते। तार लगाने वाला मज़दूर ऊँचे खम्भे पर चढ़कर और तारों को ऐंठता हुआ कहता, "अगर तुम थोड़ा और ऐंठ जाओ तो सारी दुनिया ही सभ्य हो जाय।" और दूसरे कूद-कूदकर गाते हुए कहते, "अगर तुम योग्य हो तो रबर के दस्ताने मत पहनो; अगर तुम अच्छी तरह शिक्षित हो तो एक जापानी बीवी ले आओ।" जब लु पिंग-चेन जापान में शिक्षा पा रहा था तो उसने एक जापानी औरत से शादी की थी। लेकिन बाद में पढ़ाई खत्म कर जब वह चीन लौटा तो वह उसके साथ नहीं आई। हालाँकि यह दस साल पहले की घटना है और अब उसके चीनी बीवी से तीन बच्चे भी हैं फिर भी सभी मज़दूर उस बात को जानते थे और उसके पीठ पीछे उसका मज़ाक बनाकर हँसते थे।

यांग फू-तिन और उसके छोटे भाई की माँ जापानी थी और

जापान में ही वे पाले-पोसे गए थे। पहले वे चीनी भाषा भी नहीं बोल पाते थे और बिलकुल जापानियों की ही तरह रहते थे। वे दोनों मज़दूरों में तो बदनाम थे, पर काम अच्छा करते थे। १५ अगस्त के बाद उनकी स्थिति बुरी हो गई थी और उन्हें हारबिन जाकर अपना पेट भरने के लिए चीज़ें बेचनी पड़ी थीं। अब बिजली कम्पनी ने उन्हें वापस बुला लिया है, इसलिए वे समझते थे कि हालाँकि जापानी शासन के समय से उनका रोब-दाब और आदर तो कम है फिर भी वे अपनी कुशलता और कारीगरी के बल पर सम्मान पा सकते हैं। उन्होंने बचपन से ही जापानी फ़ासिस्ट शिक्षा पाई थी। वे मज़दूरों, किसानों और कम्युनिस्टों से घृणा करते थे। इसलिए आठवीं रुट सेना और आज़ाद हुए मज़दूरों को देखते ही उन्हें गुस्सा आता था। मशीन घर में अगर कोई भी मज़दूर जरा भी लापरवाही दिखाता या हिदायतों को पूरी तरह पूरा न करता तो उसे जापानी भाषा में बुरा-भला कहते। वे जब मशीनों को ठीक करते तो दूसरे मज़दूरों को वहाँ से हटा देते थे, क्योंकि उन्हें भय था कि कहीं दूसरे उस काम को न सीख लें।

वे आठ बजे तक सोकर न उठते थे और साढ़े आठ बजे नाश्ता करते थे। चेन सु-तिंग आफिस के सामने दो-तीन बार चक्कर काट जाता तब वे कहीं नौ बजे बिजलीघर में काम करने जाते, वरना जाते जाते दस बज जाते थे।

४

दो दिन जादे गरडिल में रहकर डायरेक्टर वांग फिर शहर लौट गए। उनके चले जाने के बाद ल्यू-फू चेन सु तिंग के पास आया उसके सामने ग्रुप लीडर के पद से अपना इस्तीफा रख दिया।

"तुम्हें तो पूरे ग्रुप ने अपना नेता चुना था, मैं अकेला कैसे तुम्हारा इस्तीफा मंजूर कर सकता हूँ ?" चेन सु-तिंग ने जवाब दिया।

"तुम सभापत्ति हो। अतः अकेले ही फैसला कर सकते हो।" ल्यू फू ने घबराते हुए जोर दिया। "सभापति चेन के कहने पर कोई आपत्ति नहीं करेगा।"

"भला तुम इस पद से इस्तीफा क्यों देना चाहते हो ?"

"मैं उसके योग्य नहीं हूँ। अच्छा हो मुझसे किसी अधिक योग्य व्यक्ति को चुन लिया जाय।"

"क्यों, क्या यह बात नहीं है ?—तुम्हें डर है कि कुमिन्तांग वाले फिर वापस आ जायँगे। क्यों है न यही बात ?" चेन सु-तिंग को गर्व था कि उसने असली बात पकड़ ली थी, और उसने जाहिर किया कि वह किस धातु का बना हुआ है। उसने अपना चौकोर चेहरा ऊपर उठाया और आँखें आसमान की ओर करके बोला, "चिन्ता मत करो। अगर कोई तुम्हारे शरीर का एक रोयां भी छूने का साहस करेगा तो मैं उसे ठीक कर दूँगा। तुम्हारा परिवार भी तीन का है, सो मेरा भी है। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि कुमिन्तांग वाले अब

कभी वापस नहीं आ सकेंगे। यह इलाका अब हमेशा आज़ाद रहेगा, तुम चिन्ता मत करो।"

इस्तीफे की प्रार्थना अस्वीकृत कर दी गई और तब ल्यू फू लौट गया, और जाकर अपनी बीवी से भुनभुनाने लगा, "तुम्हारी ही तरह की औरतें आदमी को मुसीबत में डाल देती हैं। मुझे वहाँ भेजकर खामखां के लिए बातें सुनवा दीं।"

"हर कोई तो ऐसा ही कहता है; भविष्य में कुमिन्तांग वाले वापस आयेंगे और वे उस किसी को नहीं छोड़ेंगे जो आज किसी पद पर है," श्रीमती ल्यू ने कहा।

"कल कल है और आज आज़। मैं चिन्ता नहीं करता कि कल क्या होगा।"

श्रीमती ल्यू अब भी चिन्तित थीं, और बूढ़े सुन को तलाश करने गयीं। इत्तफाक से उसे वहाँ पान यु-शान भी मिल गया जो बूढ़े सुन को बता रहा था कि वह ग्रुप लीडर के पद से क्यों इस्तीफा देना चाहता है। श्रीमती ल्यू को देखकर उसने बातें बन्द कर दीं, लेकिन उसने जान-बूझकर उस विषय को चालू रखा, "यू-शान तुम किस सम्बन्ध में बातें कर रहे हो? कोई आदमी जो एक पद के लिए चुना गया है वह उस पर काम नहीं करेगा! इससे तुम्हारा मतलब क्या है?"

पान यू-शान नहीं चाहता था कि उसकी बात की कोई पकड़ हो जाय इसलिए उसने बात टालनी चाही। किन्तु बूढ़े सुन ने बात टाली नहीं और जान-बूझकर बोला, "अगर तुम एक काम करने के लिए चुने गये हो, तो तुम्हें उसे मंजूर करना चाहिए। अगर काम कुछ तुक का है और जरूरी है, तब तो चाहे दूसरे लोग उसे न भी करना चाहें तब भी तुम्हें उसे करते रहना चाहिए।"

उस शाम को राजनीतिक शिक्षा की क्लास में चेन सु-तिंग ने उन लोगों की आलोचना की जो लोग इस्तीफा देना चाहते हैं। "यह मंचूक मनोवृत्ति है—पिछड़ी हुई। भविष्य में जो कोई ग्रुप लीडर के पद से

या कमेटी की सदस्यता से इस्तीफा देना चाहेगा उसे पिछड़ा हुआ दकियानूसी समझा जायगा। हम मज़दूर हैं, और मज़दूर ही नई दुनिया के निर्माता हैं।..."

इसके बाद से फिर किसी ने इस्तीफे की बात नहीं थी। इस तरीके को असरदार समझकर चेन सु-तिंग ने अपने लिए सिद्धान्त बना लिया, "मंचुकू मनोवृत्ति से मंचूकु तरीकों से ही लड़ा जा सकता है।"

जब से जनता की सरकार ने बिजलीघर का काम संभाला है, आरम्भ से ही तुंग चिन-कुइ बहुत ही सक्रिय था। वह डायरेक्टर वांग, चेन सु-तिंग और सहायक डायरेक्टर लु का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के हर अवसर का उपयोग करता था। उनके सामने बर्फ तोड़ने और तेल बचाने का सारा श्रेय वह अपने ऊपर ही लेता था। वह उन्हें बताता कि पहले तो लोग मदद करने के लिए नहीं तैयार हुए पर उसने ही उन्हें उत्साहित कर काम पर लगाया था। बूढ़े सुन को जो श्रेय मिलना चाहिए था उसे उसने दबा दिया।

मज़दूरों ने जिस तरह मशीनों की देखभाल की थी उससे डायरेक्टर वांग बड़े ही प्रभावित हुए थे। उन्हें विश्वास नहीं होता था कि मशीनों की देखभाल करने में तुंग ने कोई पहलकदमी की होगी।' "यह मज़दूर का सबसे उत्कृष्ट चरित्र है। उनकी मेहनत मशीन या कारखाने से अलग नहीं की जा सकती।" एक बार उसने चेन सु-तिंग से भी कहा था, "मुझे विश्वास नहीं होता कि तुंग जैसे आदमी ने मज़दूरों को उत्साहित कर इस काम में लगाया होगा। अगर उसने ऐसा किया भी होगा तो निश्चय ही किसी दबाव के कारण। नहीं, निश्चय ही वह ऐसा नहीं कर सकता; उसकी तरह के आदमी में नेता होने के गुण ही नहीं हैं।"

चेन सु-तिंग डायरेक्टर वांग के विचारों से बिलकुल असहमत था पर उसे उनकी बात का विरोध करने के लिए कोई तर्क नहीं मिलता था, इसलिए वह वांग के सामने तो चुपचाप सुन लेता था लेकिन उनके

पीछे मीटिंग में या राजनीतिक शिक्षा-क्लास में वह तुंग की तारीफ़ करता था। इस तारीफ़ से मज़दूरों को गुस्सा आता था। कुछ ने तो अपने नेताओं पर से सारा विश्वास खो दिया था, और कुछ तो नई सरकार से बिलकुल निराश हो गए थे, और वे उसके प्रति तटस्थता तथा असम्पर्कता का रुख रखने लगे थे।

बिजलीघर में पुराने और नये कुल मिलाकर तीस मज़दूर थे। वे दो दलों में विभाजित कर दिये गये थे। एक दल ढोआढोई और सफ़ाई का जिम्मेदार था। उनकी तादाद भी ज्यादा थी और उनका काम भी भारी था। उस दल का नेता था तुंग। दूसरा था मरम्मत-दल जिसमें सिर्फ ल्यू एह-सुआन, ल्यू फू, यान यू-शान, बूढ़ा सुन, चू जू चेन और दो नये मेटल मज़दूर और बिजली के कारीगर थे। उस दल का नेता ल्यू एह-सुआन था। इस मरम्मत-दल का काम सिर्फ इतना था कि वे लोग मशीन के साफ किये हिस्सों को इंजीनियरों के पास ले जाते, उन्हें मशीन में फिट करने में उनकी मदद करते और हथौड़ा चलाते थे। वांग बन्धु उन्हें अब भी कुली ही समझते थे। वे उनके प्रति घृणा से होंठ बिचकाते थे, और मशीन के सम्बन्ध में उन्हें कुछ भी जानकारी कराने के लिए तैयार न थे फिर भी मज़दूर एक-आध छिपी नज़र मशीन पर डालकर कुछ-न-कुछ उसके बारे में समझ ही लेते थे। पहले दल के मजदूर खास तौर पर चांग जुंग-सी और ली चान-चुन दूसरे दल के मज़दूर से डाह रखते थे। वे कहते, "पहले दल में बेवकूफ़ लोग रखे गये हैं।" दूसरे कहते, "दूसरे दल के सभी लोग होशियार हैं और चार नये आये मज़दूर उसमें खास कारणों से रखे गये हैं। उदाहरण के लिए चू जु-चेन की बीवी देखने में सुन्दर है, इसी कारण" इस तरह की बातें बड़ी तेज़ी से फैलती थीं। लोग जब भी कोई नई बात सुनते वे तुरन्त उसे सबमें फैला देते थे।

एक दिन अधिक गर्मी थी। हवा बिलकुल बन्द थी। आसमान बिलकुल नीला था। पहाड़ी पर के छोटे पेड़ निश्चल खड़े थे। चिड़ियाँ

की चहचहाहट भी बिलकुल बन्द थी। पेड़ों के साये में फर्न के पौधे बिलकुल शान्त खड़े थे। उस घोर निस्तब्धता में मशीन बनाने के औज़ारों की आवाज ही सिर्फ सुनायी पड़ती थी। इस भयंकर गरमी में भी पसीने से नहाते हुए सबको काम में पूरे उत्साह से व्यस्त देखकर चांग जुंग-सी चुपचाप ली चान-चुन के पास गया और उससे बोला—"चलो हम लोग ऐसे अवसर पर चलकर जरा ठण्डे हो लें। काम में तो काफ़ी लोग लगे ही हैं।" वे दोनों पहाड़ी पर चढ़ गए और पत्तियों के साये में जाकर बैठ गये। ली चान-चुन ने फ़र्न की एक पत्ती उठा ली और उसी पर दिल की भड़ास निकालता हुआ बोला—"अरे घने पेड़ की साया तलाश कर उसके नीचे जमकर तुम मजे में बैठी हो।"

"कोई बात नहीं, इसकी जिन्दगी कुछ ही दिनों की होती है। पतझड़ के आते ही यह भी मर जायगा," चांग ने कहा। ली को प्रसन्न करने के लिए उसने विषय बदला, "हमने युगों से मछली नहीं खायी हैं; चलो चल पर खाने के लिए कुछ मछलियाँ मार लायें।... आओ चलें।"

"काम से भागने के लिए अगली मीटिंग में हमारी आलोचना होगी, और बेवकूफ बनाए जायँगे तब।"

"कोई बात नहीं, जब तक हमारी आलोचना होगी तब तक मछलियाँ तो हमारे पेटों में पहुँच जायँगी," चांग जुंग-सी को अपनी बीवी से झिड़की खाने का डर था, इसलिए उसने ली चान-चुन को चलकर मछली फँसाने का चारा और एक टोपी और जाकेट साथ ले लेने को तैयार कर लिया। ली अच्छे और सीधे स्वभाव का आदमी था और जब कोई उस पर जोर डालता तो उसकी इच्छा के अनुसार ही काम करने को तैयार हो जाता था।

कारखाने से करीब एक मील पर झील थी। दोनों ही सूरज छिपने तक मछलियाँ मारते और घूमते रहे। उन्होंने बीस छोटी और दो बड़ी मछलियाँ और कुछ अन्य कई प्रकारों की मछलियाँ पकड़ीं। जब वे

लौटकर झोंपड़ियों में आये तो मछलियाँ देखकर सभी बड़े खुश हुए और मछलियों को साफ करने आदि में सहायता करने के लिए जमा हो गये।

चेन सु-तिंग परेशान था कि किस विषय पर क्लास लिया जाय, पर आज उसे याद आया कि एक दिन डायरेक्टर वांग ने उसके साथ जिन्दगी में दृष्टिकोण की समस्या पर बहस की थी। उसने सोचा कि यह विषय अच्छा रहेगा और उस शाम को इसी पर क्लास लेने का उसने निश्चय किया। जब सात का घण्टा बजा तो वह आफिस में गया जिसमें क्लासें हुआ करती थीं। जब वह वहाँ पहुँचा तो वहाँ कोई भी नहीं था। उसे आश्चर्य हो रहा था कि आज क्या बात हो गई है, तभी तुंग अपना मुँह पोंछता हुआ और दुख प्रकट करता हुआ वहाँ आ पहुँचा, "मुझे देर हो जाने के लिए बड़ा दुःख है।"

"तुम देर से आये पर तुम्हीं यहाँ सबसे पहले आये हो।" चूँकि एक तो आ गया था इसलिए चेन को खुशी थी।

तुंग चिन-कुइ ने महसूस किया कि चेन उसकी तारीफ कर रहा है, इसलिए उसने बेफिक्री से कहा, "हम लोग मछली खा रहे थे। मैं अधिक नहीं खा पाया था कि मैंने घण्टे की आवाज़ सुनी और चला आया।" फिर उसने सत्य पर नक्काशी करके कहा, "मैंने सभी से जल्दी आने को कहा, पर किसी ने नहीं सुना।"

इस समय तक छोटा सुंग, यांग फू-शान और ली सी-स्यान भी जल्दी से आये। चेन सु-लिंग जल्दी से झोंपड़ियों की ओर गया।

झोंपड़ियों में एक लम्बी-सी बैरिक थी जिसमें दोनों बगलों में लोगों के सोने के लिए मिट्टी के चबूतरे-से बने थे। उन पर लोगों के फटे-पुराने गूदड़ के बिस्तर पड़े हुए थे। इनमें बीस अविवाहित मज़दूर रहते थे। कुछ जिनके साथ परिवार थे इसके पीछे बने छोटे-छोटे झोंपड़ों में रहते थे। इनके अलावा तुंग और उसके आगे चेन सु-लिंग के परिवार

तथा तु पिंग-चेन और वांग वन्धुओं के लिए कुछ पश्चिमी ढंग के बने मकान थे।

जैसे ही चेन सु-तिंग ने वैरिक में कदम रखा तो उसे पसीने की सारी गंध निकलती महसूस हुई। मिट्टी के तेल का एक मद्धिम दिया जल रहा था और लोग-बाग तीन तश्तरियों पर झुके हुए मछलियाँ खा रहे थे। बिजलीघर के पास मिट्टी के तेल का चिराग़ अजीब-सा लग रहा था, लेकिन बिजली पैदा होने तक मजबूरी थी। किसी को चेन सु-तिंग के आने का पता न चला। उसने कहा, "अच्छा, मुझे मछली खाने के लिए क्यों नहीं पूछा तुम लोगों ने?"

बूढ़े सुन, बूढ़े कुआन और दूसरे बुजुर्गों ने खड़े होकर उसे भी आकर खाने की दावत दी। उसी समय लोगों ने वहाँ से छँटना भी शुरू कर दिया। यांग जु़ंग-सी वहीं जमा रहा, और खाता गया। वह बोला, "आज हमने जितनी मछलियाँ पकड़ीं वे सब छोटी थीं। हमें भय था कि आप तो ता-शेंग में बड़ी-बड़ी मछलियाँ खाते होंगे, इसलिए हम आपको दावत देने का साहस न कर सके।"

चेन सु-तिंग अपने मन में सोच रहा था—'अगर मैं भी मछली खाने में शामिल हो जाता हूँ तो वे मुझे लालची सभापति कहेंगे। और अगर मैं नहीं खाता तो वे समझेंगे कि मैं उन्हें नीची निगाह से देखता हूँ।' यांग जु़ंग-सी के कहने में कितना व्यंग था! एक क्षण के बाद उसने यांग जु़ंग-सी के जवाब में कहा, "मछली की अच्छाई उसके पकाने पर निर्भर करती है बड़ी होने पर नहीं। एक बड़ी कुत्ता-मछली उतनी अच्छी नहीं होती जितनी छोटी जिग-जैग मछली होती है। ता-शेंग से यहाँ की मछली अच्छी होगी क्योंकि यहाँ का पानी गहरा है और उसकी धार हल्की है इसलिए मछली जरूर मुलायम होगी।"

यह सुनकर ली चान-चुन ने, जो बहुत ही सरल प्रकृति का मनुष्य था, सोचा कि चेन बहुत ही दोस्त-स्वभाव का आदमी है। इसलिए उसने सफेद शराब का अपना अन्तिम हिस्सा उसे पेश कर दिया।

लेकिन चेन का कोई इरादा मछली खाने का न था। शराब को एक ही घूँट में पीकर उसने सबको याद दिलाई : "हमें अब क्लास में चलना चाहिए। काफी देर हो चुकी है।"

जब लोगों ने क्लास का नाम सुना तो सभी के दिल बैठ गए और किसी ने कोई जवाब नहीं दिया। सिर्फ कुछ लोगों ने यह जाहिर करने के लिए कि वे महसूस करते हैं कि उन्हें क्लास में जरूर चलना चाहिए, कहा, "ओह!" पर वास्तव में कोई हिला नहीं। ची-लियांग ने जो एक कोने में खड़ा था, लाओ वान-फा के कान में कहा, "जनवाद, मज़दूर नई दुनिया के मालिक हैं—क्लास-रूम का ब्लैक बोर्ड भी तो उससे उकता गया है!"

"आज मैं तुम लोगों के साथ 'जिन्दगी में दृष्टिकोण' के प्रश्न पर बातचीत करूँगा। जल्दी करो।"

"यह जिन्दगी में दृष्टिकोण क्या बला है? क्या यह वह है जिसे पानी के नल पर कसा जाता है?"

चेन सी-तिंग हँसी न रोक सका। वह लोगों को दृष्टिकोण के माने समझाता हुआ बाहर निकला : "दृष्टिकोण? यह इस बात पर निर्भर करता है कि तुम किस तरह के आदमी हो। मज़दूरों का मज़दूर दृष्टिकोण होता है, लालचियों का लालची दृष्टिकोण होता है; सचमुच इसके मानी बहुत उलझे हुए हैं।"

"जिन्दगी में मेरा दृष्टिकोण चावल और मछली खाना है," ली चान-शुन ने कहा।

"इस तरह तो चांग त्सुंग-मी का दृष्टिकोण अपनी बीवी से डरना है," किसी ने पीछे से मज़ाक किया।

हरएक हँस दिया।

"मुझे और कुछ नहीं चाहिए, सिर्फ करने के लिए काम और भरपेट खाने के लिए, यही मेरा दृष्टिकोण है।" नये मेंबर मज़दूर ली शेंग ने कहा। बूढ़े कुम्हार ने गर्दन हिलाकर उसकी बात का समर्थन किया।

क्लास-रूम में पहुँचने के बाद किसी ने एक शब्द भी न कहा, सिर्फ चेन सु-तिंग दृष्टिकोण पर बड़े उत्साह के साथ एक घण्टे से अधिक देर तक बोलता रहा। कुछ लोग तो सो भी गये, कुछ अँगड़ाइयाँ लेने लगे और कुछ नौजवान मुँह बनाने लगे। अन्त में चेन सु-तिंग ने पूछा जैसा वह हमेशा करता था: "समझ गए?" सभी ने अचकचाकर एक-सा जवाब दिया: "हाँ।" जवाब ऊँची आवाज़ में दिया गया था क्योंकि इस प्रश्न के पूछने के मानी थे कि अब व्याख्यान समाप्त हो गया और वे सोने जा सकते हैं।

चेन सु-तिंग महसूस कर रहा था कि उसने बड़ा अच्छा और खुलासा व्याख्यान दिया है। क्लास-रूम से निकलकर वह ल्यू एह-सुआन के घर की ओर गया, यह उसकी आदत बन गई थी। उसने ल्यू को पढ़ते पाया जैसा वह हर शाम को करता था। चेन सू-तिंग ने आगे बढ़कर उसकी किताब छीन ली और कहा, "तुम्हारी इच्छा इन्जीनियर बनने की मालूम होती है।"

ल्यू एह-सुआन ने अपने एक नक्शे की ओर, जो उसने अभी बनाया था, देखते हुए कहा, "और क्या तुम्हारी इच्छा कारखाने का डायरेक्टर बनने की नहीं है?"

"हश, मैं तो यूनियन का सभापति होने के योग्य भी नहीं हूँ। मैं उन्हें संयम में नहीं रख पाता। सोचो तो, वे क्लास में आने के बजाय बैठे-बैठे मछली खाते रहे और काम के समय मछली मारने चले गये! तुम मेरी जगह पर होते तो क्या करते? जब मैं उनके साथ जिन्दगी में दृष्टिकोण के सम्बन्ध में बातें करने लगा तो वे फिजूल की बकवास करने लगे; लेकिन जब मैं उन्हें क्लास-रूम में ले गया तो किसी ने एक शब्द भी मुँह से नहीं निकाला।" उसने ल्यू एह-सुआन को सारी घटना सुना दी।

ल्यू सारी बात सुन लेने के बाद भी उसमें दिलचस्पी न ले सका। उसने चेन सु-तिंग से अपनी किताब वापस लेने के लिए हाथ बढ़ाया;

लेकिन चेन ने किताब नहीं दी। ल्यू ने पेन्सिल उठा ली और जो नक्शा बना रहा था उसे पूरा करने लगा। उसने योंही रूखेपन से कहा, "ऐसे अवसरों पर वहाँ उनके कमरे में क्यों नहीं क्लास लेते?"

ल्यू से कोई सहानुभूति न पाकर चेन सु-लिंग और भी भड़क उठा और रूखेपन से बोला: "ठीक है, तुम समझते हो, टेकनिकल कारीगरी सारी समस्याओं को हल कर देगी। तुम समझते हो कि अगर तुम अपनी मशीनों से चिपके रहोगे तो मज़दूर काम में दिलचस्पी लेने लगेंगे और काम आगे बढ़ेगा।" उसने डायरेक्टर वांग से आठवीं रुट की बहुत-सी शक्तियाँ छीन ली थीं।

ल्यू एह-सुआन थोड़ा लज्जित अनुभव करने लगा था। चेन ने उसकी किताब वापस कर दी तो उसने हाथ में ले ली, तेल के चिराग़ पर दृष्टि डाली और बोला: "मैं किसी काम का नहीं हूँ; मुझे जो काम सौंपा गया था मैंने उसे पूरा नहीं किया। मेरे दिमाग़ में बिजली और पानी का नल पूरी तरह ठुसे हुए हैं। मैं और किसी चीज़ के बारे में नहीं सोच सकता, यहाँ तक कि खाना खाते और स्वप्न देखते समय भी।" उसने अपनी नाक और साफ करने का प्रयास किया: "तुम कहते हो, तुम उन्हें संयम में नहीं रख सके, पर मुझे विश्वास है कि वे तुमसे भय खाते हैं। नहीं! हो सकता है कि वे तुम्हें अफसर समझते हों; ज़रा सोचो तो, तुम्हारे साथ कितना नर्मी और अदब का बरताव करते हैं और ये जैसे ही तुम आते हो, बातें करना और हँसना बन्द कर देते हैं।" उसने अपना सिर झुका लिया, एक मिनट सोचा और साहस बटोरकर बोला: "जैसा मैं देखता और समझता हूँ, तुम पहले जैसे थे अब वैसे नहीं हो। तुम बदल गए हो।" यह कहने के बाद उसे तुरन्त लगा कि वह ज़रूरत से ज़्यादा कह गया और उसने सिर झुका लिया।

"तुम्हारा मतलब क्या है?" चेन सु-लिंग को अपने बारे में ल्यू की बात सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ, क्योंकि उसे विश्वास नहीं होता था कि वह बदल गया है। "क्या तुम और स्पष्ट भाषा में नहीं बोल सकते?"

"मैं ठीक-ठीक समझा नहीं सकता। पर तुम जब से यहाँ आये हो और यहाँ इस ज़िम्मेदार पद पर नियुक्त किये गए हो, दूसरे लोग सोचने लगे हैं कि तुम हम लोगों की तरह नहीं हो।" चूँकि उसने कह दिया था और उसे अब बदल भी नहीं सकता था, इसलिए उसने सोचा कि साफ-साफ कहना ही ठीक होगा।

"पर क्या तुम्हें भी यहाँ आकर ज़िम्मेदारी का पद नहीं सौंपा गया है? तुम्हारे प्रति उनका क्या रुख है?" चेन ने व्यथित होते हुए पूछा।

"हाँ, आया तो मैं भी हूँ और मुझे भी जिम्मेदारी का काम सौंपा गया है, लेकिन मैं किसी चीज का इन्चार्ज नहीं हूँ, मैं कुछ भी नहीं जानता। लोगों की मेरे प्रति कोई विशेष भावना नहीं है।...वे तुमसे जलते हैं और तुम्हें नहीं समझ पाते। वे अपने-आप कोई काम करने का प्रयास नहीं करना चाहते, इसलिए उन्हें खुश होना चाहिए कि कोई इसका जिम्मा ले ले, क्यों, क्या नहीं होना चाहिए?" ल्यू एह-सुआन ने अपनी जिन्दगी के पहले कभी इतनी लम्बी बात नहीं कही थी। उसे भय था कि कहीं चेन उसे गलत न समझ ले। वह वास्तव में दिल से चाहता था कि चेन का मजदूरों के साथ सम्बन्ध बढ़े, इसलिए उसने अपनी बात साफ करने का प्रयास किया, "हर कोई इसे महसूस करता है, क्यों, क्या वे महसूस नहीं करते? सिर्फ तुम्हीं हो जिस पर डायरेक्टर वांग विश्वास करते हैं। लोग अधिकारियों की परवाह नहीं करते, पर वे किसी के अंकुश में रहना नहीं चाहते। क्या तुम समझते हो कि वे नहीं सोच सकते, 'मेरी मंचूक् मनोवृत्ति है,' 'मैं पिछड़ा हुआ हूँ,' 'अगर मुझसे पूछा जाता तो उससे मुझे कोई सरोकार नहीं,' 'अगर काम अच्छा होता है तो श्रेय उन मजदूरों को जाता है जो काम में दिलचस्पी रखते हैं?' अगर हर कोई इस तरह सोचता है तो जब तुम अपनी बात कहते होगे तब वह जरूर सो जायगा।"

"तुम्हारा कहना है कि तुम भी समझते हो कि मैं बदल गया हूँ, लेकिन आखिर किस तरह?" चेन ने पूछा।

"तो साढ़े सात रूट से उनका मतलब मुझसे था," चेन सु-तिंग ने कहा। यह वाक्य ही उसके दिमाग में सबसे ज्यादा चक्कर काट रहा था।

"सचमुच ! खैर मारो गोली इन सबको। क्या वास्तव में मुझे, अगर मैं इन्जीनियर होना चाहता हूँ तो जापान पढ़ने जाने के वास्ते पैसे का प्रबन्ध करना होगा ?" ल्यू ऐह-सुआन भी इस वाक्य पर ही सोच रहा था क्योंकि यही सबसे ज्यादा उसके दिमाग में चक्कर काट रहा था।

"मैं तुमसे पूछता हूँ : क्या साढ़े सात रूट से उनका अभिप्राय यह है कि हम जैसे जो लोग विजय के बाद शामिल हुए हैं वे आठवीं रूट के मुकाबले के नहीं हैं।"

"कौन जानता है ?"

इधर जिस समय ये दोनों इस मजेदार बहस में व्यस्त थे उधर बैरिक में पान यू-शान और ली चान-चुन भी आपस में बहस कर रहे थे। पान यू-शान काम छोड़कर मछली मारने के लिए चले जाने पर ली चान-चुन की आलोचना कर रहा था। इस समय तक सभी लोग अपने-अपने बिस्तरों पर थे, तेल की कुप्पी बुझा दी गई थी और बाकी सभी खुर्राटे ले रहे थे।

"मेरे भाग्य में अच्छा उत्साही मजदूर होना नहीं है और न मैं ऐसा समझा ही जाता हूँ। मैं जानता हूँ कि मैं तो छठी रूट के स्तर पर भी नहीं हूँ।" ली चान-चुन का स्वभाव व्यर्थ में कुड़कुड़ाने का नहीं था, पर चूँकि उसकी आलोचना की जा रही थी इसलिए उसने वही हमेशा की आम शिकायतें सामने रक्खीं।

"दो साल पहले जब हमने यहाँ तोड़ी थी, उस समय क्या तुम खुश और उत्साहित नहीं थे ?"

"किसी ने भी मुझे तकलीफ नहीं पहुँचाई और मैं किसी से नाराज भी नहीं हूँ। जब हमने यहाँ तोड़ी थी और खेत बनाया था, तो हम

सभी एक समान खुश थे; वह सचमुच हमारी सच्ची एकता का समय था, कोई किसी पर हाकिमी नहीं करता था। कुछ लोग तो बड़े-बड़े सूअर के बाड़ों जैसे झोपड़ों में रहते हैं और कुछ पश्चिमी ढंग के मकानों में रहते हैं; कुछ लोग प्रधान हैं और कुछ कुली हैं। बिना पर लगे ही घोंसलों से निकलकर उड़ना चाहते हैं। सचमुच इससे मैं पागल हो उठता हूँ। कोई कुछ नहीं कहता, या मैं किसी योग्य नहीं हूँ, इससे यह मत सोचो कि सब-कुछ ठीक हो जाता है।..."

"हम यहाँ एक काम करने के लिए हैं। परवाह क्यों करते हो कि वह क्या करता है। उसके पर फड़फड़ाने से तुम्हारा तो कुछ बिगड़ता नहीं। वह हम सबसे ज्यादा समझता है, इसलिए वह हम सबसे तो अच्छा ही है।" पान यु-शान की अब भी इच्छा थी कि उसका गुस्सा शान्त करने में उसकी सहायता की जाय।

ली बड़बड़ाता ही रहा: "तुम बहुत जल्दी उनकी बातों में आ जाते हो—मज़दूर मालिक है, तो तुम भी तो एक मालिक हो।"

"हम अभी तक किसी तरह के मालिक नहीं हैं, हम तो अब भी मज़दूर हैं—मैं अच्छी तरह जानता हूँ। और चूँकि हम मज़दूर हैं तो हमें नियम से काम पर जाना चाहिए।"

उन लोगों की आवाज़ से बूढ़ा सुन जग गया। उसने अर्धनिद्रित अवस्था में भौंचक्के हो पूछा, "यह सब मालिक मज़दूर का क्या मामला लगा रक्खा है? तुम बच्चों को तो सो जाना चाहिए था।"

"बूढ़े सुन जल्दी आओ और हमारे बीच का फैसला करो। आज शाम को मैनेजर चेन ने इसकी क्लास में आलोचना की। मैं उसे नेक सलाह दे रहा था और यह मुझसे नाराज हो गया। तुम्हीं आकर फैसला करो।" पान यू-शान ने बूढ़े सुन से आने की प्रार्थना की।

"किसी ने उस सम्बन्ध में कोई कानून नहीं बनाया है तो फिर मछली पकड़कर कौन-सा कानून तोड़ा है? दूसरे लोग भी तो नदी में नहाने जाते हैं।"

वृढ़ा सुन उठकर बैठ गया। अपना पसीना पोंछता हुआ वह एक टीन के टुकड़े से उन दोनों को हवा करने लगा। पंखा करते समय टीन खड़खड़ाती थी और खर्राटों के साथ मिलकर अजीब सी आवाज कर रही थी। कुछ समय यों ही बीत गया तब वृढ़ा सुन बोला, "सभी बड़े पेड़ पहाड़ी पर चुपचाप उग आते हैं; मूँगा और मोती भी, वे समुद्र की तह में बिना एक शब्द किये आ जाते हैं। बहादुर नायकों और सच्चे इन्सानों को जिन्दगी के उतार चढ़ाव में उनकी धातु परखनी होती है—तुम दोनों किस बात के बारे में इतना बतंगड़ बना रहे हो?" जब वह ये शब्द कह रहा था तो पान महसूस कर रहा था कि इस झगड़े को जारी रखना व्यर्थ है। ली अब भी कुछ निश्चय नहीं कर पा रहा था: "ठीक.ठीक है। ओह, तुम्हारी तरह के वृढ़ो को जीवन भर न खत्म होने वाली कठिनाइयों की जरूरत है।"

ली चान-चुन की बात सुनकर वूढ़े सुन ने बड़े गम्भीर और कोमल स्वर में कहा, "मुझे तो कोई ग्रुग्ज नहीं है। जीवन-भर की कठिनाइयों के लिए जरा भी मलाल नहीं है, सिर्फ इतनी बात है कि हमें देर-सबेर इन मशीनों को ठीक करना है और जितनी जल्दी ठीक हों उतना ही अच्छा है। तुम कहते हो सिवाय मशीनों को देखने के हम,इन हाथों से और क्या कर सकते हैं। मछलियाँ पकड़ना भी बहुत अच्छा है लेकिन खाने के बाद ही उनका अन्त हो जाता है; और जबकि ये मशीने पीढ़ियों तक चल सकती हैं।"

"यह तो ठीक है, वे पीढ़ियों तक चलती हैं। टेकनीकल कारीगरी ठीक चीज है।"

बीच में किसी ने समर्थन करते हुए अपनी टाँग अड़ाई। वूढ़े सुन ने उसकी आवाज सुनकर पहचाना कि वह नया कारीगर वू सियाँग-ली था।

उन दो जवानों ने और कुछ नहीं कहा। वे जल्दी ही खुर्राटे भरने लगे।

"वूढ़े वू तो तुम भी अभी नहीं सोये हो," वूढ़े सुन ने अँधेरे में वूढ़े को सम्बोधित कर के कहा।

"वे दोनों बड़ी देर से झगड़ रहे थे, फिर कोई ठीक से कैसे सो सकता था? तुम हम सब से ज्यादा बुजुर्ग और अनुभवी हो क्या तुम समझ सकते हो कि वास्तव में कोई बुनियादी परिवर्तन हुआ है?" वू ने अदब से कहा और खिसक कर वूढ़े सुन के बगल में ही आ गया।

"वास्तव में परिवर्तन तो हुआ है। इन नौ जवानों को ही देखो।" अनुभवी वूढ़ा दूसरे की बात का असली मतलब न समझ सका था, इसलिए उसने गोल-सा उत्तर दे दिया।

"अब हम आज़ाद हैं और मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ कि मैं उससे क्या समझता हूँ। मैं आज़ादी के बारे में तुम्हें एक कहानी सुनाऊँ," वू ने अपने शब्द तौलते हुए कहा। "मैं एक बिजली के कारखाने में काम कर रहा था। विजय के बाद मेरी नौकरी छूट गई और मैं एक ट्रेनिंग क्लास में भर्ती हो गया। आठवी रूट सेना के एक शिक्षक ने हमसे कहा, 'मज़दूर साथियो, तुम लोग भाग्यवान हो। सोवियत लाल सेना ने उत्तर-पूर्व को आज़ाद कराने में हमारी सहायता की है। अब तुम लोग देश के मालिक हो, और तुम्हारा काम कम्युनिस्टों के नेतृत्व में एक नये समाज का निर्माण करना है।' उस समय तक मुझे कुछ ज्ञान नहीं था कि कम्युनिस्ट कैसे होते हैं, और उसके कहने पर मुझे गुस्सा आ गया। मैंने खड़े होकर कहा, 'हाँ, हम आज़ाद कर दिये गए हैं। जब जापानी यहाँ थे तो मानो वे हमें जंज़ीरों से जकड़कर रखते थे। अब तुम लोग आ गये हो और एक ही झटके में तुमने जंज़ीरों को तोड़ दिया है। हम आज़ाद हैं लेकिन हमारे पैरों में अब भी वे घाव मौजूद हैं जो तुमने जज़ीरें तोड़ते समय कर दिये हैं।' सभी सुन कर हँस दिये। शिक्षक सुनकर लाल पड़ गया, पर कुछ बोला नहीं। बस उसने मेरा नाम नोट कर लिया। तीन दिन बाद विभाग के प्रधान जी ने मुझे बुलाया। मैंने सोचा कि अब मुसीबत आई। मैंने

मुक्डन वापस जाने का सारा प्रबन्ध कर लिया था। श्रम विभाग के प्रधान जी ने मुझे देखा तो उनके पहले शब्द थे, 'तुम वास्तविक चीनी मज़दूर हो, मज़बूत आदमी।' तुम क्या सोचते हो कि मैंने यह सुन कर क्या महसूस किया होगा? उसके शब्द सूखे में वर्षा के समान थे। वे कहते गए, 'तुम क्यों सोचते हो कि तुम्हारा काम छूट गया है?' सवाल का जवाब देना मेरे लिए मुश्किल था। मैंने जो सोचा वह यह था 'तुम आठवीं रूट वाले कारीगरी के काम को नहीं समझते' पर मैं कह नहीं सका। मैं कुछ देर तक चुप बना रहा। तब उन्होंने मुझे समझाया कि ऐसा लड़ाई के कारण है, और चूँकि सभी मज़दूर पूरी तरह वर्ग चेतन नहीं थे तथा...और कई कारणों की वजह से ऐसा हुआ। उसने यह भी कहा कि अगर मज़दूर अपनी पूरी मेहनत से कारखाने को फिर से चालू करने के लिए काम करेंगे और च्यांग काई-शेक हराया जा सका तो हमारे अच्छे दिन आयेंगे। उसने बहुत-कुछ बताया जो मुझे सब तो याद नहीं रहा। अन्त में मैंने वहाँ से अपनी शिक्षा समाप्त की और उसके साथ शहर में काम करता रहा। एक महीने पहले उसका तबादला हार्बिन को हो गया और मैं हर कोशिश से उसके साथ जाना चाहता था, लेकिन उसने कहा, 'मैं जनता के लिए काम कर रहा हूँ और वही तुम भी, किसी व्यक्ति के लिए नहीं। जनता हर जगह है और हर जगह वह देख रही है कि क्या वास्तव में हम उसके लिए काम कर रहे हैं? अगर तुम यहाँ अपना काम अच्छी तरह करते हो तो तुम्हें जरूर सन्तोष होगा कि तुम जनता के लिए काम कर रहे हो, तभी हमारी तुम्हारी दोस्ती कारगर होगी।' उस समय मेरी आँखों में भी आँसू आ गये थे। इसलिए नहीं कि मुझे उसे छोड़ने का इतना दुःख हो रहा था, बल्कि इस आश्चर्य से कि सचमुच इस तरह के लोग भी संसार में हैं। मैंने व्यर्थ में अपना समय नहीं गुज़ारा—मैंने ऐसा एक कम्युनिस्ट देखा था। मैं जब भी मुझे अवसर मिलता है लोगों को यह कहानी सुनाता हूँ। बाद में एक कामरेड ने मुझसे कहा था कि

उसकी तरह के अनेकों कम्युनिस्ट हैं, अनेकों। वूढ़े सुन, इस तरह के कम्युनिस्टों के रहते क्या तुम नहीं सोचते कि स्थिति में परिवर्तन आयेगा ? अगर परिवर्तन नहीं आता तो वास्तव में परमात्मा बड़ा अच्छा है।"

'दुनिया बदलती है यह भी सत्य है; फिर भी...।' वूढ़े सुन ने अपने मन में कहा। वह महसूस करता था कि परिवर्तन हुआ है पर वह उतना आशावादी नहीं था जितना वू। उसके लिए किसी चीज़ पर विश्वास करना इतना आसान न था।

वह अपने इस पिछड़ेपन तथा शंकित दिल से धीरे-धीरे सोचने के लिए अपने को ही धिक्कारता था। वह दूसरों और वू के बराबर न होने के लिए अपने को ही घृणा करता था। फिर भी वह यह जानता था उसके गुण क्या हैं—एक बार विश्वास करने पर वह अपनी पूरी शक्ति से उसके लिए काम करता था।

वू सियांग-ती ने आगे कहा, "परिवर्तन हुआ है, बहुत बड़ा परिवर्तन हुआ है। स्थिति अच्छी-से-अच्छी होती जायगी—मुझे इसका पूरा भरोसा है। वूढ़े सुन, पहले मुझे किसी बात पर विश्वास नहीं होता था लेकिन विभाग के प्रधान ली के साथ कुछ महीने काम करने के बाद हर चीज़ के बारे में मेरी समझ साफ़ हो गई है।"

"तुम्हारा एक भले आदमी से पाला पड़ गया था," वूढ़े सुन ने कहा।

"मैं समझता हूँ कि डायरेक्टर वांग भी काफ़ी अच्छे आदमी हैं," वू ने कहा।

"वास्तव में वे अच्छे आदमी हैं, और इसी तरह सभी कम्युनिस्ट भी,—सबसे पहली बात तो यह है कि वे पैसा बनाने वाले नहीं हैं, और दूसरी बात यह है कि वे अधिकार के लिए ललचने वाले भी नहीं हैं। सिर्फ़ वह, वह ज़रा थोड़े से पक्षपाती हैं और उस पर उनकी साढ़े सात रुट की समझ को जोड़ दीजिये तो क्या कहने—मिसाल के तौर

र अगर डायरेक्टर वांग कहते हैं कि हमारी मनोवृत्ति मंचूक है तो लोग उसका बुरा नहीं मानेंगे। लेकिन अगर वह यह बात कहता है तो लोग-वाग चुपचाप उस पर हँसते हैं एक दूसरे से कहते हुए, 'और तुम, तुम्हारी क्या मनोवृत्ति है ?' वर्फ तोड़ने और तेल बचाने के काम का श्रेय डायरेक्टर वांग सभी मज़दूरों को देते हैं, लेकिन वह कहता है कि यह अकेले तुंग का श्रेय है और लोगों को उससे सबक़ लेने को कहता है। उससे ? क्या हम उससे सबक़ लेंगे ?

"जब मैं यांग बन्धुओं को काम से जी चुराते देखता हूँ तो मुझे गुस्सा आ जाता है, पर उसे कहूँ तो कैसे कहूँ और किससे कहूँ ! जब-तब मैंने उससे इसके बारे में संकेत भी किया पर उसने तो इतना कह दिया ! 'इसमें क्या किया जा सकता है। उनके पास कारीगरी की चतुरता है और हमारे पास नहीं है। क्या तुम उसे जाकर कर सकते हो ?' क्या मैं डायरेक्टर वांग से इस सम्बन्ध में कह सकता हूँ ?—मैं नहीं जानता कि इस सम्बन्ध में उनके क्या विचार हैं; और अगर वे बुरा मान जाते हैं तो बस फिर मेरा तो अन्त ही समझो।"

"थोड़े दिन और इन्तज़ार करो और जब अवसर आये तो कह देना। फिर भी किसी कीमत पर अब स्थिति बुरी नहीं हो सकेगी—यह असम्भव है।" इस तरह वू ने सुन को धैर्य बँधाया और उत्साहित किया।

"अगर तुम्हारे विभाग का प्रधान ली यहाँ आ जाता है तो बड़ा अच्छा हो। वह ऐसे आदमियों को मुँह नहीं लगायेंगे।" जब बूढ़े सुन ने यह कहा तो दोनों ही अँधेरे में हँस दिए और उसके बाद से वे दोनों गहरे दोस्त हो गए।

५

तीसरी बार जब डायरेक्टर वांग जादे गरडिल झील आये तो सदैव की ही तरह चेन सु-तिंग ने पिछले दिन की सारी घटनाओं को उन्हें ब्योरेवार सुना दिया; किन्तु कुछ अपनी राय का लेप भी उन पर चढ़ाते हुए ही सुनाया। सुन चुकने के बाद डायरेक्टर वांग ने भी अपनी हमेशा की आदत की ही तरह थोड़ी देर तक मौन रहकर गम्भीरता से उस पर विचार किया। वह लगभग आध घण्टे तक छोटे-से कमरे में गम्भीर विचारों में डूबे हुए इधर-उधर टहलते रहे। यह उनकी आदत थी—वह एक समस्या पर गम्भीरता से सोचते रहते और उस समय तक उस पर एक शब्द भी न बोलते जब तक समस्या का हल उनकी समझ में न आ जाता। एक बार समस्या के हल पर पहुँचने के बाद वह दत्तचित्त होकर बड़ी चतुराई से उसके अनुसार काम करते थे। उनके हर चक्कर के साथ ही चेन सू-तिंग का आशंका युक्त संताप बढ़ता जा रहा था कि वांग कहीं उसकी कटु आलोचना न करे। जब डायरेक्टर वांग ने उसे अपनी राय और हिदायतें दीं तब कहीं जाकर उसका दिल शान्त हुआ। और जब डायरेक्टर वांग वापस चले गये तब कहीं जाकर उसकी साँस-में-साँस आई और उसने फिर से महसूस किया कि मज़दूरों पर उसका अधिकार फिर से वापस आ गया है।

"कौन-कौन से सबसे अच्छे मज़दूर हैं और कौन-कौन से सबसे बुरे?" वांग ने पूछा।

"दूसरा दल कोई ज्यादा बुरा नहीं है लेकिन पहली टुकड़ी तो सबकी-सब बड़ी कामचोर है, विशेषकर चांग जुंग-सी, साओ वान-फा और माओ वी-लियांग," चेन सू-तिंग ने वांग की प्रतिक्रिया पर लक्ष्य करते हुए उत्सुकता से कहा।

"सबसे अच्छे मज़दूर हैं बूढ़ा सुन, वू-सियांग-ती, छोटा पान, छोटा हू और चू जू चेन," ल्यू एह सुआन ने कहा।

"आज शाम को हम इस समस्या पर विचार करेंगे और काम के कुछ नियम भी बनायेंगे। फिर सब मज़दूरों की राय जानने के लिए एक मीटिंग बुलाओ और उसके बाद सबसे अच्छी बात होगी कि इन्तज़ार करो कि मज़दूर स्वयं ही समझकर इन नियमों का पालन करने लगें। अगर कोई गड़बड़ पैदा करता है तब हम उसे देखेंगे। लेकिन बिना अनुशासन के जनवाद कैसे स्थापित कर सकते हो ? क्रान्तिकारी मज़दूर सारे चीन में फैल गए हैं। वे बिना अनुसाशन के कैसे काम चला पायेंगे ? इसके अलावा हमें इनाम और सज़ा का सिद्धान्त भी चलाना चाहिए। अच्छे मज़दूरों की तारीफ की जानी चाहिए और बुरे मज़दूरों को सुधारा जाना चाहिए।"

"और बातें तो मैंने नहीं कीं पर जैसा आप बता रहे हैं उसी तरह मैंने तारीफ और बुराई का सिद्धान्त तो लागू किया है," चेन सू-तिंग ने गर्व के साथ कहा।

"यह बहुत ठीक किया !" वांग पुंग मिंग ने आगे और कुछ पूछ-ताछ नहीं की और तुरन्त उस पर विश्वास कर लिया और उसी समय उसकी तारीफ भी कर दी।

ल्यू एह-सुआन अपने मन में हँसा और उसने कनखियों से सोचते हुए वांग पर एक नज़र डाली, "तुम तो बस कहते हो अच्छा, अच्छा, पर तुम यह देखने की परवाह नहीं करते कि उसने वास्तव में ठीक किया है या वह सोचता ही है कि उसने ठीक किया है।" बहरहाल उसे कुछ करने का साहस नहीं हुआ। उसे डर था कि चेन सु-तिंग

उस पर भी आक्षेप न कर बैठे, और एक लम्बे तर्क-वितर्कों में उलझा दे। उसकी राय में मज़दूर यूनियन और बाकी सब चीजें व्यर्थ थीं। वह तो सोचता था कि बस मशीनें चलने लगें और हर किसी को काम मिल जाय यही काफी होगा।

दूसरे दिन वांग युंग-मिंग ने महसूस किया कि वह स्थिति की अपने को और नज़दीक से जानकारी करावे। इसलिए उसने कुछ और लोगों से भी बातें कीं।

जिनसे बातें की उनमें सबसे पहला पान यू-शान था। जब उसे मालूम हुआ कि डायरेक्टर वांग उससे मिलना चाहते हैं उस समय वह मशीनघर में काम कर रहा था। वह अपने बुलाए जाने का कोई कारण न समझ सका। उसका दिल तेज़ी से धड़कने लगा और दो सौ अस्सी सीढ़ियां चढ़कर उनके पास जाते-जाते उसकी सांस बुरी तरह फूल गई। जब वांग ने वहाँ की स्थिति के सम्बन्ध में उसके विचार उससे पूछे तब कहीं जाकर उसे थोड़ी-सी शान्ति हुई। क्लास में जो-कुछ सुना था जल्दी से उसकी याद बटोर कर उसने कहा : "यहाँ का सारा काम बहुत अच्छा चल रहा है। हर कोई कड़ी मेहनत कर रहा है। मज़दूरों की एक यूनियन भी संगठित हो गई है। मज़दूर आपस में एकता स्थापित करने के इच्छुक हैं। हम सभी अपनी मंचूकू मनोवृत्ति को सुधार रहे हैं, और हम सभी जनवादी सिद्धान्तों को समझते हैं।"

वांग युंग-मिंग ने अनुभव किया कि उससे वह कुछ नहीं निकाल सकेगा, इसलिए उसने छोटे हू को बुलवाया। छोटे हू की उम्र अभी सिर्फ उन्नीस ही वर्ष की थी और वह और भी ज़्यादा झेंपू था। उसने सीधे-सीधे जवाब देने से कतराना चाहा। वह बोला, "मैं तो अभी यहाँ नया ही आया हूँ; मैं यहां के मामलों में कुछ नहीं जानता। वैसे तो सभी अच्छी तरह मिल-जुलकर काम करते दीखते हैं और सभी कहते हैं कि मंचूकू काल से यह सब नितान्त भिन्न है।" और अन्त में

उसने अपनी गर्दन झुकाकर विनती की कि वह ठीक-ठीक बात नहीं कर सकता, "कृपया जनाब, मेरी बजाय पुराने लोगों से पूछिए।"

उसके बाद चांग-जुंग-सी को बुलवाया। पर वह कहीं छिप गया और गया ही नहीं। जब चेन सु-तिंग को इस बात का पता लगा तो उसे बड़ा गुस्सा आया और स्वयं चांग को पकड़कर लाने के लिए गया और उससे बोला, "तुम्हें ऊपर चलना ही पड़ेगा। डायरेक्टर वांग हर कोई नहीं है।"

"तुम मुझे काम पर से अलग कर सकते हो पर मैं नहीं जाऊँगा," चांग जुंग-सी ने कहा। थोड़ी देर बाद उसने ऊपर निगाह उठाई। उसकी आँखों में भय व्याप्त था। उसने पूछा, "सभापति चेन, तुम अभी आये हो, मैंने अभी तक तो तुम्हें नाराज़ करने का कोई काम किया नहीं है; तुम मुझे पकड़ कर क्यों उनके सामने ले जाना चाहते हो? यह क्या इसलिए कि मुझे मछली मारने नहीं जाना चाहिए था—"

उसके अपनी पूरी बात खत्म करने से पहले ही चेन ज़ोर से हँस पड़ा, "तुमने गलत समझा है, बिलकुल गलत समझा है। डायरेक्टर वांग तुम्हारी गलतियाँ पकड़ने का कष्ट क्यों करेंगे? क्या तुमने नहीं देखा कि उन्होंने मिलने के लिए और लोगों को भी बुलवाया था? वह सिर्फ यहाँ की स्थिति को और भी साफ-साफ समझना चाहते हैं। तुम्हें डर किस बात का है? कोई बात नहीं कि तुम मछली मारने चले गये थे। क्या तुम वह कहावत नहीं जानते कि जो आदमी अपनी गलतियों को जानता है और उन्हें सुधारता है वह बुद्धिमान है? क्या मैं तुम्हें बार-बार नहीं बताता रहा हूँ कि कम्युनिस्ट बड़े विशाल हृदय और खुले दिमाग के होते हैं।"

लेकिन अब भी वह डरता हुआ और बुरा-सा मन बनाता हुआ पहाड़ी के ऊपर गया। नये वर्ष के अवसर पर अपने भाई के साथ चान चुन न जाकर यहीं रुके रहने के लिए वह अपने को धिक्कार रहा था।

"अब कोई चारा नहीं है।" इसलिए वह वांग युंग-मिंग के पास

गया। डायरेक्टर ने विशेष तौर पर उसके साथ नर्मी से बातें कीं। उन्होंने उससे पूछा कि वह कितने वर्षों से काम कर रहा है और उसने कहाँ-कहाँ काम किया है। वे साथ-साथ देश के लिए कारीगरों के सहयोग की तारीफ भी करते जाते थे। उन्होंने उसे मेहनत करने के लिए भी उत्साहित किया।

"कुछ लोगों का कहना है कि यूनियन का सभापति अयोग्य आदमी है और कमेटी के सदस्य कोई जिम्मेदारी नहीं लेते, इसलिए वे दूसरा चुनाव कराना चाहते हैं। तुम्हारी राय में किसे चुना जाना चाहिए?" विषय बदलते हुए वांग युंग-मिंग ने उससे पूछा।

"पहले चुनाव के नतीजों पर ही अमल करना ज्यादा अच्छा होगा," चांग जुंग-सी ने चिड़चिड़ाते हुए उत्तर दिया।

"क्यों?" डायरेक्टर वांग ने पूछा।

चांग जुंग-सी ने थोड़ी देर तक तो सोचा फिर और भी चिड़चिड़ाते हुए उत्तर दिया: "वे बाकी सब तो सिर्फ काम करना जानते हैं। और कोई नहीं जानता कि मज़दूरों की यूनियन को कैसे संगठित किया जाता है।" डायरेक्टर वांग ने और कुछ नहीं कहा। इस बातचीत के परिणाम में चांग-जुंग-सी ने महसूस किया कि वास्तव में वह किसी काम का नहीं है, और अपने को कोसता रहा, कहता हुआ, "लेकिन आठवीं रुट में भी तो कोई खास बात नहीं है—साधारण से अधिक तो वे भी और कुछ नहीं हैं।"

सात-आठ आदमियों से बात करने के बाद वांग युग-मिंग इस परिणाम पर पहुँचा कि इस तरह की बातों से कोई लाभ नहीं होगा। उसे यह अनुभव नहीं हुआ कि उसके बात करने में ही कोई कमी है। उसने तो बस यही सोचा कि मज़दूरों की मनोवृत्ति अभी भी पिछड़ी हुई है, साफ़-साफ़ बात करने में घबराते हैं। जब ल्यू एह-सुआन ने उसे सुझाया कि वह बूढ़े सुन से बातें करे तब उसका सारा उत्साह ठंडा पड़ चुका था।

बूढ़े सुन ने जब देखा कि डायरेक्टर वांग मज़दूरों को बुलाकर बातें कर रहे हैं तो उसने सोचा, 'वह जरूर मुझे भी बुलायेंगे। मैं उन्हें तीन बातें बताऊँगा। मैं कहूँगा—डायरेक्टर, तुम्हारे लिए सबसे अच्छी बात तो यह होगी कि तुम यहाँ आकर रहो। दूसरी बात मैं कहूँगा—डायरेक्टर वांग, हमारे लिए एक अच्छा शिक्षक तलाश करो, सभापति चेन बहुत व्यस्त रहते हैं। और अन्त में मैं उन्हें वू सियांग-ली द्वारा बताई गई विभाग के प्रधान ली की कहानी सुनाऊँगा।...' इस तरह सोचकर वह मन-ही-मन हँसा। वह इन्तज़ार करता रहा और इन्तज़ार करते-करते ही आधा दिन बीत गया पर उसके लिए बुलावा न आया। उसका दिल बैठने लगा। तब उसने पान यू-शान और छोटे हू से फिर पूछा जब उसे पता चला कि उन्होंने सिर्फ व्यर्थ के प्रश्नों पर ही बहस की है तो उसकी सारी आशा पर पानी फिर गया। जब कारख़ाने का काम बन्द होने को हुआ तब कहीं जाकर उसे बुलावा आया। उसका दिल फिर धड़कने लगा। ऐसी परिस्थिति में वह पहले कभी नहीं पड़ा था, इसलिए वह थोड़ा-सा घबरा उठा। जब वह वांग के पास पहुँचा तो उसने देखा कि डायरेक्टर अत्यन्त थके हुए प्रतीत हो रहे हैं। उनकी भवें चढ़ी हुई थीं और वे एक कापी देख रहे थे। वह काम से थके हुए दोनों हाथों को लटकाये हुए, जाकर अदब से सीधा खड़ा हो गया।

"मैंने सुना है कि जब यह बिजलीघर पहले-पहल बना था उस समय के तुम्हीं एक मज़दूर यहाँ हो।" वांग युंग-मिंग ने उसे बैठने का संकेत किया और उससे बातें करने लगा। बातें करते समय उसकी थकान गायब हो गई थी।

"बिजलीघर के बनने के समय का बूढ़ा तुंग भी यहाँ है। वह यहीं का रहने वाला है और उसकी जानकारी भी ज्यादा है।" बूढ़े सुन ने अपनी आदत के अनुसार बहुत विनय के स्वर में धीरे-धीरे कहा।

वांग युंग-मिंग ने सोचा, 'यह बूढ़ा आदमी उन जवानों से ज्याद अनुभवी और दुनियादारी में बुद्धिमान है।' उसने उससे जापानियों के

शासन में मज़दूरों की दशा के बारे में प्रश्न किये। जब बर्फ़ तोड़ने और तेल काँछने का जिक्र आया तो उसने बिना किसी हिचक के सारा श्रेय पूरे समूह को दिया।

"वह वास्तव में समस्त मज़दूरों की स्वतः स्फूर्ति का परिणाम था, मुझ पर विश्वास कीजिए। उस भयंकर सर्दी में वह कोई आसान काम न था। दो या तीन उस काम को कैसे कर सकते थे!"

वांग ने अनुभव किया कि बहरहाल यह एक ईमानदार और स्पष्ट बात करने वाला बूढ़ा मिला तो। उसने विषय बदला : "क्या तुम अपनी टुकड़ी के काम में कठिनाई का अनुभव करते हो?"

"हमारी टुकड़ी ने अभी कोई ज्यादा काम तो किया नहीं है, इसलिए कठिनाई की बात करना कठिन है।"

"मैंने सुना है कि मज़दूरों के काम करने का उत्साह कुछ विशेष अच्छा नहीं है।"

"वह धीरे-धीरे बढ़ेगा। जब कामचोर देखेंगे कि उन्हें कोई लाभ नहीं है, तो वे अपनी आदतें बदलेंगे।"

वांग यु ंग-मिंग को सुनकर खुशी हुई और उसने अपने मन में सोचा 'ठीक मेरी बीवी की तरह ही—प्रतीक्षा करो और देखो—स्कूल का यह भी एक दार्शनिक है।' उसने अपनी मुस्कराहट दबाई और बोला : "मान लो अगर उन्होंने अपनी आदतें न बदलीं तब?" उसने बूढ़े को उलझाने के विचार से ही यह प्रश्न पूछा।

बूढ़े सुन ने सोचा कि यही अवसर है अपनी बात कहने का। उसे मज़दूर यूनियन की असली स्थिति साफ़-साफ़ कह देनी चाहिए। जितने विचार उसने सोच रक्खे थे सभी आकर उसकी ज़बान पर जमा होगये। पुराने समाज में वह जिन्दगी-भर बड़ा दब-पिसकर रहा था, इससे उसका साहस मारा गया था। इसलिए विचार ज़बान पर आकर भी पीछे लौट गये। 'अगर मैं अब भी सारी बातें नहीं कहता तो यह मज़दूरों के साथ गद्दारी होगी,' उसके मन में अन्तर्द्वन्द्व चल रहा था। उसने

डायरेक्टर वांग के चेहरे पर एक नज़र डाली तो उस पर उसने अनिच्छा का भाव देखा, इससे उसकी भावना को और भी ठेस लगी। वह कभी मुझ पर विश्वास नहीं करेगा। उसने अपना विचार बदल दिया और बस इतना ही उसने कहा, "सुस्त आदमियों को सुस्त होने का कारण है, और बदमाश लोगों को बदमाश होने का कारण है—हर कोई जो-कुछ करता है उसके लिए उसके पास कारण है। अगर आप उनके सुस्त होने का कारण मिटा देते हैं तो वे सुस्त नहीं रहेंगे। सच बात तो यह है कि कारीगर सुस्त हो ही नहीं सकता क्योंकि मशीनें ही उसे ऐसा नहीं होने देंगी। हम मज़दूर बहुत साफ़ दिल के होते हैं, हम अपनी बात पर टिकते हैं, सिर्फ हम अन्याय नहीं सहन कर सकते। अगर मजदूरों के साथ आप न्याय और अच्छा बरताव करते हैं और फिर उनसे अपने प्राणों की बाजी लगाने को भी कहते हैं तो वे तैयार हो जायँगे। वे सिर्फ अन्याय को ही बर्दाश्त नहीं कर सकते।"

डायरेक्टर वांग ने अनुभव किया कि उसकी बातों में काफ़ी तत्व है लेकिन उसने सोचा: 'इस तरह एक बूढ़े आदमी से बात करने से कोई लाभ नहीं है जो इस तरह अपने विचारों से ही बँधा हुआ है, मैंने कह दिया है कि मैं यूनियन की जिम्मेदारी चेन-सू-तिंग पर छोड़ दूँगा, इसलिए यही अच्छा होगा कि मैं उसे ही सारी जिम्मेदारी संभालने दूँ। वह खुद भी एक मज़दूर था और मुझसे ज्यादा वह उनके कहीं ज्यादा नज़दीक भी होगा। क्या करना चाहिए वह अच्छी तरह समझता होगा। मैं ही क्यों सारी ज़िम्मेदारी अपने हाथों में रक्खूँ। इस परिणाम पर पहुँचकर उसने सोचना बन्द कर दिया और बूढ़े सुन की ओर उन्मुख होकर उसकी पीठ पर मीठी थपकी देकर बोला, "अगर कभी तुम्हें कुछ कहना हो तो जाकर सभापति चेन से कह दिया करो। मज़दूरों को अपने दिल की बात साफ़-साफ़ कहने में डरना नहीं चाहिए, इसलिए अगर कभी कुछ कहना है तो उसके पास बेखटके जाकर कहो।"

इससे बूढ़े सुन को सन्तोष नहीं हुआ। वह बोला, "हम जो-कुछ भी सभापति चेन से कहते हैं वह सब पूरा नहीं होता। उनसे कहने से फिर क्या फ़ायदा?" तब उसे वूसियांग-ली के शब्द याद आये 'जब समय आये, सब-कुछ कह देना'—पर अभी जल्दी है। उसको कोई खुशी न थी। एक क्षण को फिर उसके दिल में द्वन्द्व हुआ, 'तुम्हारे पुराने उत्साह को क्या हो गया है? तुम जल्दी ही बिलकुल गूँगे हो जाओगे!' दूसरे ही क्षण उसे डायरेक्टर वांग के प्रति गुस्सा आया। उसने फिर सोचा कि उसने भरपूर बात नहीं कही। अन्तर्द्वन्द्व से उसकी हालत अजीब-सी हो गई थी। न तो उसे सोना ही अच्छा लगा और न खाना ही। आधी रात को उसकी नींद उचट गई और करवट बदलकर उसने एक गहरी साँस भरी और पड़ा रहा।

काम के नियम लागू हो जाने के बाद वास्तव में फिर कोई मछली मारने या तैरने जाने का साहस न कर सका। काम के समय हँसी-मज़ाक भी अब कम होता था। लेकिन अपनी झोंपड़ियों में वापस आने पर उन पर फिर कोई सयंम और अनुशासन न रह जाता था।

पहली बार जब डायरेक्टर वांग आये तो तुंग विन-कुइ ने गाँव में जल्दी से आकर अपने भाई को कुछ बड़ी मछली पकड़ लाने के लिए भेजा। बाद में उसका भाई समझ गया कि किस चीज़ की ज़रूरत है और फिर आगे से जैसे ही वह डायरेक्टर वांग की मोटर आते देखता वैसे ही सारा काम छोड़कर मछली मारने दौड़ जाता। छोटी-से-छोटी बात पर तुंग डायरेक्टर वांग से सलाह लेने जाता। हर बार डायरेक्टर वांग या तो उसे डाँट देते या ठंडा-सा जवाब दे देते, "जाओ और सभापति चेन से सलाह लो।" वह सोचता—सचमुच स्थिति बदल गई है—क्योंकि उसके चापलूसी के तरीके नाकामयाब हो रहे थे। थोड़े अरसे के बाद उसने अपनी नीति बदल दी—वह चेन सू-लिंग के पास तरकारी और मछलियाँ भेजकर उससे अच्छा रिश्ता कायम करने की कोशिश करने लगा। लेकिन पहली बार में ही उसे करारी डाँट खानी

खुदा जानता है कि फिर कब सब चीजें व्यवस्थित होंगी, जैसी वे पुराने समय में थीं।"

"क्या तुम्हें डर है कि वे यहाँ कई वर्ष तक रहेंगे ?" ली सी-स्यान ने तेज़ स्वर में पूछा मानो वह एकाएक नाराज हो गया हो।

"लेकिन तुम यह भी तो गारण्टी नहीं कर सकते कि वे कब अपना बिस्तर गोल करेंगे," छोटे सुंग ने कहा।

"प्रतीक्षा करो और देखो। जब सुनगिरी नदी जम जायगी तब वे खरगोशों की तरह भागेंगे।" ली सी-स्यान का चेहरा भूरा पड़ गया था। तुंग ने सोचा कि उसके भानजे के पास यह बात कहने का अवश्य कोई कारण होगा। उसने कहा : " मुझे आश्चर्य है अगर मा यू-शान फिर यहाँ आ सके ?"

"यह मा यू-शान कौन है ?" ली ने कहा।

"मा यू-शान किस ओर है ? उस समय जब उसने हम पर हमला किया था तो मैंने उसे अपना असली रंग दिखाया था लेकिन व्यर्थ रहा। क्या वह गुप्त संगठन में शामिल नहीं है।" तुंग बड़ी उत्सुकता से प्रतीक्षा करता रहा कि वह उसका क्या उत्तर देता है। वह एकाएक बड़ा दुखी हो गया कि बूढ़ा होते हुए भी उसने पहाड़ियों में अपनी जिन्दगी योंही गुजार दी और राष्ट्र की महत्त्वपूर्ण परिस्थितियों को बिलकुल ही नहीं समझता।

"प्रतीक्षा करो और देखो कौन जीतता है। अब ज्यादा देर नहीं है। मैं मा यू-शान के बारे में तो ज्यादा नहीं जानता, लेकिन मैं समझता हूँ वह राष्ट्रीय सरकार का आदमी होगा जिसने कुछ लुटेरों को बटोर रक्खा है। मैं एक मित्र के घर पर उसके सहायक से मिला था। मा में वास्तव में कोई विशेषता नहीं है। उसके पास लू ताओ और जादे गरडिल झील के सिवाय कोई शक्ति नहीं हैं, उससे भी ज्यादा शक्तिशाली और बहुत-से हैं।"

"बहुत-से ?" नाटा, मोटा तुंग चापलूसी और विद्वेष के भाव से

आगे को झुका। उसके चेहरे का मांस थुलथुला रहा था।

पहली बार उसने अनुभव किया कि उसके भानजे में कोई आश्चर्य-जनक बात है। हालाँकि वह उस पर विश्वास नहीं कर पा रहा था फिर भी वह उद्विग्न और उत्सुक हो गया, "तुम कितने खास-खास से मिले हो? पर तुम तो अभी जवान हो। तुम्हें मनमाने तरीके पर किसी का अनुगामी नहीं हो जाना चाहिए। तुम्हें शान्ति से रहना चाहिए और किसी की ओर नहीं होना चाहिए। अगर तुम पर कुछ मुसीबत आ गई तो मेरी बहन की तो मौत ही हो जायगी। और अगर मुसीबत खड़ी ही करनी है तो दूसरे लोगों को करने दो, फिर कोई तुम पर आँख नहीं उठा सकेगा।"

ली सो-स्यान कुमिन्तांग का जासूस था। वह यहाँ छिपकर रहता था और गड़बड़ करने का अवसर तलाश करने की घात में था। साधारणतः वह अपने को, छोटे सुंग को और दूसरे प्रतिक्रियावादी लोगों को तरह-तरह की अफवाहें और पस्तहिम्मती फैलाने के लिए इस्तेमाल करता था। अपने मामा को अब इतना घबराया हुआ देखकर वह भोला-भाला बन गया और मुस्कराते हुए उसे सान्त्वना दी, "तुम्हें घबराने की जरूरत नहीं है। मैं तो बहुत शान्ति से ही रहता हूँ। तुम अपना काम देखो और मैं अपना। आखिरकार मैं कोई मूर्ख तो हूँ नहीं। क्या तुम समझते हो कि मैं कठिनाइयाँ मोल लेता फिरता हूँ?"

"ठीक है, ठीक है।" तुंग ने कहा, "मेरा मतलब तो यही था। इससे कोई सरोकार नहीं कि हम किसके लिए काम करते हैं। हमें जो भी सरकार हो उससे अच्छे सम्बन्ध स्थापित करना चाहिए क्योंकि तभी वे हम पर विश्वास करेंगे और हमारी नौकरी भी सुरक्षित रहेगी।"

उसके बाद से तुंग ने अपने भानजे की ओर कभी विशेष ध्यान नहीं दिया। किन्तु उसका बरताव वैसा ही रहा। वह अपने मामा से मज़ाक भी करता और इधर-उधर की बातों के बारे में पूछताछ भी करता। बस जब बातचीत राजनीति पर चली जाती तो वह भोला बन जाता। इसलिए

उस शाम की बातचीत तुंग कुछ अरसे के बाद भूल गया।

ली सी-स्यान ने तुंग से भी अधिक अच्छा सम्बन्ध चेन सू-तिंग से स्थापित कर लिया। यह देखकर तुंग को बड़ा आश्चर्य हुआ। चेन-सु-तिंग ने उसे पढ़ने के लिए कई किताबें दी थीं। तुंग ने सोचा, 'वास्तव में जो लोग पढ़ना-लिखना जानते हैं वे हम सबसे ज्यादा लाभ में रहते हैं।' उसने यह सोचकर अपने को तसल्ली दी कि आखिर वह भी है तो उसका ही भानजा।

ली सी-स्यान हफ्ते में तीन दिन मज़दूरों की संस्कृति पर क्लास लेने लगा। इससे चेन सू-तिंग का भार हलका हो गया था। ली सी-स्यान क्लास में अत्यन्त शुद्ध हृदय का बार कर जाता था। वह अशिक्षितों को पढ़ना सिखाता, जो पढ़ना जानते थे उन्हें वाक्य और लेख लिखना सिखाता और हिसाब पढ़ाता। वह काम की रिपोर्ट देने के आठवीं रुट सेना के नियम को जानता था, इसलिए हर तीसरे दिन वह अपने काम की रिपोर्ट चेन सू-तिंग को देता रहता था। शुरू में वह सिर्फ पढ़ाई के सम्बन्ध में ही रिपोर्ट देता था, लेकिन बाद में वह कभी चेन को मज़दूरों की गपशप और आलोचन भी, जिन्हें वह सुन लेता था, बताने लगा। ऊपर से अपनी ओर से भी उसमें कुछ जोड़ तोड़कर दिया करता था। एक महीने के भीतर ही जादे गरडिल झील की स्थिति उबाल पर थी। "श्रीमती ल्यू के छोटे लिंग ने श्रीमती चांग के चूज़ों को दबा दिया और श्रीमती चांग चुपचाप सभापति चेन से उसकी शिकायत करने गईं," "जब जापानी पीछे हट रहे थे तो ल्यू फू ने दो पीपे चुरा लिये थे, चूजू-चेन ने तार के पाँच बड़े लच्छे चुरा लिये थे और ली चान-चुन ने एक राइफ़िल चुरा ली थी।" "बूढ़ा सुन गुप्त संगठन का नेता है और नौजवानों को अपना चेला मूड़ने के लिए उन्हें रिश्वत देता है, लेकिन नू सियांग-नी उससे जलता है और भीतर-ही-भीतर उसके रास्ते में रुकावटें डालता है।" "डायरेक्टर वांग की राय सभापति चेन के बारे में बड़ी ऊँची है, पर ल्यू एह-सुआन के बारे में

बुरी," सहायक डायरेक्टर लु सभापति चेन के नीचे ही काम कर सकता है, लेकिन उसे बोलने की आज्ञा नहीं है," और "यह सच है कि चेन यहाँ का सर्वशक्तिमान अधिकारी है।" इस तरह की असंख्यों अफ़वाहें सरपत के बीज की तरह मज़दूरों में फैल रही थीं। जैसे ही कोई अफ़वाह फैलती सभापति चेन क्लास में उसके लिए सभी मज़दूरों को कोसता मानो हर बार अफ़वाहों के फैलने के लिए वे ही जिम्मेदार थे। परिणामतः जब कोई-कोई बात सुनता तो वह उसे दूसरे से कहने का साहस न करता था।

कुछ लोगों को बुरा लगा, कुछ लोग भौंचक्के हो गये और कुछ ने वास्तव में बुरा महसूस किया जिसके कारण दूसरों से उनका रिश्ता बिगड़ गया। बहरहाल कारखाने का काम पहले जैसा ही चलता रहा; क्योंकि हर कोई चाहता था कि कारखाना जल्दी-से-जल्दी चालू हो जाय।

इतने वर्षों के शोषण के बाद उत्तर-पूर्व के मज़दूर अपने को बचाने में बड़े पक्के हो गये थे। वे जानते थे कि ये अफ़वाहें जान-बूझकर फैलाई गई होंगी और उन्होंने उनसे बचने के लिए पत्थर-जैसा मौन साध लिया। जापानी-निर्दय-शासन का यह परिणाम था कि अफ़वाहों की तह में घुसकर उनकी खोज करने और अपने को नुकसान पहुँचाने वाली चीज़ के विरुद्ध संघर्ष करने का उन्होंने साहस खो दिया था।

अजीब बात तो यह थी कि आपस की मौन स्वीकृति से ही जब कभी वे ली सी-स्यान गुट के किसी आदमी से मिलते तो अपनी जबान बिलकुल बन्द रखते थे।

एक बार जब डायरेक्टर वांग जादे गरडिल झील के काम की देख-भाल करने आये तो उन्होंने चेन सू-तिंग से पूछा, "यह ली ली-स्यान किस तरह का आदमी है? क्या तुम समझते हो कि उसे पढ़ाने के लिए एक विषय सौंपना बुद्धिमानी है?"

"वह तो सिर्फ संस्कृति पर क्लास लेता है और उससे मैं नहीं

समझता कि कुछ नुकसान है। राजनीति का क्लास तो मैं ही लेता हूँ," पूरे विश्वास के साथ चेन ने कहा।

"ये पहले के पिट्ठू अफ़सर किसी तरह भी उतने सीधे नहीं हैं जितने वे दीखते हैं। मैं सोचता हूँ कि उसका परिवार अब भी जागीरदार है, उसकी मंचूकू मनोवृत्ति काफ़ी बुरी है।" डायरेक्टर वांग अपना सिर हिलाते रहे।

सुनते हैं कि उसके परिवार के पास जरूर थोड़ी-सी जागीर थी और वे काफी खाते-पीते भी हैं, लेकिन उसने शिक्षा पाई है और एक काम सीखा है और कड़े-से-कड़ा काम कर सकता है; वह दरअसल उत्कृष्ट आदमी है। इधर हाल में उसने बड़ी तेज़ी से प्रगति की है; फिर भी अगर भविष्य में हमें कोई ज्यादा योग्य आदमी मिलेगा तो हम उसे बदल देंगे।" चेन सू-तिंग जब वह आया ही था तब से अब ज्यादा साहसी हो गया था, क्योंकि वह समझता था कि उसने काम को चलाने और उसकी देखभाल करने में अपनी योग्यता प्रदर्शित की है।

"वह वास्तव में उतना सीधा तो नहीं है जितना वह दीखता है।" ल्यू एह-सुआन ने कहा, "एक दिन वह अकेला दफ्तर के पीछे के उन पेड़ों के नीचे चक्कर काट रहा था। वह बड़ा व्यग्र और उद्विग्न दीख पड़ता था मानो उसके दिमाग में कुछ चक्कर काट रहा हो। मैंने उसे आवाज़ दी, तुरन्त ही वह मुस्करा दिया। उसने इतनी जल्दी अपने में परिवर्तन किया कि ताज्जुब था। चेहरे पर से सारी उद्विग्नता गायब हो गई।" इधर ल्यू चेन सू-तिंग से मामलों की रिपोर्ट करते-करते थक गया था, इसलिए नहीं कि अफवाहों से उसे भी चोट लगी थी, बल्कि इसलिए कि वह समझने लगा था कि चेन इतना पक्षपाती है कि वह कभी भी दूसरों की बात पर विश्वास नहीं करता, बस कह देता है," तुम इसे बहुत ही साधारण तरीके से देखते हो" या "तुम जाओ और अपने सिद्धान्त पर काम करो।" ल्यू की सम्मति में ली सी-स्यान तुंग से भी ज्यादा बुरा आदमी था। हालांकि एक-दो बार वह यह बात चेन

से कह चुका था, पर उसने उस पर ध्यान ही न दिया था। अब चूँकि डायरेक्टर वांग मौजूद थे इसलिए उसने फिर से कहा था। तुरन्त ही चेन सू-तिंग उसकी ओर घूमा और बोला: "अगर मान लें कि वह बदमाश ही है तो वह अपनी उद्विग्नता को सड़क पर नहीं दिखाता फिरेगा। वह ऐसी अवस्था में लोगों के सामने क्यों आयेगा? जिन लोगों ने शिक्षा पाई है अक्सर उनकी ऐसी अजीब-सी आदतें होती हैं। जैसे इधर-उधर घूमना या चाँद की ओर देखना। पर जहाँ तक उसके स्वभाव का सम्बन्ध है वह सचमुच सुसंस्कृत है। मातहतों और अफसरों, दोनों से बातें वह बड़ी नर्मी और संस्कृत ढंग से कहता है। मैंने सुना है कि मज़दूर उसका आदर करते हैं।"

"तुम किसी को सिर्फ उसके बाहरी दिखावे से नहीं जाँच सकते," डायरेक्टर वांग ने चेन सू-तिंग से कहा, "उनसे होशियार रहो जिनकी हँसी में खंजर छिपा हो।" फिर ल्यू की ओर मुखातिब होकर बोला, "ल्यू एह-सुआन तुम्हें आदमियों की अच्छी पहचान है, लेकिन तुम जिम्मेदारी लेना पसन्द नहीं करते—यह स्वार्थीपन है। हम अब भी तुम्हें अपनी मशीन पर पूरा ध्यान देने का अवसर देंगे और तुम्हें एक अच्छा कारीगर बनायेंगे। लेकिन तुम्हें लगातार इन्हें अपने विचार बताते रहना चाहिए। तुम दोनों को आपस में काफी गहरा सहयोग करना चाहिए।"

जब डायरेक्टर वांग लू-सिंग नदी वापस गए तो वहाँ उन्होंने जादे गरडिल झील की समस्या पर मैनेजर ली और लु ल्यू-ई से बातें कीं। वे लोग प्रायः काफी रात गये तक, जब सब कोई सो गये होते, बातें करते रहते थे। ऐसा इसलिए होता था क्योंकि वे दिन में बहुत व्यस्त रहते थे और हर तरह के आदमी मिलने-जुलने आते रहते थे। इसलिए उन्हें बातें करने का अवकाश ही न मिलता था।

"जादे गरडिल झील की समस्या आसान नहीं है।" लु ल्यू-ई को

ऊँघता देखकर उसे एक हल्की-सी कुहनी का मीठा धक्का मारते हुए वांग ने कहा।

अपनी कुर्सी पर पसरकर ही मोटी ल्यू सो गई थी। उसके गोल सफेद चेहरे पर लम्बे काले डोरे उसकी-बन्द आँखों पर दो गहरे काले महराब बना रहे थे; उसकी छोटी-सी नाक साँस से फूल रही थी और उसके मुँह पर लड़कों की-सी उदासी व्याप्त थी। वह यांग्टिसी नदी के दक्षिण की शरीफ और खूबसूरत औरतों में औरों की अपेक्षा अधिक साहसी थी। वांग युंग-सिंग ने जब उसे कुहनी से तीन बार धक्का दिया, तब तो वह कहीं जाकर जगी।

"कौन सी समस्याएं उठ खड़ी हुई हैं?" सिगरेट का धुआँ उड़ाते हुए मैनेजर ली ने पूछा। "मुश्किल। 'पर्वत की तरह ऊँची, बादशाह की तरह पहुँच से बाहर'; सचमुच 'हालाँकि कोड़ा तो लम्बा है पर उन तक पहुँच नहीं सकता?'" उसने उद्धरणों का जाल खड़ा करना चाहा। यह उसकी आदत थी—खरीद करने में या पैसा खर्च करने में वह बड़ा कंजूस था, लेकिन राजनीति और संगठन के प्रश्नों में उसे ज़रा भी दिलचस्पी न थी और अगर वह बहस में हिस्सा लेता भी था तो उसमें कोई उचित योग नहीं देता था।

"कोई गम्भीर समस्याओं का प्रश्न नहीं है। सिर्फ आफ़वाहें फैली हुई हैं और गड़बड़ पैदा करने की कोशिशें जारी हैं।"

"क्या—क्या वहाँ सभी मज़दूर नहीं हैं?" लु ल्यू-ई ने पूछा।

"किसी योग्य कार्यकर्ता की कमी के कारण उस स्थान को सँभालना वास्तव में कठिन हो रहा है। मैं भी वहाँ जाकर पूरी तरह रह नहीं सकता।"

"मुझे जाने दो," ल्यू-ई ने तुरन्त कहा।

"यह तो बड़ा ही अच्छा हो अगर तुम जाओ, सिर्फ..."

"सिर्फ मैं अपना दिमाग़ नहीं लगाती? मेरी वर्ग-चेतना तीव्र नहीं है?" उसने गम्भीरता से पूछा।

"मूर्खता की बातें।" उसने यह दिखाने के लिए कि वह हमेशा उसके बारे में अच्छी राय रखता है, विरोध किया। "वह जगह लुटेरों के छिपने का अड्डा रही है। हालाँकि अब स्थिति अच्छी है, फिर भी वे समूल नष्ट नहीं हुए हैं, इसलिए वह जगह औरत कामरेडों के लिए अच्छी नहीं है।"

"जब काम अटका हो तो ऐसे समय पर तुम ऐसी बातें कैसे सोच सकते हो? खैर, वहाँ हथियारबन्द पहरेदार तो होंगे ही।" थोड़ी देर रुककर उसने फिर कहा, "मैं अपने लिए अलग से कहीं काम चाहती हूँ, यह परखने के लिए कि मेरे अन्दर वास्तव में योग्यता है या नहीं।" उसने कई बार यह बात कही थी कि वह अपने पति से अलग कहीं कोई स्वतन्त्र काम चाहती है। अब वह फिर गम्भीरता से उसका प्रस्ताव रख रही थी।

वह उससे तर्क नहीं करना चाहता था इसलिए उसने संक्षिप्त-सा उत्तर दिया: "यहाँ भी तो काम में तुम्हारी जरूरत है।" और फिर कहा, "चेन सू-तिंग वास्तव में बुरा नहीं है; वह राजनीति के सम्बन्ध में तो विश्वसनीय है, सिर्फ उसे अनुभव नहीं है।"

"तुम्हारे कहने के अनुसार वहाँ सिर्फ चेन सू-तिंग ही विश्वसनीय है और दूसरा कोई विश्वसनीय नहीं है।" उसकी कमज़ोर नस पर उँगली रखते हुए उसने कहा।

"बात की खाल मत निकालो। उसे परखा जा चुका है। मैंने सुना है वू स्यांग-ती नया पार्टी मेम्बर है पर उसके बारे में अभी मुझे कुछ नहीं मालूम है।"

"हालाँकि वू स्यांग-ती से मेरा कोई विशेष काम नहीं पड़ा है, फिर भी मैं समझता हूँ कि वह भरोसे का ठोस और तेज़ आदमी है। तुम्हारी क्या राय है?" ली ने पूछा।

"तुम चेन सू-तिंग को काम करके मत आँको," डायरेक्टर वांग ने उसका पक्ष लेते हुए कहा: "वह योग्य और उत्साही है। हालाँकि वह

हर काम बड़ा खरे ढंग से करता है फिर भी हर कोई उनसे डरता है।"

"तुम कितने पक्षपाती हो! तुम अपनी ही तरह के सक्रिय और अधीर लोगों को पसन्द करते हो। तुम अपने को अलग नहीं कर सकते और हमेशा हर चीज़ की देखभाल स्वयं करोगे।"

"और क्या हर काम को अपने मातहतों पर छोड़ देना पुरानी नौकरशाही का तरीका नहीं है?"

ल्यू-ई कोई उत्तर न दे पाई लेकिन दिल में उससे सहमत न हो सकी। वह उस दिन की प्रतीक्षा में रही जब वह वांग युंग-मिंग से अलग होकर कोई काम करेगी।

चूँकि वांग युंग-मिंग पर काम का बोझ अधिक था इसलिए वह दिन-पर-दिन दुबला होता जा रहा था। एक दिन मैनेजर ली ने उसे बताया कि वह कुछ कैलशियम की दवाइयाँ खरीद रहा है जो न सिर्फ़ फायदेमन्द ही हैं वरन् सस्ती भी हैं, और उन सभी लोगों ने जो इन सब चीज़ों के बारे में जानकारी रखते हैं और इनका उपयोग किया है अपनी सम्मति दी है। लेकिन डायरेक्टर वांग नदी पार करके खुद जाकर देखना चाहता था। ली ने अपनी छाती ठोंककर कहा, "जाने की कोई जरूरत नहीं है। अगर मैंने गलत खरीद की है तो मैं अपने पद से इस्तीफ़ा दे दूँगा।" फिर भी डायरेक्टर वांग ने कोई ध्यान नहीं दिया। हालाँकि उसके सिर में दर्द हो रहा था फिर भी उसने नदी पार कर सामान देखने की जिद की। उन्हें देखकर उसे पूर्ण सन्तोष हुआ और तुरन्त उनका पैसा चुकाने का आदेश दिया। लौटते समय वहाँ वर्षा से बुरी तरह भीग गया। परिणामतः उसे तेज बुखार हो गया। जब अस्पताल ले जाकर उसकी परीक्षा हुई तो पता चला कि उसे लाल ज्वर है। ल्यू-ई उसके पास ही रहती। चूँकि बुखार बहुत तेज था इसलिए वह तीन दिन और रात बराबर बेहोश रहा। कभी-कभी वेह अंट-संट बकता और कभी-कभी जोर-जोर से चीखता, "मशीन में आग लगी है।" "उसे रोको, जासूस, उसे रोको।" बुखार उतरते-उतरते वह बहुत दुबला हो

गया था और ल्यू-ई भी कमज़ोर हो गई थी। उसका चेहरा नितान्त सफ़ेद पड़ गया था। उसके बुखार उतरने के दूसरे दिन चेन सू-लिंग को उसकी बीमारी की ख़बर मिली। वह तुरन्त वहां से उसे देखने आया। वह डायरेक्टर वांग को दुबली और कमज़ोर अवस्था में मुश्किल से पहचान सका। वह उसके बिस्तर पर बगल में बैठा था सिर नीचा किये। उसका चेहरा रुआंसा हो रहा था।

"तुम्हें किसने आने के लिए कहा?" कमज़ोर आवाज़ में वांग युंग-मिंग ने पूछा।

"मैं शहर में बच्चे के लिए कुछ सामान खरीदने आया था और आपके दफ्तर के पास से गुजरते हुए आपसे मिलने गया। वहीं पता चला कि आप बीमार हैं। चूँकि मैं इधर से गुज़र रहा था तो आपको देखने चला आया।" चेन ने झूठ बोल दिया।

"मेरे पास मेरी देखभाल करने के लिए डॉक्टर हैं, लेकिन अगर तुम जादे गरडिल भील छोड़ देते हो तो फिर काम की देखभाल करने वाला वहाँ कौन होगा?" उसकी गढ़ी कहानी पर विश्वास न करते हुए वांग ने कहा।

"इससे कोई नुकसान नहीं हुआ। सहायक डायरेक्टर लु तो वहाँ पर हैं ही" चेन ने कहा। लेकिन वह सोचकर मन-ही-मन मुस्कराया, "वह सहायक डायरेक्टर के नाते बड़े उपयोग का है।" वास्तव में वह कारखाने की सारी जिम्मेदारी ल्यू एह-सुआन और ली सी-स्यान को सौंप आया था। उसकी सम्मति में ल्यू एह-सुआन दोनों में ज्यादा विश्वसनीय था, लेकिन ज्यादा योग्य और जिसे वह ज्यादा चाहता भी था वह था ली सी-स्यान।

"पिछले कुछ दिनों से कारखाने का काम कैसा चल रहा है?" कमज़ोर आवाज़ में वांग युंग-मिंग ने पूछा।

"करीब-करीब पूरा हो चुका है। सिर्फ़ कुछ चीज़ें हैं जो कम पड़

रही हैं; और सिर्फ स्टाटर[1] अभी भीगा है। वू स्यांग-ती, ल्यू-फू और ल्यू एह-सुआन उसके सुखाने के पक्ष में हैं, लेकिन यांग फू-तिन ने उनके सुझावों की ओर तनिक भी ध्यान नहीं दिया है। बिजली के मामले में वे ही ज्यादा अच्छा जानते होंगे।"

"जल्दबाजी मत करो। मेरे देखने तक प्रतीक्षा करो। मैं परसों अस्पताल छोड़ दूँगा और उसके अगले दिन की शाम को मैं जादे गरडिल झील आऊँगा।"

ल्यू-ई ने चेन सू-तिंग को संकेत किया जिसे उसने तुरन्त समझ लिया और अपना स्वर बदलकर, बोला "मशीनों को चालू करने के बारे में अभी सोचना जल्दी है। स्विच बोर्ड की भी अभी मरम्मत नहीं हुई है, और अगर स्टाटर को सुखाना निश्चित भी हो जाता है तो भी अगले दस दिन से पहले सब काम समाप्त न हो सकेगा। आप अच्छा हो कुछ और दिन अभी आराम करें, आपका स्वास्थ्य बहुत महत्त्वपूर्ण है।"

वांग वास्तव में उठकर बैठ गया था। बीमारी के इतने दिनों में वह आज पहली बार उठकर बैठा था। जब वह काम के बारे में सोचता; पार्टी के द्वारा जो जिम्मेदारी उसे सौंपी गई है उसके बारे में सोचता, तो वह बेचैन हो उठता था। मरम्मत में तीन महीने लग गये थे। अब बिजली पैदा होने का समय था। वह उतावला होने से अपने को न रोक सका। वह सोच रहा था कि बिजली पैदा करते समय उन्हें किस बात से चौकन्ना और सजग रहना चाहिए और किस तरह मजदूरों को ज़िम्मेदारी सौंपनी चाहिए। उसके दिमाग़ में समस्याएँ घूमती रहीं जिन्हें वह सुलझा न सका और अन्त में थककर बेहोश होकर बिस्तर पर गिर पड़ा। ल्यू-ई बहुत घबरा गई। उसकी समझ में ही नहीं आ रहा था कि क्या करे, पर चेन सू-तिंग ने तुरन्त डॉक्टर को बुलाया। एड्रेनालिन की सुई लगने के बाद वह धीरे-धीरे स्वस्थ-चित्त हुआ।

---

१. मशीन का एक विशेष पुर्जा

९

पिछले कुछ दिनों से चूँकि मशीन की मरम्मत पूरी होने के करीब थी, सभी मज़दूरों में बड़ा जोश और उत्साह था। ज्यों-ज्यों मरम्मत समाप्ति पर आती जाती थी त्यों-त्यों वे कड़ी मशक्कत करते जाते थे।

लू पिंग-चेन भी बड़े जोश में था। इस तरह की प्रसन्नता सर्जन में उस समय देखी जाती है जब वह आपरेशन में सफलता प्राप्त करता है या सेनापति में उस समय देखी जाती है जब उसकी विजय निश्चित हो जाती है, या किसानों में उस समय देखी जाती है जब उनकी फ़सल पककर तैयार हो जाती है। लेकिन उसकी खुशी एक अर्थ में दूसरे मज़दूरों से भिन्न थी—उसमें एक समूह में काम करने से उत्पन्न होने वाले जोश की कमी थी। क्योंकि उसने अपनी मेहनत से ही शिक्षा पाई थी और बाद में अपने सहारे से ही उसने काम किया था और अब अपने-आप में ही प्रसन्न भी था।

उसने दोनों वांग बन्धुओं से बात की थी और उन लोगों ने निश्चय किया कि मशीन को चालू करने की कोशिश की जाय। हालाँकि चेन सू-तिंग ने उसे बता दिया था कि डायरेक्टर वांग स्वयं आकर चलाते समय उसका निरीक्षण करेंगे, फिर भी उसने उसकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया, " उनके आने से क्या होता है !' उसने मन में सोचा, 'बिजली पैदा होने लगे तो उनके आने के स्वागत में सड़क पर

रोशनी करेंगे।" यांग फू-तिन भी शीघ्र ही मशीन चालू करने के पक्ष में था।

लेकिन बूढ़ा सुन, ल्यू एह-सुआन और वू स्यांग-ती स्टाटर के बारे में, जो अभी भी नम था, चिन्तित थे। ल्यू एह-सुआन विशेष तौर पर चिन्तित था और उसी ने दूसरों को अपनी राय प्रकट करने पर तैयार किया था। वू स्यांग-ती ने सोचा कि चूँकि वह कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य है उसे किसी से डरने की जरूरत नहीं और अपने दोनों हाथों में साहस बटोरकर वह यांग फू-तिन के पास गया और उससे बोला कि स्टाटर को सुखाया जाना ज़रूरी है। फू-तिन तिरस्कारपूर्ण हँसी हँस दिया और टूटी-फूटी चीनी भाषा में बोला, "यह कौनसा बिजली का विज्ञान है? मैं समझता हूँ मंचूकू विज्ञान है!"

यांग फू-तिन ने स्विच बोर्ड का जिम्मा ले लिया, यांग शेन तिन ने पानी के पहिए की गति का और ल्यू पिंग-चेन ने मशीन का और चेन सू-तिंग ने यह देखने का कि मशीन की आवाज़ ठीक हो रही है या नहीं। सभी मज़दूर उनकी ओर देख रहे थे। उनके चेहरे उत्सुकता के जोश से खिचे हुए थे। शाम को आठ बजे लु पिंग-चेन पूरे विश्वास के साथ पानी के पहिए के चक्कर पर गया और उसे उसने चालू कर दिया। पानी का पहिया घूमने लगा; सारी मशीन चलने लगी। पतली घूमी हुई मशीन में लगी तांबे की नलियाँ भी खूबसूरती से हिलने लगीं और मधुर आवाज़ मशीनघर में फिर से सुनाई पड़ने लगी। जब मज़दूरों ने आवाज़ सुनी, जिसे उन्होंने एक वर्ष से अधिक दिनों से नहीं सुना था; तो मारे खुशी के फूले नहीं समा रहे थे—हाँ, उन्होंने प्रसिद्ध गीत गाने वालों के गीत सुना था और मी लान-फंग का नृत्य-गान भी सुना था, उन्होंने गांव की लड़कियों को सुरीली स्पष्ट ध्वनि में लोक-गीत गाते हुए भी सुना था और अपने बच्चों की मधुर गुनगुनाहट भी; उन्होंने जंगली चिड़ियों की शुद्ध मधुर चहचहाहट भी सुनी थी और जादू गरडिल झील की सतह से स्पर्श करती हुई बसन्ती हवा की भर-

भर और सनसनाहट भी सुनी थी। लेकिन अब यह सब बोगस और व्यर्थ मालूम पड़ रही थीं। मशीनघर में चलती मशीनों की ध्वनि की समानता में वे कुछ भी नहीं थीं—कितना सुन्दर!

हर कोई दम साधे प्रतीक्षा कर रहा था।

"१५०" यांग फू-तिन ने कहा।

"१५०" मज़दूरों ने आगे बढ़ाया।

"३००"

"३००"

मिनट-मिनट पर बिजली की गति बढ़ती जा रही थी; ५००, १०००, २०००, ३००० और जितनी ही संख्या बढ़ती जाती मज़दूरों को अपनी सफलता पर उतना ही विश्वास बढ़ता जाता था। जब गति ३००० तक पहुँच गई तो यांग फू-तिन का कण्ठ सूखने लगा, लेकिन अपने प्रयास की सफलता में उसे कोई सन्देह नहीं रहा था इसलिए उसने संख्या चिल्लाना बन्द कर दिया और पहले से भी अधिक तेजी से गति बढ़ा दी। उसने उसे ७००० तक बढ़ाया और तब सोचा कि बस अब इतना काफी है। जैसे ही वह गति को कम करना चाहता था उसने किसी को मशीनघर से दबी आवाज़ में चिल्लाते सुना, "यह क्या! यह तो धुआँ दे रहा है।" और तुरन्त लोगों में भगदड़-सी मच गई और वे चिल्लाने लगे, "उसे तुरन्त बन्द करो!" लू पिंग-चेन ने अपनी मशीन बड़ी तेजी से बन्द की। वैसे तो वास्तव में मशीनें बन्द हो गई थीं लेकिन फिर भी देर तो हो ही गई थी। मशीन में आग लग चुकी थी। जल्दी ही धुएँ के गुब्बार में लपटें उठने लगी। सभी में घबराहट फैल गई। चेन सू-तिंग दौड़कर पहाड़ी पर पहरेदारों से अनुशासन कायम रखने का आदेश देने गया। बूढ़े सुन ने लोगों को आग बुझाने के लिए पानी लाने को कहा और तुंग भीड़ में बिना किसी उद्देश्य के चिल्लाने लगा। जिसे जो बर्तन मिला उसी में पानी लाने दौड़ा। कुछ लोग तो मारे डर के पीले पड़ गए थे और काँप रहे थे।

चू जू-चेन ने दो पीपे ले लिए थे और वह उन्हें दोनों हाथों में लटकाए लोहे की सीढ़ी पर चढ़कर धुएँ के गुब्बार में जाकर डाल रहा था। वह ऐसा चिल्ला रहा था मानो उसकी माँ मर गई थी।

वू स्यांग-ती लोगों को यह बताने के लिए कि किस जगह पर पानी डालना सबसे ज्यादा ठीक होगा मशीन के चारों ओर बने लोहे के चौखटे पर चढ़ गया था। उसने लोहे की दो छड़ों को रखकर ऊपर पुल-सा बना लिया था। वह इस खतरनाक पुल पर खड़ा था और नीचे से पानी ले-लेकर लपटों पर डाल रहा था। अगर वह अपना वैलेंस खो दे तो वह आग की लपटों में जा गिरे। उसका यह साहस और होशियारी आग बुझाने में सबसे ज्यादा उपयोगी थी। बूढ़े सुन, ल्यू एह-सुआन और चेन सू-तिंग ने भी उसकी नकल की और उन्होंने भी लोहे के ढाँचे पर छड़ें रखकर पुल से बना लिए। उन पर खड़े होकर लपटों में पानी डालने लगे और लपटों से जूझने लगे।

वू स्यांग-ती काफी देर से धुएँ में खड़ा-खड़ा घबरा उठा था। वह वैलेन्स खो ही बैठा और लपटों में जा गिरा। ली चान-चुन ने, जो उसी समय पानी लाया था, उसे पेटी से पकड़ लिया और फिर साओ वान-फ़ा की सहायता से उसे बाहर निकाला। फिर भी पच्चीस मिनट के लगभग लग ही गये। इतनी देर में उसके पैर के तलवे बुरी तरह जल गये थे। ली चान-चुन ने उसे लिटाया और चेहरे पर ठण्डा पानी डाला और फिर तुरन्त लपककर उसके स्थान पर जा डटा। थोड़ी देर तक पड़े रहने के बाद वू स्यांग-ती को होश आया। वह उठकर खड़ा हो गया और स्वयं ही तलवे पर थोड़ा-सा तेल मल लिया। फिर जाकर उसने बूढ़े ल्यू के हाथ से बाल्टी ले ली, जो पसीने से नहा गया था तथा भगवान् बुद्ध की प्रार्थना कर रहा था, और स्वयं जाकर नदी से पानी लाने लगा। उसके जूते खो गये थे और जले हुए तलवे पत्थर पर चलने के कारण छिल-छिलकर उसे पीड़ा पहुँचा रहे थे, पर उसने उस ओर कुछ ध्यान न दिया। ऐसे अवसर पर और दूसरे सभी

की तरह उसके दिमाग़ में भी एक ही भावना थी : जिन मशीनों की उन्होंने इतनी मेहनत से मरम्मत की थी उन्हें किसी भी मूल्य पर आग रूपी राक्षस के गाल से बचाया जाय। हालाँकि आग कोई उतनी ज्यादा तेज़ न थी पर उनके पास उसे बुझाने के साधन न थे, इसलिए साढ़े आठ बजे की लगी आग को वे रात के एक बजे तक कहीं जाकर पूरी तरह बुझा सके। आग बुझ जाने के बाद भी लोग बिखरे नहीं। वे सभी मौन स्वीकृति के वश मशीनघर में जमा थे। प्रधान इन्जीनियर से लेकर साधारण मज़दूर तक दुःख से सिर झुकाए बैठे थे। मज़दूरों की खुशी और जोश तथा यांग फू-लिन का बेवकूफ़ी-भरा उतावलापन सभी आग में जलकर स्वाहा हो गए थे।

व्यथा के मारे बूढ़ा सुन अपने आँसू न रोक पा रहा था। उसके दिल में अजीब-सी पीड़ा हो रही थी और वह अपने मन में आश्चर्य कर रहा था—'विपत्ति, हमेशा विपत्ति! वे कुमिन्तांग के हाथों से आग, के हाथों से ही नष्ट होने के लिए बची थीं। यह किसकी गलती थी? मेरी गलती? मेरी गलती थी कि डायरेक्टर वांग को मज़दूरों की समस्या साफ़-साफ़ मैंने नहीं बताई। अगर मैंने बता भी दी होती तो क्या इससे आग लगने से रुक सकती थी? नहीं, मेरा तो सिर्फ इतना ही दोष है कि मैंने यांग फू-लिन से स्टार्टर को ठीक तरह से सुखा लेने के लिए नहीं कहा।...' उस समय तक वू स्यांग-ती के हाथ-पैरों में असहनीय पीड़ा हो रही थी। उसने ठण्डे पानी की एक बाल्टी में अपने पैरों को डाल दिया। बूढ़ा सुन तेज़ी से उसे ऐसा करने से रोकने गया और उसके घावों को पोंछकर सुखाया और उस पर मलहम लगा दिया। फिर बुरी तरह परस्त होकर भी वह हरएक के पास जा-जाकर उनके जले घावों को देखने लगा, और उन पर मलहम लगाता फिरा। ऐसा मालूम होता था कि सिर्फ उसी में कुछ शक्ति बाकी बची थी। हालाँकि सचाई यह थी कि वही सबसे ज्यादा थका था और दुःख भी उसे ही

सबसे ज्यादा था। यांग बन्धुओं को देखकर, जिनकी असावधानी ने यह विपत्ति ढाई थी, वह बहुत गुस्से में काँपने लगा।

चू जू-चेन तेल के मोटे पम्प के सहारे सिर झुकाए खड़ा था। वह जोर-जोर से चीखने से अपने को नहीं रोक पा रहा था। सभी लोगों को अपना दुःख छिपाना कठिन हो रहा था। कुछ तो जोर-जोर से सिसकियाँ ले रहे थे, कुछ चुपचाप आँसू बहा रहे थे और कुछ अपने पड़ोसी की गर्दन में जोर से बाँह डाले हुए थे। सहायक डायरेक्टर लू भी जो हमेशा गम्भीर मुद्रा बनाये रहता था व्यथित हो रहा था। उसका चेहरा धुएँ और तेल से काला हो रहा था और उसकी एक बाँह फट गई थी। मज़दूरों की व्यथा ने उसे व्यथित कर दिया था। यह पहला अवसर था जब उसने मज़दूरों की लगन, अपनी मेहनत के फल से उनका प्रेम, और मशीनों के प्रति उनका प्रेम देखा था। उसके भी आँसू बह रहे थे, कुछ तो इसलिए कि तीन महीने की उसकी कड़ी मेहनत व्यर्थ गई थी और कुछ इसलिए कि वह मजदूरों की व्यथा से व्यथित था।

जब यांग बन्धु आग से हुए मशीनों के नुकसान को देखभालकर नीचे उतरे तो वे उतने ही हक्के-बक्के हो रहे थे जितने पिछले वर्ष १५ अगस्त को हुए थे लेकिन फिर भी वे अपनी उद्विग्नता को सँभाले हुए थे।

इस तरह के गहरे दुख की घड़ी आध घण्टे तक रही। इतनी देर में चेन मू-तिंग ने लु पिंग-चेन से सलाह की। तब लु पिंग-चेन ने खड़े होकर घोषणा की, "आधी रात से ज्यादा बीत चुकी है तुम लोग अच्छा हो अब अपने घर जाओ। फिलहाल कोई भी भी मशीन नह छुई जायगी और कोई मज़दूर कहीं बाहर नहीं जायगा। हम लोग चुपचाप डायरेक्टर वांग के आने का और उनके आदेश का इन्तज़ार करेंगे।"

अर्थी के जलूस की तरह भारी पैरों से पहाड़ी पर जाते हुए गमगीन आदमियों को देखने के लिए पीला चमकता चाँद निकल आया था।

दूसरे दिन सबेरे चेन मू-तिंग ने आदेश जारी किया कि कोई मज़-

दूर न छुट्टी लेगा और न कहीं कारखाना छोड़कर बाहर जायगा। फिर स्वयं और लू पिंग-चेन दोनों ही डायरेक्टर वांग को सारी परिस्थिति बताने के लिए शहर गये। चूँकि वू स्यांग-ती बुरी तरह घायल हो गया था इसलिए उसे भी शहर इलाज के लिए जाना था। सी ल्यांग च्यान के लिए एक गाड़ी किराये पर की गई और वहाँ से रेल पकड़ी गई।

डायरेक्टर वांग ने उन्हें देखते ही सबसे पहले वू स्यांग-ती को एक आदमी के साथ अस्पताल भेजा। लु पिंग-चेन और चेन सू-तिंग से सारी रिपोर्ट सुनने के बाद वह सिर नीचा कर गम्भीर चिन्ता में पड़ गया। करीब बीस मिनट तक सोचने के बाद वह धीरे-धीरे बोला—"पहले नम्बर की मशीन की मरम्मत हो सकती है, क्यों?"

तीनों ही, पहले तो प्रश्न का आशय न समझ सके लू पिंग-चेन ने अपने मन में सोचा, अगर उसकी मरम्मत हो भी सकती है तो इससे क्या, हमें तो जेल जाना ही पड़ेगा।" चेन सू-तिंग उत्तर देने का साहस न कर सका, पर ल्यू एह सुआन ने साहस कर उत्तर दिया: "हाँ उसकी मरम्मत हो सकती है।"

"अगर तुम्हें विश्वास है कि तुम नम्बर एक मशीन की मरम्मत कर सकते हो तो वापस जाओ और उसकी मरम्मत की योजना तैयार करो। एक-दो दिन में मैं आऊँगा।" फिर उसने उन्हें उत्साह दिलाया: "कोई बात नहीं। हमने आग से एक मशीन नष्ट कर दी, लेकिन हम अब भी दूसरी की तो मरम्मत कर सकते हैं। हम हमेशा अपनी गल-तियों से ही सीखते हैं।"

यह सुनकर उनकी साँस-में-साँस आई। वे इतने ज्यादा प्रभावित हो गये थे कि थोड़ी देर के लिए कोई भी न बोल सका।

फिर चेन सू-तिंग ने अपनी आँखें पोंछते हुए कहा: "जब कि जनता की सरकार इतनी दयावान है तो वापस जाकर हम न नींद की परवाह करेंगे, न तनख्वाह की और न खाने की बस नम्बर एक मशीन की मरम्मत की ही परवाह करेंगे।"

तीनों ने आपस में चन्दा कर वू स्यांग-ली के लिए कुछ अण्डे और बिस्कुट खरीदकर दिये और फिर तुरन्त जादे गरडिल झील को वापस लौट गये।

वांग युंग मिंग मशीनों में आग लग जाने की रिपोर्ट करने के लिए केन्द्रीय दफ्तर गया। सेक्रेटरी जनरल ली, कमिश्नर हू और राजनीतिक कार्यकर्ता चिन सभी मौजूद थे। हू ने विस्तार से कारखाने की स्थिति और मरम्मत के प्रगति सम्बन्धी प्रश्न पूछे। लेकिन चिन ने कारखाने के काम करने वाले मज़दूरों की दशा, उनके रहन-सहन की दशा और मजदूर यूनियन के नेतृत्व पर ध्यान दिया। वांग युंग-मिंग ने उनके सभी प्रश्नों का सही-सही उत्तर दिया। पहले तो चिन ने दूसरी मशीन की मरम्मत के लिए वांग युंग-मिंग के तरीके से सहमति प्रकट की।

प्रश्न पर थोड़ी देर ग़ौर करने के बाद वे सहमत हुए कि यह आग टेक्निकल ग़लती का परिणाम थी। अन्त में चिन ने वांग युंग-मिंग से गम्भीर स्वर में कहा : "हम सभी जानते हैं कि तुम कितनी कड़ी मेहनत करते हो और उसके परिणाम भी सामने आये हैं। हम यह मानते हैं कि हमारी स्थानीय कमेटी ने लुटेरों को ख़त्म करने, जागीरदारों को सजा देने और भूमि की बँटाई पर विशेष ध्यान दिया है। परिणामतः हम शहर की समस्याओं पर, विशेष तौर पर बिजली-उद्योग पर कम ध्यान दे सके हैं।" चिन की दाईं आँख पर घाव था इसलिए बात करते समय उसकी दाईं आँख दबती थी, जिससे उसकी शक्ल बड़ी अजीब-सी हो जाती थी। वह धीरे-धीरे नम्र स्वर पर तीखेपन से बोलता था। "लेकिन क्या तुम्हें अपने काम करने के तरीके पर फिर से नहीं सोचना चाहिए? मिसाल के तौर पर तुमने चेन सू-तिंग से सब काम की देखभाल करने को कह दिया है बिना समूचे मज़दूरों की शक्ति पर भरोसा किये। क्या तुम समझते हो कि यह सही है, या नहीं? वू स्यांग-ती एक पार्टी-मेम्बर है, एक योग्य मज़दूर है, लेकिन तुमने उस पर भरोसा नहीं किया

श्रौर उसके द्वारा मज़दूरों की स्थिति जानने की चिन्ता तक नहीं की। गाँव में भूमि-सुधार के काम में भी यह ग़लती की गई थी—हमारे साथी सबसे पहले दिलचस्पी रखने वाले मज़दूरों की तलाश करते हैं; श्रौर इन मज़दूरों को सारा काम सौंप देते हैं। गाँवों में जहाँ श्रच्छे कार्यकर्ता मिल गये वहाँ तो ज्यादा कठिनाइयाँ नहीं पैदा हुईं; लेकिन पहले प्रभाव से ही उत्साही कार्यकर्ताश्रों को ढूँढ लेने से सच्चे उत्साही कार्यकर्ता नहीं मिल जाते। यह गेहूँ फटकने के समान है। श्रच्छा गेहूँ हमेशा नीचे बैठ जाता है श्रौर कूड़ा श्रौर धूल ऊपर श्रा जाती है। जो लोग फटकना नहीं जानते श्रौर हवा का रुख नहीं पहचानते वे भले ही श्राधेदिन तक फटकते रहें पर गेहूँ श्रौर कूड़ा श्रलग-श्रलग नहीं होसकता।" हाथों से मुद्रा बनाकर समझाते हुए कहते समय हाथ की सिगरेट की राख इधर-उधर बिखर गई। वह बहुत योग्य नेताश्रों में से था। उसकी बातें इतनी साफ होती थी कि कोई कार्यकर्ता उससे सहमत हुए बिना नहीं रह सकता था। "तुम्हारी सिद्धान्तों श्रौर जिम्मेदारी की पकड़ बड़ी श्रच्छी है, बस एक बात की कमी है जिसके बारे में सभापति माश्रो हमें बराबर चेतावनी देते रहे हैं—जनता का रास्ता श्रपनाना...जनता पर विश्वास करना, उन पर भरोसा करना, पर इसके यह मानी हरगिज नहीं हैं कि उनका नेतृत्व नहीं करना है।...श्रगर तुम दूसरी मशीन की मरम्मत सफलता से करना चाहते हो तो तुम्हें श्रपनी पहली श्रसफलता के श्रनुभव से सीखना चाहिए।..."

श्रपने नेताश्रों की श्रालोचना, सलाह श्रौर श्रादेश पा लेने के बाद वाँग युंग-मिंग ने लौटकर कुछ दिनों तक जादे गरडिल झील में ही रहकर स्थिति से श्रपने को पूरी तरह जानकार कराने का निश्चय किया। लेकिन चूँकि उसे कुछ जरूरी चीज़ें खरीदनी थीं इसलिए पहले वह हार्बिन गया श्रौर इस तरह वह दो दिन श्रौर लेट हो गया। इस समय तक हर्बिन में उद्योग प्रगति कर रहा था श्रौर जब मोर्चे पर से विजय की खबर मिली तो हार्बिन के लोगों ने ऐलान किया कि मोर्चे

की सहायता करने के लिए उन्हें मोर्चे के पिछवाड़े को जरूर मज़बूत करना है। यह जानकर बिजली-उद्योग को चालू करने का वांग का उत्साह और भी बढ़ गया। सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह थी कि हार्बिन से उसने एक व्याख्यान सुना जिसने उसकी विचारधारा को सबसे ज्यादा प्रभावित किया था। वह सरकारी होस्टल में ठहरा हुआ था, वहीं उसे अपना एक पुराना सहपाठी मिल गया, जिसके साथ उसने दो रातों तक बातचीत की।

हालाँकि लू-मिंग नदी के लिए दस बजे से पहले कोई गाड़ी नहीं जाती थी, फिर भी वांग युंग-मिंग सवेरे साढ़े चार बजे ही सोकर उठ बैठा। वह पिछले कुछ रातों से बहुत कम सो रहा था। जब कभी वह अपनी कमज़ोरियों के बारे में सोचता था तो उसे बड़ी शर्म और दुःख होता था; लेकिन जब उसने यह महसूस किया कि उन्हें सुधारने का साहस और शक्ति उसमें है तो वह अपने में स्फूर्ति और प्रसन्नता का अनुभव करता था। सम्भवतः हर कम्युनिस्ट ने ऐसे भावों का अनुभव किया है। सचमुच वह हर समय इसका अनुभव कर रहा था। इस प्रकार का अनुभव ही वास्तव में कम्युनिस्टों को अपनी राजनीतिक समझ को लगातार विकसित करने की क्षमता देता है। दिन-प्रतिदिन उनके चरित्र विकास का भी यही मुख्य कारण है।

"साई चिह अब उठो।" उसने अपने सहपाठी को झकझोरा, "इतना चिन्तन करने के बाद मैंने महसूस किया है कि मैं बराबर नौकरशाह रहा हूँ।"

साई चिह ने जब आँखें खोलीं और अपने को गम्भीर आवेशपूर्ण मुद्रा में देखा तो वह भौंचक्का रह गया और बोला, "क्या मामला है।"

वांगयुग-मिंग अपने ही विचारों में खोया हुआ था। "कल उत्तर-पूर्व बोर्ड के राजनीतिक कार्यकर्ता ने कर्मचारियों की एक बैठक में व्याख्यान दिया था। उसमें उन्होंने नौकरशाहियत पर भी प्रकाश

डाला था। उन्होंने बताया था कि नौकरशाहियत का प्रकटीकरण पाँच तरह से होता है। आह, मैं इस पांचवीं प्रकार की नौकरशाहियत का ही दोषी रहा हूँ।"

"तुम हर काम अपने आप ही करते हो, और तुमने अपने पद का गौरव किसी पर कभी नहीं थोपा, तो भला तुम्हें नौकरशाह कैसे कहा जा सकता है?"

"मेरी बात सुनो, यह पांचवे तरह का ऐसा नेता होता है जो अपने हर आदेशों के पूरा होने पर ज़ोर देता है और सारे अधिकार भी अपने हाथ में रखता है बहुत से साथी जो मेरी आलोचना करते थे वह आखिरकार सही थी। हालाँकि मेरा हृदय शुद्ध और साफ़ था, लेकिन मैं अपने हाथ से कोई काम बाहर नहीं जाने देता था, जनता पर विश्वास करने की शक्ति मुझमें नहीं थी। मैं दूसरों की योग्यता का उपयोग नहीं कर सकता, मैं स्वयं सजग परख नहीं करता—मैं पूरे समूह को शंका की दृष्टि से देखता हूँ और एक पर ही अपना सारा विश्वास जमा लेता हूँ।" वह बड़ा दुखी हो शान्ति से कहते जा रहे थे, "मैंने जब पहली बार अपने चरित्र के इस दोष को समझा तो मैं कांप उठा। साई चिह, क्या तुम सहमत नहीं हो कि मैं एक अच्छा पार्टी-मेम्बर नहीं हूँ? मेरी वजह से, चूँकि मैंने अपने काम को गुड़ गोबर कर दिया इसी कारण पार्टी को इतना बड़ा नुकसान उठाना पड़ा।"

साई-चिह ने अनुभव किया कि उसके मित्र की आवाज़ काँप रही थी। उसने उसे सहानुभूतिपूर्वक सान्त्वना दी, "नहीं, तुम एक अच्छे पार्टी-मेम्बर हो युंग-मिंग, तुम अपनी गलतियों को समझ सकते हो और उन्हें सुधारने का साहस रखते हो। यह सत्य ही इस बात का प्रमाण है कि तुम अच्छे पार्टी-मेम्बर हो। क्या तुम कामरेड ल्यूशाओ-जी का कथन भूल गये? कम्युनिस्ट कोई स्वर्ग से बनकर नहीं आते, वे पुराने समाज में से ही आते हैं। इसलिए हमारे अन्दर तमाम तरह

के दोष हो सकते हैं, इसको रोका नहीं जा सकता। लेकिन हमें उन दोषों से मुक्त होना है......"

काफ़ी देर तक वांग युंग-मिंग शान्त रहा फिर बोला साईचिह के प्रति भावयुक्त स्वर में, "तुम वास्तव में मेरे अच्छे मित्र हो। तुम मुझे जब-तब पत्र लिखते रहना। अभी मुझे साहस की आवश्यकता है और वास्तव में तुमने मेरे अन्दर फिर से विश्वास पैदा कर दिया है।"

जाड़े गरडिल झील जाने से पहले वांग ने अस्पताल जाकर चू स्यांग-ती से बातें कीं। चू स्यांग-ती को जोर का बुखार हो रहा था। उसने डायरेक्टर वांग से ली सी-स्यान से सचेत रहने को कहा। और अन्त में उसने कहा, "वहाँ बहुत से अच्छे लोग हैं, बहुत से..." वांग युंग-मिंग उसे अधिक बातें कर थकाना नहीं चाहता था। वहाँ से लौटकर जब वह कारखाने पहुँचा तो देखा कि अभी मरम्मत का काम शुरू नहीं हुआ था। लु मिंग-चेन अपने-आप खोजबीन कर रहा था पर कोई दूसरा किसी चीज़ को छूने का साहस नहीं कर सका था। थोड़े अरसे तक वांग युंग-मिंग ने भी मरम्मत का प्रश्न नहीं उठाया। वह बस इधर-उधर देखभाल करता, जो कोई मिलता उससे बातें करता और जानकारी हासिल करता रहा। मज़दूर अब भी उससे साफ़-साफ़ खुले-दिल से बात करने का साहस नहीं करते थे। उसने सभी मज़दूरों की दो मीटिंगें नम्बर एक मशीन की मरम्मत के प्रश्न पर विचार करने के लिए बुलाईं। लेकिन किसी ने कोई सुझाव नहीं रक्खा।

उस शाम वह बड़ा दुखी हो मन-ही-मन सोच रहा था, 'ये मज़दूर दिलचस्पी क्यों नहीं लेते? क्या वे मुझ से डरते हैं? क्या, क्योंकि वे इंजीनियरों से घृणा करते हैं? चेन सू-लिंग को पसन्द नहीं करते? अगर मैं चेन सू-लिंग को किसी दूसरी जगह बदल देता हूँ तो फिर उसकी जगह कौन लेगा? चू स्यांग-ती अब भी अस्पताल में है, और फिर चेन सू-लिंग की कमज़ोरियाँ आखिर क्या हैं?' वह वास्तव में नहीं जानता था। वह किसी निर्णय पर नहीं पहुँचा, इसलिए उठकर

बाहर निकल गया। यह चन्द्रमास का अन्त था और काली रातें थीं। पहाड़ियों पर काले बादल छाये हुए थे। पश्चिम की ओर नदी की पतली चमकती धार के किनारे बिजली का कारखाना खड़ा था। जो अन्धेरे में विशालकाय राक्षस-सा लग रहा था। इस सुनसान और जीवन-रहित काली धरती और आसमान को देखकर उसे गुस्सा हो आया। अगर मशीन को आग न लगी होती तो आज पहाड़ी की चोटी पर रोशनी जगमगा रही होती और मशीनों की गड़गड़ाहट गूँज रही होती। वह वहाँ से घूम पड़ा। उत्तर की ओर ढलाव पर उसे कुछ रोशनी नज़र आई। मद्धिम रोशनी से पता चलता था कि वहाँ कोई छोटा-सा गाँव था—यह बिजली के कारखाने का एकमात्र पड़ोसी था। वह दफ्तर के बगल से गुज़रता हुआ बेद वृक्षों के नीचे घूम रहा था। उसने एक बच्चे के रोने की आवाज़ सुनी। उसने अन्दाज़ लगाया कि वह चेन सू-तिंग का बच्चा हो। झोंपड़ियों की खिड़कियों से चिराग़ की रोशनियाँ बाहर झाँक रही थीं। इसके माने थे लोग-बाग अभी तक जाग रहे थे।

झोंपड़ी में से एक हँसी सुनाई पड़ी। वांग युंग-मिंग की उत्सुकता बढ़ गई और वह उसी ओर बढ़ गया। वह लोगों की खुशी में खलल नहीं डालना चाहता था इसलिए सिर्फ खिड़की में से झाँका भर।

दो चबूतरों पर लोग जमा थे, कुछ लेटे हुए थे, कुछ बैठे थे और कुछ दीवार के सहारे उढंगे हुए थे। लेकिन चूँकि चिराग़ की रोशनी बड़ी मद्धिम थी इसलिए वह पहचान नहीं सका कि कौन-कौन हैं। एक नौजवान नीचे खड़ा किसी की नक़ल उतार रहा था। इसमें कोई शक नहीं कि उसने नकल बड़ी अच्छी उतारी थी इसीलिए सभी हँस रहे थे।

"यान यू-शान तुम अभी नकल उतारने में कामयाब नहीं हो। मेरा टाइगर ऐसी अच्छी एक्टिंग कर लेता था ऐसी जैसी वह व्यक्ति, स्वयं नहीं कर सकता जिसकी नकल उतारी जा रही हो।" वांग युंग-मिंग ने आवाज़ से पहचान लिया कि वह बूढ़ा सुन था।

"यह तो बड़े आश्चर्य की बात है; वास्तविक आदमी से भी ज्यादा उसकी नकल कैसे सही और अच्छी हो सकती थी ?"

"बूढ़े सुन, अपने टाइगर के बारे में हमें कुछ और बताओ।" एक दूसरे नौजवान ने कहा। यह किसी मोटे आदमी की आवाज थी और ली चांग-चुन की जैसी मालूम पड़ रही थी। "क्या तुम सबको याद है ? फरवरी से जब बूढ़े सुन ने हमें टाइगर की निर्दय मृत्यु की कहानी सुनाई थी, उससे ही हम सब लोगों में बर्फ तोड़ने और तेल काँछने का जोश आया था। अब हमें टाइगर के बारे में दूसरी कहानी सुनाओ ताकि हम करने के लिए कोई और काम पा सकें। वास्तव में इन पिछले दिनों में जब से मशीनों को आग लगी है हम लोग इतना ऊब गए हैं कि रोना आता है।"

"नहीं, धन्यवाद, मेरे लिए नहीं। तुम और क्या काम चाहते हो ? बर्फ तोड़ना और तेल कांछना हमारे पसीने का काम था, लेकिन सारा श्रेय मिला अवसरवादी चाटुकार तुंग को। तो हम फिर किसलिए करें ?" किसी ने गुस्से में पूछा।

इस अवसर पर यान यू-शान ने क्लास में व्याख्यान देने के चेन लू-तिंग के ढंग की नकल की, "तुम सबको बूढ़े तुंग से सीखना चाहिए; वह बर्फ तोड़ने और तेल कांछने में नेता था। कुछ लोग उस पर अवसरवादी और चाटुकार होने के लिए हँसते हैं लेकिन उसके जैसे अवसरवादी होने में भी कोई नुकसान न होगा। क्या वह सर्वहारा वर्ग के प्रति वफ़ादार नहीं है ? जब वह जापानियों के लिए काम करता था तो क्या उसे काम करने के लिए विवश नहीं किया गया था ?"

फिर हँसी की एक लहर दौड़ गई, और किसी ने चिल्लाकर कहा, "वह वास्तव में जीवन के प्रति सही ज्ञान रखता ही है।"

वांग सुंग-लिन ने जब यह सुना तो एकाएक वह अनजाने में अपने दाँत पीस उठे और अपने-आप से ही बोले : "क्या वास्तव में ऐसा

हुआ होगा ?" फिर उन्होंने दम साध कर सुनना आरम्भ किया; सभी बर्फ तोड़ने और तेल काछने के समय की घटनाओं के बारे में बात कर रहे थे। यान यू-शान ने एक नकल और उतारी कि किस तरह बूढ़े सुन से अफसर ने पूछा था कि मशीन का कौन-सा भाग सबसे जरूरी है और किस तरह बूढ़े सुन ने उसे चरका देकर बेवक़ूफ़ बना दिया था। अफ़सर की बेवक़ूफ़ी सुनकर फिर सभी हँस दिये। उसके बाद किसी ने ज़िक्र किया कि किस तरह बूढ़ा सुन नंगा होकर पानी में घुस गया था और किस तरह श्रीमती ल्यू और श्रीमती चांग घबड़ाकर भाग खड़ी हुई थीं और फिर एक बार कमरे में हँसी गूँज गई। बाहर खड़ा वांग युंग-मिंग नहीं हँसे, इसलिए नहीं कि उन्होंने उसमें मज़ा नहीं लिया बल्कि इसलिए कि उन्होंने मज़े से ज्यादा गहरी चीज़ पाई—वह प्रभावित हुए थे। वह इस बूढ़े चीनी मज़दूर से प्रभावित हुए थे, जिसने मज़दूर-वर्ग की अच्छी परम्पराओं को निभाया था, जिसने इतने स्वार्थ-त्याग की क्षमता दिखाई थी और जिसने तमाम कठिनाइयों के होते हुए भी काम किया था। साथ-ही-साथ वह हक्का-बक्का रह गया था कि पिछले पूरे चार महीनों से वह इस बूढ़े के बारे में कुछ भी न जान सका।

'बूढ़े सुन, अगर तुम्हारा जैसा बाघ भी ठंडिया जाय और तुम्हारे बच्चे नहीं हैं तो यह तो तुम्हारी ही गलती है। कौन जानता है तुम्हारे अन्दर कितनी शक्ति है ? फिर भी तुम मुझ पर विश्वास नहीं करते, जब मैं यह कहता हूँ कि तुम अपनी जिन्दगी-भर कठिनाइयाँ ही झेलते रहोगे। मैंने सुना कि जल्दी ही उसकी व्यापार मैनेजर के पद पर तरक्की होने वाली है, जबकि तुम अब भी वहीं-के-वहीं पड़े हो। अगर तुम कभी तरक्की करते हो तो मैं अपना सिर उतारकर तुम्हारे हाथ पर रख दूँगा !" फिर यह ली चान-चुन की आवाज़ थी।

"तुम भी छोटी बुद्धि वाले हो; तुम ज़रा भी सहन नहीं कर सकते। तुम यह चिल्ला किसलिए हो ? दरअसल हालत उतनी बुरी तो नहीं

है जितनी पिट्ठू सरकार के जमाने में थी। हालत उस समय से अच्छी नहीं है जब राष्ट्रीय सरकार के अफ़सर यहाँ पर थे? एक मशीन जल गई है, लेकिन हमें उसके लिए जेल नहीं जाना पड़ा। वे सिर्फ हम से मुरम्मत का काम जारी रखाना चाहते हैं। क्या पहले यह सम्भव था? कोई परवाह नहीं, अवसरवादी चाटुकार क्या है या साढ़े सात रुट क्या है।" बूढ़ा सुन खिड़की के सहारे झुका हुआ था और बिना सोचे-समझे कहे जा रहा था मानो वह किसी और चीज के बारे में सोच रहा हो।

"वास्तव में कोई तुलना नहीं है," कोने में से किसी ने कहा। लेकिन वह मंचूक राज्य था और यह जनता की सरकार है। जनवाद की बात करना है तो जनवादी तौर-तरीके भी तो होने चाहिएँ। लेकिन जब अवसरवादी अधिकार झपटता है और साढ़े सात उसकी सहायता करता है तो तुम इसे जनवाद कैसे कह सकते हो?"

"अगर वह अधिकार झपटना चाहता है तो उसे झपटने दो। इससे तुम्हें क्या?"

"मैं तो सिर्फ बात कह रहा था। इन सबकी परवाह कौन करता है?"

वांग सुंग-मिंग को गलत व्यक्तियों का उपयोग करते रहने के लिए अपने ऊपर इतना गुस्सा आ रहा था कि उसका खून उबलने लगा; और वह वहाँ और अधिक न ठहर सका। उस गेंद की तरह जिसमें पूरी हवा भरी हो और उसे आप छू-भर दीजिए तो वह फिर ठहर न सकेगी। वह पेड़ों के तले टहलता रहा।

"जो कोई अपने को जनता से अलग कर लेता है वह अन्धा हो जाता है या बहरा या फिर बेवकूफ़ हो जाता है।" यह सही शिक्षा उसके दिमाग़ में बराबर कौंधती रही। काफ़ी रात बीतने पर जब उसके अंग-रक्षक उसे तलाश करने निकले तब कहीं वह अपने कमरे में वापस गया।

दूसरे दिन सवेरे चू: सुन से बात करने का अवसर निकाला। उसने साफ़ और स्पष्ट शब्दों में कहा, "सभापति आओ हमें अपने निजकों

को मज़दूरों, किसानों और सैनिकों के बीच से ही तलाश करना सिखाते हैं, लेकिन मैंने उनकी हिदायतों का ठीक से पालन नहीं किया। ता शेंग में मुझे शिक्षक मिल गये थे लेकिन वे कोई विशेष अच्छे नहीं थे; और चूँकि वे शिक्षक बन गये थे इसलिए उन्होंने अपने लिए शिक्षकों को तलाश करना बन्द कर दिया था।" वांग युंग-मिंग इतनी ईमानदारी और सचाई के साथ कह रहा था कि उसकी बात का बूढ़े सुन पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ता जा रहा था। "तुम मेरे सबसे अच्छे शिक्षक हो; यहाँ पर सब कोई तुम्हें प्यार करते हैं। यहाँ मुझे चार महीने से ज्यादा हो गए पर यह बात मैं अभी पता लगा पाया हूँ। मैं भी अन्धा हो सकता हूँ! फिर भी हमें गलतियाँ करने से डरना नहीं चाहिए; अगर हमने गलती की है तो हम उसे सुधार भी सकते हैं। पिछले समय में मैंने गलत व्यक्तियों का उपयोग किया, इसलिए हर किसी को बुरा लगा; मैं अब यह बात जानता हूँ और अगर मैं अब भी नहीं बदलता तो वे और भी ज्यादा बुरा मानेंगे। अगर मैं बदल जाता हूँ; तो हर कोई मुझे पसन्द करेगा।...."

बूढ़े सुन को वू स्यांग ती की बात याद आई, जब समय आए तब कह देना।" उसने महसूस किया कि वह अवसर आ गया है। उसने तीव्र भावावेश में वांग युंग-मिंग का हाथ अपने चौड़े और काम से हुए खुरदुरे हाथों में पकड़ लिये। और अपने दिल में छिपी सारी बात कहने लगा। उसने कहा, "यह तुम्हारी गलती नहीं है। मैं तुमसे साफ़-साफ़ बात करने का साहस न कर सका। यह मेरा ही पिछड़ापन था, यह मेरी गलती थी। पिछले समय में हमारे बीच एक संकोचजन्य दुराव की दीवार थी आग ने मशीनों को तो जला ही दिया; उसने उस दुराव को भी जला डाला।"

लेकिन वह अब भी मज़दूर यूनियन का नेतृत्व करने से मना करता रहा। वांग युंग-मिंग ने उससे बहस की और समझाया कि बाद में वे फिर से चुनाव करेंगे और उसका जो नतीजा होगा उसे मानेंगे। अन्त

में मरम्मत के प्रश्न पर उसने बूढ़े सुन से सलाह माँगी। थोड़ी देर तक सोचने के बाद बूढ़े सुन ने कहा, "दोपहर को मैं सारे मज़दूरों को बटोरूँगा और देखूँगा कि वे सब क्या योजना बताते हैं। अगर हम उनकी सलाह नहीं लेंगे तो कुछ भी काम सफलता से नहीं हो सकेगा। क्यों? कहावत है तीन बेवकूफ़ मिलाकर एक बुद्धिमान बनता है।' जब सभी लोग होंगे तो वे जरूर कोई काम की बात निकालेंगे ही। दूसरी बात यह है कि काम पूरे समूह पर निर्भर करता है। अगर वे स्वयं निश्चय करते हैं तो वे उसे पूरा करने में कैसे असफल होंगे?"

"कोई जल्दी नहीं है," वांग युंग-मिंग ने कहा—"कोई योजना अभी मत बनाओ, लेकिन पहले जाकर सभी से मिलकर उस पर विचार करो। हम मज़दूर यूनियन का चुनाव करेंगे और जब नये पदाधिकारी चुने जायेंगे और अप्रसिद्ध व्यक्ति बदल जायंगे, तभी मजदूर बतायेंगे कि वे क्या चाहते हैं। तुम्हारी क्या राय है?"

सुन भी सहमत हो गया। पहली बार उसने महसूस किया कि आठवीं रूट सेना का तरीका और ढंग साफ़, ठीक और ठोस है।

इसके बाद वांग युंग-मिंग ने कई लोगों से बातें कीं। बातों में खास बात अपनी आलोचना होती। मज़दूर पूरे एक दिन और रात की बड़ी मीटिंग और छोटे-छोटे गुटों की बहस के बाद मज़दूर यूनियन के पुनः चुनाव के लिए तैयार हुए। चुनाव का परिणाम था कि बूढ़ा सुन सभापति चुना गया, यू स्यांग-ली संगठन का प्रधान, ल्यू-फू मज़दूर निगरानी विभाग का प्रधान और चेन सू-लिंग प्रचार विभाग का प्रधान।

जब ली-चान-चुन ने देखा कि सब अच्छे लोग चुने गये हैं तो प्रसन्न होकर उसने कहा, "चार में से मैंने तीन के लिए वोट दिया था। ऐसा तो पहले भी हो जाना चाहिए था।"

बूढ़े सुन ने भी जो सदा होता जाता है उससे खास तौर पर कोई सरोकार नहीं रखता था, सन्तोष से गर्दन हिलाई और कहा—"अब सब ठीक हुआ है।"

७

जब वू स्यांग-ती ने सुना कि दूसरी मशीन की मरम्मत आरम्भ होने वाली है तो सुनते ही डॉक्टरों की हिदायतों की परवाह किये बिना और बिना अपना बिस्तर लिये-दिये ही थोड़ी दूर एक घोड़ा-गाड़ी फिर खच्चर-गाड़ी और फिर रेलगाड़ी से सफ़र करता हुआ जादे गरडिल झील को वापस चल दिया। उसने अपने पैरों के घावों को छिलने से बचाने के लिए जूतों को न पहनकर कपड़े की मोटी गद्दी बाँध ली थी। फिर भी जब वह घर वापस पहुँच गया तो उसे पहाड़ी पर जाने के लिए ऊपर चढ़ना स्वर्ग पर चढ़ने से भी ज्यादा कठिन लग रहा था। यह वह दिन था जिस दिन मजदूरों ने अपनी यूनियन की एक मीटिंग नम्बर एक मशीन की मरम्मत की योजना पर विचार करने के लिए बुलाई थी। इस समय गरमागरम बहस चल रही थी कि यांग बन्धुओं को कैसे और क्या सज़ा दी जाय। कुछ लोग उन्हें काम पर से निकाल देने की बात कर रहे थे, कुछ उन्हें बाँधकर सरकार के पास सज़ा देने के लिए भेजने की बात कर रहे थे। वे जब उन यांग बन्धुओं के बारे में बातें कर रहे थे, जिन्होंने जापानियों से दोस्ती जोड़ी थी, तो हर एक स्वभावतः उनके दोषों की चर्चा कर रहा था। बूढ़े सुन ने सभापति होने के नाते सभी को खुलकर अपनी-अपनी बात कहने की पूरी छूट दे रक्खी थी। हालाँकि यह दूसरा ही अवसर था जब उसने आम सभा में सभापति का आसन लिया था, फिर भी उसकी ईमानदारी, धैर्य और सहनशीलता ने सभी को अपने दिल की बात साफ-साफ कहने को उत्साहित किया

सपने पूरे वेग में चल रही थी; तभी वू स्यांग-ती थकान से चूर वहाँ पहुँचा। उसका कद औसत था और उसके शरीर का गठन मजबूत था। उसका रंग साँवला था, आँखें बड़ी, घनी भवें और घुटी हुई चाँद-सी जिसमें उसकी आभा कुछ-कुछ नीली-सी थी। जब वह तेवरी चढ़ाता या शान्त रहता तो वह रूखा-कठोर लगता था, लेकिन जब मुस्करा देता तो वह मज़ाकिया और दिल-खुश लगने लगता। उसकी मुस्कराहट औरतों को हमेशा खुश करने वाली होती थी लेकिन अपनी बीबी के मरने के बाद से उसने शादी न की। जब कभी उसके पास पैसा होता तो वह लोगों को खूब खिलाता-पिलाता था, और बच्चों तथा औरतों के लिए खिलौना और केक खरीदता, इस तरह वह कभी शादी करने योग्य न हो सका।

वू स्यांग-ती का आना आशातीत था। जब लोगों ने उसे देखा तो एक क्षण के लिए मशीनों के जल जाने का उनका गुस्सा काफ़ूर हो गया और वे बड़े प्रसन्न हुए। सभी का ध्यान स्वतः ही उसकी ओर खिंच गया। बूढ़ा सुन भी भूल गया कि गम्भीर मसले पर बहस करने के लिए मीटिंग चल रही है। वह उठकर वू स्यांग-ती के पास गया और उसे बाँहों में पकड़कर उठा लिया मानो वह उसका ही अपना भाई हो, जो अरसे से उससे दूर रहा हो। वह उसे बड़ा प्यार करता था, लेकिन शब्द एक भी न कहा उसने। वास्तव में वह कहता भी तो क्या? इन पिछले कुछ दिनों में, जब से वह बाहर था, कारखाने की स्थिति इतनी बदल गई थी कि वह समझ ही न पा रहा था कि कहाँ से बात शुरू करे। जब मजदूरों ने वू स्यांग-ती के पैर देखे और आग बुझाने में उसके साहस और त्याग की याद की तो उनके दिल प्रेम और सहानुभूति से भर उठे। वे सभी पट्टियों में लिपटे उसके पैरों को देख रहे थे और बूढ़े ने तो उन पर हाथ तक फेरकर देखा।

जब फिर सब लौटकर अपनी-अपनी जगह पर जाकर बैठ गए तो ली चान-चुन वू स्यांग-ती को एक कोने में घसीट ले गया और इस

दिन की सारी घटना विस्तार से उसे बता दी। अन्त में उसने अपना सिर तुंग चिन-कुह की ओर झुकाकर कहा, "अब वह लाडला नहीं रहा।" तब चेन सू-तिंग की ओर संकेत करके बोला, "इन दिनों वह भी बहुत शान्त है।"

इस रुकावट के आ जाने के बाद किसी के पास पेश करने के लिए कोई सुझाव नहीं थे और बूढ़ा सुन उन पर दबाव डाल रहा था, "हम मशीनों की मरम्मत कैसे करें? बोलो; और हम उनसे कैसा बर्ताव करें..."

"हम और कुछ नहीं सोच सकते।..."

"सभी बातें तो आ गई हैं।"

और थोड़ी देर तक गहरी निस्तब्धता रही। उसके बाद बूढ़े सुन ने सब पर नज़र डाली और बोला, "अगर हर कोई अपनी-अपनी बात कह चुका है, तो अब मैं भी अपनी बात तुम लोगों के सामने रखूँगा और आप लोग निश्चय कीजिएगा कि उसमें कुछ तत्त्व है या नहीं। अगर उसमें कोई अच्छा तत्त्व नहीं है तो हम उसे भुला देंगे। यांग बन्धुओं के सम्बन्ध में हम सबको गुस्सा है, क्योंकि वे भूल गए थे कि वे चीनी हैं। वे जापान में ही पले और बड़े हुए थे, जापानी स्कूल में ही पढ़े और जापानी किताबों ने उनके दिमाग में जहर पैदा कर दिया था। वे हमसे घृणा करते हैं, यह उनकी गलती है, लेकिन अगर हम ज़रा सोचें, तो यह जापानियों का दोष है। जापानियों ने ही उन्हें बिगाड़ा है। दूसरी बात यह है कि वे दोनों मजदूर हैं, और हमारे नये समाज के निर्माण में योग दे सकते हैं, इसलिए हमें उनके साथ ज़रा नर्मी का बर्ताव करना चाहिए। उन्हें कहीं बाहर भेज दो। इससे भी कोई फायदा नहीं, फिर आकर मशीनों की कौन मरम्मत करेगा? मशीनों की मरम्मत लकड़ी काटना या बर्तन साफ करना नहीं है। अगर आप लकड़ी के थोड़े छोटे या बड़े टुकड़े करें तो उनसे कुछ विशेष बनता-बिगड़ता नहीं; लेकिन मशीन में बाल-बराबर अन्तर आने से मशीन

बन्द हो जायगी। बालू का एक कण भी उन्हें बन्द कर देने को काफी है। दूसरी बात यह है कि बर्तन एक जीवन-रहित चीज है और मशीनों में जीवन होता है। मशीनों के स्वभाव होता है और वे गड़बड़ी पैदा कर सकती हैं। हम बांग बन्धुओं के साथ जो चाहें सो कर तो सकते हैं क्योंकि वे हमारे कब्जे में हैं। सिर्फ बात इतनी है कि मशीनों की देखभाल फिर कौन करेगा। अगर हम उनसे नहीं सीखते तो फिर हम मशीनों की मरम्मत कैसे करेंगे?"

जब बूढ़ा सुन बोल चुका तो सभी ने उस पर बहस की। जो लोग सिगरेट पीना चाहते थे वे लोग अवसर पाकर सिगरेट का कागज और तम्बाकू लेने उठकर चले गए।

"अच्छी बात है, उन्हें मशीनों की मरम्मत करने दो, सिर्फ पहले की तरह जैसे वे जब भी मुँह खोलते थे तभी हर किसी को कोसते थे, पर रोक लगानी होगी।" त्यू-कू ने ज़ोर से सभी को सुनाते हुए कहा।

त्यू एन-युवान ने भी, जो कभी बोलता न था, महसूस किया कि उसे भी कुछ कहना चाहिए और धरती पर आँखें जमाये हुए ही बोला, "जब तक कारीगरी और लोगों के पास रहेगी तब तक हम चिल्लाये जायेंगे और कोसे जायेंगे। अगर हम नहीं चाहते कि हम चिल्लाये और कोसे जायँ तो हमें उनकी कारीगरी सीखनी होगी।"

[illegible] सुन ने भी उत्साह के साथ उसके बाद कहा, "[illegible] त्यू ने सही बात कही है; दूसरे भले न समझें लेकिन मजदूर जरूर समझेंगे। जिनके पास कोई निजी कारीगरी नहीं है उन्हें हमेशा पिछड़ना होगा।"

"[illegible] के बाद हम उन्हें घरों से हटा सकते हैं या [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]," [illegible] चान-सुन ने चिल्लाकर कहा। लेकिन [illegible] ने उसकी [illegible] [illegible] उससे पूछा, "हाँ, हम उन्हें [illegible] [illegible] हैं, लेकिन अगर मशीनें फिर टूट जाती हैं तो फिर हम क्या करेंगे?"

सभी एक-साथ बोल रहे थे, इस कारण बड़ी गड़बड़-सी मच रही थी। चेन सू-तिंग ने महसूस किया कि यह सब व्यर्थ है और मन में सोचा : 'इस तरह की बहस से कोई नतीजा नहीं निकलता। इस तरह का शोरगुल मचाकर कैसे किसी नतीजे पर पहुँचा जा सकता है ?' बूढ़े सुन के सुस्त तरीकों को देखकर वह नितान्त अधीर हो उठा, और घृणा से मुस्कराकर अपने मन में उसने सोचा—'वह एक अंगीठी की तरह है जिसमें तीन दिन से आग न पड़ी हो। यह बहस दस दिन तक चलती रहे तो भी वह परवाह नहीं करेगा। अगर मैं उसकी जगह होता तो जाकर डायरेक्टर वांग से सलाह करके मामला तुरन्त तै कर लेता। ग्रुप-बहस से फ़ायदा क्या है ?'

अब वू स्यांग-ती अपने पैर के दर्द को फिर भूल गया। सबको धक्का देकर अपना रास्ता बनाता हुआ वह सबके आगे पहुँच गया, और उसने सबको शान्त रहने को कहा। फिर अपने कन्धों को चौड़ा करके ज़ोर से बोला—"मैं भी अपनी सम्मति दे रहा हूँ। वांग बन्धुओं को मशीनों की मरम्मत करने के लिए रोकना होगा, लेकिन सिर्फ़ एक शर्त पर—जब वे मरम्मत करते रहेंगे तो हम निगरानी रखेंगे, इस तरह जब तक वे मरम्मत पूरी करेंगे तब तक हम भी काम सीख जायेंगे, और इस तरह हम यह भी देख सकेंगे कि वे सच्चे हैं या नहीं। अगर वे अच्छा काम करेंगे, तो हम उनकी सज़ा कम कर देंगे, नहीं तो हम उनको सुधारने में सहायता करेंगे। वे भी हमारे ही देश-वासी हैं। उन्हें सुधरने का एक अवसर देना चाहिए। इससे उनकी परख भी हो जायगी।"

वह अपनी बात खतम भी न कर पाया था कि सभी ने ताली बजाकर अपनी सहमति प्रकट की। बहुत से लोगों ने एक-साथ चिल्ला-कर कहा—"ठीक है।" "यह बड़ी अच्छी योजना है।" "बहुत अच्छे बूढ़े वू !" "इस बार वे ठीक पकड़ में आये।" ल्यू एह-सुआन फूला नहीं समा रहा था और जल्दी से ही वू स्यांग-ती के लिए एक कुर्सी

ले आया और उससे बैठने की प्रार्थना की। जब सब लोग थोड़ा शान्त हुए तो बूढ़ा सुन फिर बोला :

"चू ने बहुत ठीक बात कही है। इस तरह हम उन्हें अनुशासन में रख सकेंगे और साथ-ही-साथ उनकी कारीगरी भी सीख लेंगे। अगर हम मज़दूर मालिक होना चाहते हैं तो हमें सब काम सीखना होगा। अगर मजदूर मशीनों पर काबू पाना नहीं जानते, तो वे फिर कैसे वास्तविक मालिक बन सकते हैं?"

बूढ़े सुन की बात का सभी ने खुशी-खुशी समर्थन किया—"ठीक कहा तुमने।" "ठीक है, तब हमें वास्तविक अधिकारी बनना चाहिए।" किसी ने धीरे से कहा, "पर क्या वे इसके लिए तैयार होंगे?" दूसरों ने उत्तर दिया, "अगर वे तैयार नहीं होंगे तो क्या उन्हें हमसे डर नहीं है?"

"मैं चू के सुझाव में कुछ जोड़ना चाहता हूँ", बूढ़े सुन ने कहा। "कौनसी बात अच्छी है—वे हमारी निगरानी में मशीनों की मरम्मत करें या वे हमें बतायें कि हमें क्या-क्या करना चाहिए और फिर हम वही-वही करें? क्यों? अगर वे काम करते हैं और हम सिर्फ निगरानी ही करते हैं तो यह वही पुरानी कहावत होगी—'पैर में जहाँ खुजली हुई हो वहाँ जूते के ऊपर से ही खुजलाना।'

बूढ़ा सुन अपनी बात खतम करे, इसकी प्रतीक्षा किये बिना ही ल्यू [illegible] ने उसकी बात समझ ली और फिर ठहाका लगाकर [illegible] बोला—"एक कहावत मैं जानता हूँ—'करने के बाद ज्यादा अनुभव होता है बनिस्बत सुनने के।' एक बार तुम थोड़ा समझ लेते हो तो फिर जिन्दगी-भर उसे याद कर सकोगे।"

[illegible] फिर अपनी जगह पर से खड़ा हुआ और स्पष्ट शब्दों में बोला—"बूढ़े सुन! मैं तुम्हारी बात का समर्थन करता हूँ। तुम्हारा प्रस्ताव [illegible] है। जैसा तुम कहते हो हमें वैसा ही करना चाहिए।"

ताली बजाकर और चिल्लाकर सभी ने बूढ़े सुन के प्रस्ताव का समर्थन किया, फिर बूढ़े सुन ने उनकी सम्मति माँगी—"अब हमें इस पर विस्तार से सोचना चाहिए, शायद कोई और अच्छी योजना हो। ...अगर कोई और अच्छा सुझाव नहीं है तो हमें अपने सुझाव अधिकारियों की सम्मति के लिए भेजने होंगे और सहायक डायरेक्टर लु और डायरेक्टर वांग से भी सलाह करनी होगी; वे हमारे नेता हैं।"

डायरेक्टर वांग ने मजदूर-यूनियन द्वारा पास किये प्रस्तावों को मान लिया। दूसरे ही दिन सभी मज़दूरों और कारख़ाने में काम करने वाले कर्मचारियों की एक मीटिंग बुलाई गई। उसमें डायरेक्ट वांग तथा सभी मज़दूर भी मौजूद थे। यह बड़ी सफल मीटिंग हुई। यांग बन्धु मीटिंग में बड़े डरे और सहमे हुए आये थे।

पहले की सभाओं में लोगों की बोलती ही न खुलती थी, लेकिन अब हर कोई अपनी बात पहले कहने के लिए उत्सुक रहता था। मीटिंग के सभापति को वास्तव में बड़ा व्यस्त रहना पड़ता था। पिछले दिनों से सुन ने मज़दूरों और डायरेक्टर वांग से बहुत-कुछ सीख लिया था। 'यह आधा महीना पिछले पूरे अड़तालीस वर्षों से भी अधिक महत्व का था, उसने सोचा। रात में जब उसने अपनी प्रगति के बारे में सोचा तो वह मारे ख़ुशी के सो न सका। वह और लोगों की तरह ही अधिकारियों से प्रेम करने लगा था। 'वास्तव में कम्युनिस्टों में कुछ बहुत ही योग्य व्यक्ति हैं।' विशेष तौर पर वह कम्युनिस्टों को अपनी गलतियों को सुधारने के उत्साह और साहस की सराहना करता था। उसने अपने अँगूठों को ऊपर उठाते हुए मन में कहा, 'महान्, महान्! जो अपने को सुधारने के लिए तैयार हैं, वे कभी गलत रास्ते पर नहीं जा सकते। वे उसके सहारे हमेशा सुरक्षित रहेंगे।'

यह सभा पूरे दिन तक चलती रही और शुरू से अन्त तक हर एक पूरे उत्साह से उसमें भाग लेता रहा। बूढ़ा ल्यू भी, जो कभी अपना

मुँह नहीं खोलता था, बोल पड़ा, "मंचूकू अब पूरी तरह समाप्त हो गया। अब यह सचमुच जनवाद है। हम यह दिन कभी न देख पाते अगर जनरलइस्सिमो स्तालिन ने जापानियों को भगाने में हमारी सहायता करने के लिए अपनी सेनाएँ न भेजी होतीं और अगर कम्युनिस्टों ने हमें नेतृत्व न दिया होता।" नटखट साओ वान-फा और माओ यी-च्यांग मीटिंग के दौरान में सोने नहीं गये और हर एक की बात ध्यानपूर्वक सुनते रहे और जब और सब ताली बजाते तो वे भी ताली बजाते। श्रीमती चांग ने और औरतों को जमा करके खुशी-खुशी चाय तैयार की। इस समय तक आठ मजदूरों का परिवार वहाँ आ गया था। ये औरतें साफ कपड़े पहने थीं और प्यालों में चाय डाल रही थीं। चू नू-धेन की जवान बीवी ने भी अपने पति की नाराजगी की फिकर न की और मीटिंग में आ गई। वह भी चाय डाल रही थी। एक बार गुस्से से देखते हुए श्रीमती चांग ने यांग फू-तिन के पैरों के पास ही थूक दिया।

सभा ने नम्बर एक मशीन की मरम्मत आरम्भ करने की तिथि निश्चित कर दी और मजदूरी में होड़ का प्रस्ताव रखा। अन्त में डायरेक्टर यांग बोले। उन्होंने अपनी आलोचना की और मजदूरों की शक्ति की सराहना की। उसने [illegible] की विशेष रूप से सराहना की; उन्होंने पुराने कारीगर मजदूरों के महत्व पर भी विशेष जोर दिया। "पुराने समाज में लोग व्यक्तिगत ईर्ष्या के कारण अपनी कारीगरी को छिपाकर रखते थे, क्योंकि उन्हें डर था कि दूसरे लोग उसे चुरा ले जायेंगे। ऐसी कारीगरी कभी पूर्ण नहीं होती थी। नये समाज में हर किसी को [illegible] में कुछ नया [illegible] करे। हमें बड़े-बड़े लोगों में [illegible] स्थान प्रदान करना चाहिए। [illegible] बड़े-बड़े कारीगरों की [illegible] सकें।" अन्त में [illegible] सराहना की और उसने

भी मज़दूर-यूनियन में अपना औरतों का एक छोटा-सा ग्रुप बनाकर मर्दों के साथ मिलकर बिजली-उत्पादन में अपनी शक्ति का योग देने के लिए शामिल होने की अपील की।

वांग से पहले बूढ़े सुन के दिमाग में भी यही विचार आया था। वास्तव में यह बड़ी अजीब बात थी कि जब उन्हें किसी ने बुलाया नहीं था तब तो वे अपने-आप आई थीं और जब उन्हें आने की दावत दी गई तो सब शरमा कर पीछे हट गईं। जब डायरेक्टर वांग ने मज़दूरों की राय ली कि औरतों के ग्रुप का वे स्वागत करते हैं या नहीं, तो सभी ने ताली बजाकर इनका स्वागत किया। सिर्फ़ चू जु-चेन कनखियों से अपनी बीवी को देखकर कोस रहा था।

उस समय का दृश्य बड़ा दिलचस्प था, जिस समय उनसे अपना नेता चुनने को कहा गया। वे आपस में धीरे-धीरे इस समस्या पर बहस करने लगीं।

श्रीमती ल्यू ने श्रीमती चांग की ओर संकेत करके कहा, "हम इसी को चुन लें।"

"ठीक है, इससे ज्यादा योग्य और कोई है भी नहीं," किसी और ने समर्थन करते हुए कहा।

"देखो मना मत करो श्रीमती चांग, बस हामी भर दो," दूसरी ने कहा।

श्रीमती चांग ने रुष्ट होकर श्रीमती ल्यू के दो-चार चाँटे भी रसीद कर दिए और श्रीमती ली की चुटकी काट ली। बहर हाल अन्त में उसे हामी भरनी ही पड़ी और तालियों के बीच उसने कहा, "मैं ऐसा काम कैसे ले सकती हूँ? अगर तुम लोग किसी ऐसे को चाहते हो जो पढ़ सके तो श्रीमती ली उस योग्य हैं और दूसरी भी बहुत सी ऐसी हैं जो मुझसे योग्य हैं। लेकिन वे तो मुझ-जैसी व्यर्थ और अयोग्य को ही चुनेंगी..." बोलते समय उसे अपने पर विश्वास-सा हो आया और उसने सिर उठाकर सभी औरतों की ओर देखा, "औरतों का

भी अब अपना ही नाम होना चाहिए। अब हम सब आज़ाद हैं। हम सबका अपना-अपना नाम होना चाहिए। मेरा स्वयं का घर का नाम तंग है मुझे 'उनके' नाम के आधार पर चांग कहकर क्यों पुकारा जाय?"

वह अपनी बात खतम भी न कर पाई थी कि बीच में ही सब लोग ज़ोर से हँस दिए। श्रीमती चांग झेंप गई। फिर उसने वाङ्ग पुङ्ग-मिङ्ग से पूछा, "क्या आप मेरे लिए एक नाम नहीं चुन देंगे? कोई फूल घास या वैसा नहीं, मेरा कोई और स्वतन्त्र नया-सा नाम बताइए; और सभी दूसरों के भी नये नाम बताइए।......"

"सिन हुआ (नया चीन) नाम कैसा रहेगा?" वांग युंग-मिंग ने मुस्कराते हुए खड़े होकर कहा, "क्यों? भूतकाल से पुराना चीन था, तब मंचूकू; पर उनमें से कोई भी अच्छा नहीं था, वे सभी जनता का शोषण करते थे। अब नया चीन है, जनवादी चीन जिसमें जनता का राज्य है। इसलिए अगर तुम्हारा नाम सिन हुआ रक्खा जाय तो इसके अर्थ होंगे कि तुम आज़ाद हो।"

फिर सबने ज़ोर से ताली बजाई। दूसरी औरतों ने भी वांग, सहायक डायरेक्टर ल्यु और ली सी-त्यान से अपने-अपने नामों के बारे में पूछा।

जब शाम होने को हुई तब कहीं जाकर मीटिंग समाप्त हुई।

इस बार मरम्मत का काम नितान्त भिन्न वातावरण में ही आरम्भ हुआ। नाश्ते के बाद बिगुल बजा तो हर ग्रुप-नेता ने अपना ग्रुप मशीन-घर में काम आरम्भ करने के लिए जमा किया। कोई पीछे रहने का साहस न कर सका। यांग बन्धुओं ने मज़दूरों को मशीनों की जाँच कराई और उसके हर अंग और उसके संचालन तथा काम को समझाया। यह भी समझाया कि उसमें क्या खराबी है और कैसे उसकी मरम्मत की जाय। फिर मज़दूर अपने-अपने काम पर जुट गए—सफाई, धुलाई मशीन के हिस्सों की खुलाई, फिर उनको फिट करना। जब दुबारा साफ़

और ठीक करने के बाद मशीन के पुर्जे फिट किये जाते तो दूसरे मज़दूर भी देखते कि कैसे उन्हें फिट किया जाता है। शुरू में तो यांग बन्धुओं ने मशीन और उसके पुर्जे के बारे में मज़दूरों को साधारण-सी ही जानकारी कराई लेकिन मज़दूरों के सवालों के सामने उनकी एक भी चाल न चल पाई और उन्हें बाद में अपना तरीका बदलना ही पड़ा।

शाम को अब भी क्लासें होती थीं। लेकिन हफ्ते में सिर्फ तीन दिन। महीने के अन्तिम हफ्ते में हर एक के काम की प्रगति का लेखा-जोखा करने के लिए ही एक क्लास होती थी। उस क्लास में काम की अच्छाई-बुराई आदि सभी पहलुओं पर जनवादी ढंग से खुलकर बहस होती। बूढ़ा सुन-ल्यू-फ़ू और चेन सू-तिंग बारी-बारी से राजनीति पर क्लास लेते थे, ली सी-स्यान संस्कृति पर और लू पिंग-चेन, जिसका दकियानूसीपन डायरेक्टर वांग ने खतम कर दिया था, अपनी इच्छा से ही कारीगरी पर क्लास लेता था। मज़दूर-यूनियन ने औरतों के ग्रुप को भी राजनीति वाली क्लास में शामिल होने की प्रार्थना की।

श्रीमती चांग बड़ी जोशीली और मेहनती औरत थी। ग्रुप-लीडर चुन लिये जाने के बाद और कम्युनिस्ट सिद्धान्तों को काफ़ी जान-सुन लेने पर वह काफी प्रगतिशील और खुले विचारों की हो गई थी।

मीटिंग खतम होने के बाद चूजू-चेन ने अपनी बीवी को मीटिंग में जाने, चाय ढालने और औरतों के ग्रुप का सदस्य होने पर डाँटा, क्योंकि उसे उसकी यह सब बातें पसन्द न थीं। पिछले समय में तो सिवाय चुपचाप आँसू बहाने के वह एक शब्द कहने का भी साहस न करती, लेकिन चूँकि अब औरतों का अपना संगठन था, इसलिए अब वह पहले से ज्यादा निडर थी। जब उसके पति ने उसे मारना-डाँटना आरम्भ किया तो वह ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगी। चिल्लाहट सुनकर श्रीमती चांग और दूसरी औरतें उसकी मदद को और झगड़ा शान्त करने के लिए वहाँ पहुँच गईं। उन्होंने भी चूजू-चेन की भर्त्सना की, कुछ तो मज़ाक में और कुछ गम्भीरता से। उसे वहाँ से बबड़ाकर

उस पहली बड़ी मीटिंग के बाद से सभी तालियाँ बजाना सीख गए थे और साधारण बात पर वे अपनी सहमति प्रकट करने के लिए तालियाँ बजा दिया करते थे। औरतें तो और भी बजाती थीं, क्योंकि वे समझती थीं कि तालियाँ बजाना आधुनिकता की निशानी है।

तुंग ने प्रस्ताव तो रख दिया पर बाद में उसे बड़ा पछतावा हुआ, क्योंकि उसका परिवार ही सबसे ज्यादा चद्दरें उठाकर ले गया था। दूसरे दिन सूर्य निकलने से पहले ही वह गाँव गया और अपने पिता से चद्दरों को छिपाने की चेतावनी दे आया। "लेकिन और किसी से कुछ कहने का साहस मत करना," यह भी उसने चेतावनी दे दी। फिर भी उसके पिता ने उसके छोटे भाई और भतीजे के परिवार वालों से भी कह दिया। इन परिवारों ने चुपचाप अपने मित्रों से कह दिया और उन दोस्तों ने अपने दोस्तों से। परिणाम यह हुआ कि गाँव में सिर्फ़ दो ही परिवार ऐसे बचे थे जो इस बारे में कुछ नहीं जानते थे। चेन सू-तिंग भी कोई मूर्ख न था। उसे डर था कि खबर फैल सकती है इसलिए नाश्ता करते ही पान यूशान को साथ लेकर और एक कई फ़ीट लम्बी रस्सी लेकर गांव जा पहुँचा। उसने पहुँचते ही एक परिवार को बीच में पकड़ लिया जो चद्दरें छिपाने जा रहा था। चेन सू-तिंग ने उससे बड़ी नर्मी के साथ कहा—"मेरे मित्र, ये चद्दरें हमारे कारख़ाने की हैं। हम इन्हें कारखाने की मरम्मत करने के लिए वापस ले जाना चाहते हैं। अब हमारा देश मंचूकू ज़माने के देश का-सा नहीं है। सेना और जनता अब एक परिवार के समान हैं और जो भी जनता की सम्पत्ति है वह दे देनी चाहिए।"

गाँव वाले ने जवाब दिया कि उसने ये चद्दरें सी ल्यांग चेन से खरीदी हैं। "व्यर्थ की बातें मत करो," चेन सू-तिंग ने कहा, "इस गाँव में जितनी लोहे की चद्दरें हैं वे सभी बिजली के कारखाने की हैं। जब हमें उनकी जरूरत नहीं थी तो कोई बात नहीं थी कि तुम लोग

उन्हें इस्तेमाल करते रहे। लेकिन अब कारखाने की छत की मरम्मत करने के लिए हमें इनकी जरूरत है।" यह कहते हुए उसने पान यू-शान से चद्दरों को बाँधने को कहा। गाँव वाला जानता था कि वह गलती पर है और उसे सभी चद्दरें देनी होंगी। वे लोग घर-घर गये और उन्होंने देखा कि सभी सूअरों, भेड़ों और मुर्गियों के बाड़े, जिनमें चद्दरें लगी थीं, टूटे पड़े थे। और कुछ ने तो पहले से ही उनके स्थान पर नये लकड़ी के तख्ते या घास-फूस जमा दिए थे। 'यह तो अजीब बात है! इन लोगों ने उन्हें छिपा क्यों दिया? क्या किसी ने उन्हें पहले से खबर दे दी थी?' चेन-सू-तिंग ने सोचा। आगे जाकर उसने एक घर और पाया जिसने चद्दरें नहीं उतारी थीं। चेन सू-तिंग ने उस गाँव वाले को परिस्थिति समझाई और चद्दरें ले जानी चाहीं। पर उसने नहीं ले जाने दीं और चिल्लाने लगा—"ठीक है कि ये कारखाने की थीं पर ये मेरी हैं। उस समय तुमने इनकी देखभाल क्यों नहीं की थी? मा यू-शान बहुत सी ले गया। उससे वापस देने को क्यों नहीं कहते? हम मानते हैं कि हम लाये, लेकिन अगर तुम उन्हें वापस ले जाते हो तो मेरे सूअर खतम हो जायँगे।" उसकी बीवी भी चिल्लाती हुई घर से बाहर निकल आई। चेन सू-तिंग को खतरा पैदा हुआ कि वहाँ एक काण्ड खड़ा हो जायगा। इसलिए उसने इसे बुरा काम समझकर छोड़ दिया और पान यू-शान के साथ-साथ थोड़ी सी चद्दरें लेकर कारखाने वापस लौट गया।

उस शाम को क्लास में चेन-सू-तिंग ने सबको सारी घटना सुना दी; हर कोई उस प्रश्न पर बहस करना चाहता था, तभी बूढ़े सुन ने कहा—"बहस रहने दो इस समय आज और मुझे जाकर कोशिश करने दो, अगर मैं भी कामयाब न होऊँ तब हम एक-साथ इस पर बहस करेंगे।"

सभापति सुन की बात सुनकर सभी लोग शान्त हो गए और फिर क्लास चलती रही।

उस शाम जब काम समाप्त हो गया तो बिना खाना खाये ही

तुरन्त घर की ओर वापस लौटीं। श्रीमती चांग ने सोचा कि बादल हलका-सा है और तेज पानी नहीं बरसेगा, और अगर हवा चली तो हो सकता है कि बिलकुल ही न बरसे। इसलिए उसने लौटते समय भी कुछ चीज़ें जमा करते हुए चलने का प्रस्ताव रक्खा। उन्होंने अपने काम का बँटवारा कर लिया। श्रीमती चांग को कुकुरमुत्ता जमा करने का काम सौंपा गया। वह घास में उन्हें इधर-उधर तलाश करती हुई अकेली चली। शुरू में तो उसे दूसरों के हँसने की आवाज़ सुनाई देती रही लेकिन जल्दी ही वह उनसे दूर निकल गई। जब उसने कुकुरमुत्तों से अपनी डोलची भर ली तो उसे सन्तोष हुआ और घर वापस जाने के लिए दूसरों को तलाश करने लगी। लेकिन जैसे ही वह दूसरी औरतों को देखने के लिए एक जगह पर खड़ी हुई उसे कुछ आदमियों की आवाज़ सुनाई पड़ी। उसे इतना डर लगा कि वह एक पेड़ के तने के पीछे छिप गई। उसे साँस लेने का भी साहस नहीं हो रहा था।

"मुझे माफ करो! तुम मुझे घुटनों के बल झुका सकते हो; पर मैं यह करने का साहस नहीं कर सकता।" निश्चय ही यह तुंग की आवाज़ थी।

"इस समय हम दबे हुए हैं और तुमसे समझौता करने के लिए प्रतीक्षा नहीं कर सकते। हमारे गुप्त संगठन के नियम के अनुसार संगठन में तुम्हारा चौबीसवाँ नम्बर है। इस तरह मैं तुम से बड़ा हूँ।" एक अधेड़ उम्र का आदमी बोल रहा था, "अगर तुम चाहते हो तो इसे करो...अगर तुम नहीं करते, तो हो सकता है तुम बच निकलो, पर तुम्हारा परिवार बचकर नहीं निकल सकता, बूढ़े और जवान वे दर्जनों एक-न-एक दिन देर-सबेर हमारे हाथों पड़ेंगे ही। और अगर तुम यह काम सफलता से कर देते हो तो कुमिन्तांग सरकार तुम्हें इनाम देगी।"

"यह बात नहीं है कि मैं नमकहराम हूँ, बात सिर्फ इतनी ही है कि मैं डरता हूँ। वे जल्दी ही मुझे पकड़ लेंगे और फिर मैं मुसीबत में पड़ जाऊँगा।"

यह फिर तुंग की काँपती हुई आवाज़ थी। "तुम जाकर मेरे भानजे से बात करो, वह..."

"तुम तुम हो, तुम्हारा भानजा तुम्हारा भानजा है; वह मशीन-घर में नहीं है," दूसरे ने कहा। "तुम्हें डर किस बात का है? यह कोई तलवार और बन्दूक चलाने की बात तो है नहीं। सभी लोग खाकर मस्त बेहोश पड़े होंगे। जैसे ही तुम राइफिल छूटने की आवाज़ सुनना उस पुर्जे को घुमा देना। यह सब काम तो अँधेरे में होगा।"

"लेकिन देखिए टेलीफोन का कनेक्शन लगा हुआ है, इसलिए अगर वे शहर से सम्बन्ध नहीं जोड़ सकते तो वे सी ल्यांग ची से तो सम्बन्ध स्थापित कर ही लेंगे और जब वे सेना बुला लेंगे तो तुम भी..." तुंग ने चालाकी से बात टालनी चाही।

"तुम चिन्ता मत करो। कोई-न-कोई टेलीफोन की भी चिन्ता कर ही ली जायगी।"

"अब बहुत हो गया। उससे अब और तर्क करने की ज़रूरत नहीं है," अधेड़ उम्र के आदमी ने कहा, "बूढ़े तुंग, देखो! अगर तुम आज सहमत हो जाते हो तो ठीक है; अगर नहीं तो तुम वापस नहीं जा सकते। क्या तुम समझते हो कि जब हमने तुमको अपने गुप्त संगठन में शामिल कर लिया है तो क्या अब हम तुम्हें वापस जाने देंगे?....अगर हम ऐसा करें तो फिर अभी तक हम आठवीं रूट सेना से कैसे लड़ सके होते।"

तब श्रीमती चांग ने उनकी आपस की धीरे-धीरे फुसफुसाहट सुनी और तब तक राइफिल छूटी और फिर एक काँपती हुई प्रार्थना—"मैं सहमत हूँ। तुमने मेरे लिए और कोई रास्ता ही नहीं छोड़ा है.... दूसरा रास्ता सिर्फ यही है कि मैं मर जाऊँ...मर जाऊँ...मेरे बूढ़े गरीब बाप की ओर तो देखो! मेरा गरीब..."

"यह सब मरने-वरने की क्या बात है! तुम नहीं मरोगे!"

"याद रखना, अँधेरा हो जाने पर नौ बजे के बाद, जब तुम राइ-

फिल की पहली आवाज सुनो, अपनी चिन्ता करना।...अभी यह रुपये फिल-हाल के लिए रख लो।..."

जब श्रीमती चांग ने इस सारी बात के महत्त्व को समझा तो वह कुपित हो उठी और घास पर गिर पड़ी, बदमाशों के चले जाने के करीब आध घण्टे बाद उसने उठकर इधर-उधर निगाह डाली, और जब देखा कि अब वहाँ कोई नहीं रहा, तो उसने अपनी डोलची उठाई और अपनी धड़कन को ठीक करने के लिए दाँत किटकिटाये और फिर जितनी तेज़ी से हो सकता था उतनी तेज़ी से वह घर की ओर भागी। रास्ते में ही पानी बरसने लगा लेकिन उसका भाग्य अच्छा था कि तुंग कहीं रास्ते में नहीं मिला। दूसरी औरतों ने उससे देरी से आने का कारण पूछा तो उसने सही बात न बताकर गढ़कर एक कहानी बता दी। फिर वह आकर अपने कमरे में छिप गई। उसे समझ में ही न आ रहा था कि वह क्या करे। वह चीखना चाहती थी। उसने अपने पति को बुलाने की सोची। फिर उसने सोचा कि उसे किसी भी कीमत पर यह सारी घटना अपने पति से नहीं बतानी चाहिए, क्योंकि उसका स्वभाव ऐसा ही है कि वह सुनते ही तुंग से लड़ने लगेगा और फिर उसका तीन का परिवार बरबाद हो जायगा, और कारखाने की भी रक्षा न हो सकेगी। "यह तो सभी के विचारने की बात है; मुझे सभी को बात बता देनी चाहिए और फिर तुंग से इस विषय में जबाब तलब किया जाना चाहिए।" पर उसे इस विचार से भी सन्तोष नहीं हुआ। "तुंग तो साफ मुकर जायगा और कारखाने की रक्षा फिर भी न हो सकेगी।"

उसने फिर सोचा, "बूढ़ा सुन बुद्धिमान है। सभी उस पर विश्वास करते हैं और डायरेक्टर वांग की राय भी उसके बारे में ऊँची है। मान लो अगर मैं उसे बता ही देती हूँ...?" उसने महसूस किया कि यही ठीक रहेगा। तब फिर उसने अपने मन में ही तर्क-वितर्क किया, "वह मज़दूर-यूनियन का सभापति है। मुझे उसे ही बताना चाहिए। यह

जिन्दगी और मौत का सवाल है, और मैं औरतों के संगठन की नेता हूँ।...."

इस तरह वह अपने कमरे में पड़ी-पड़ी देर तक अपने-आप से तर्क-वितर्क करती रही। लेकिन जब उसने सुन से बता देने का निश्चय कर लिया तो उसका जी कुछ हल्का हुआ और वह सुन से मिलने के लिए जाने को तैयार हुई। तभी श्रीमती ल्यू ने उसे यह पूछने के लिए रोक लिया कि सुअर का गोश्त किस प्रकार से पकाया जाय, सिर्फ नाम चार को उससे थोड़ी बात करने के बाद वह तेज़ी से मज़दूर-यूनियन के दफ्तर की ओर लपकी। बूढ़ा सुन वहाँ बैठा था, लेकिन वहाँ उसके पास छोटा सुंग ली, सी-स्यान और चेन सू-तिंग भी बैठे थे और उत्सव मनाने की योजना पर ही सोच-विचार कर रहे थे। भीतर घुसते ही उसने यों ही पूछा: "ओह, क्या चांग यहाँ नहीं है?"

किसी ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। वह वहाँ से बाहर निकलकर काफी देर तक इधर-उधर घूमती रही। जब वह वापस लौट रही थी तो अपने विचारों में मग्न तेज़ी से आ रही थी। उधर से ली सी-स्यान भी अपने विचारों में मग्न तेज़ी से आ रहा था और दोनों ही आपस में ज़ोर से टकरा गए। श्रीमती चांग ने मन-ही-मन अपने को कोसा पर जबर्दस्ती चेहरे पर मुस्कराहट लाकर बोली, "तुम बहुत व्यस्त हो!"

"हाँ, सचमुच!" ली सी-स्यान ने हँसते हुए अनिच्छा से जवाब दिया।"

"क्या चांग अभी तक नहीं आया?" श्रीमती चांग ने फिर कमरे में घुसते हुए पूछा।

"मेरी अच्छी लड़की, अभी तो चिराग भी नहीं जले हैं और तुम अभी से उसके लिए प्रतीक्षा में पागल हो उठीं?" एक जवान औरत को देखकर बूढ़े सुन को जरा मजाक करने की तरंग आई और वह स्वयं को भी जवान महसूस करने लगा। "यहाँ आओ, औरतों के गुट

को भी उत्सव मनाने की बहस में हिस्सा लेना चाहिए। औरतों को भी उसमें बहुत-कुछ काम करना है।"

"बाबा, मेरा मज़ाक मत बनाओ; मुझे चांग को जाकर तलाश करना चाहिए, उससे मुझे कुछ काम है। हम लोग घर पर व्यस्त हैं। उत्सव के सम्बन्ध में यही अच्छा रहेगा कि तुम लोग ही सब-कुछ तय कर दो। हम औरतों से आप क्या अच्छे सुझावों की आशा करते हैं ?" वह उद्विग्न-सी घर लौटकर बच्चे के बगल में ही पड़ रही। काफी देर बाद उसने बाहर पैरों की आवाज़ सुनी।

"तुम चांग के लिए इतनी उतावली क्यों थीं ? उससे क्या काम है ? अगर कुछ काम मेरे करने का है तो आओ मैं ही कर दूँ। तुम लकड़ी चिरवाना चाहती हो या पानी भरवाना, बोलो क्या काम है ?"

किसी को बोलते सुनकर वह उठ बैठी। उसने बूढ़े सुन को कमरे में खड़ा पाया।

"ओह ! कोई काम तो नहीं है। मैं लकड़ी चीरने या पानी भर देने के लिए तुम्हें कैसे कष्ट दे सकती हूँ ? नहीं, मैं चांग को नहीं तलाश कर रही थी, मैं तो तुमसे ही कुछ पूछना चाहती थी। मैंने एक सपना देखा है—मैं समझती हूँ कि वह एक सपना ही था।"

"तुम बड़ी उद्विग्न-सी दीख पड़ रही हो; आखिर मामला क्या है ? मैं तो तुम्हें देखने ही आया था। क्या तुमने फिर किसी को अफवाहें उड़ाते सुना है ?"

बूढ़े सुन के बोलने में पिता का प्यार टपक रहा था। श्रीमती चांग ने जंगल में जो बातें सुनी थीं सब विस्तार से कह दीं और साथ ही उसके हृदय में जो द्वन्द्व मचा हुआ था वह भी बता दिया। सुन गम्भीरता से सारी बात सुनता रहा और बीच-बीच में सिर हिलाता जाता था। वह अपनी ओर से एक शब्द भी नहीं बोला। उसे कुछ न बोलते देखकर श्रीमती चांग के दिल में फिर शंका उत्पन्न हुई—"क्या मैंने वास्तव में सपना ही देखा था।"

"तुम वास्तव में बड़ी अच्छी औरत हो, सचमुच बड़ी अच्छी लड़की हो। तुम दरअसल एक अच्छी मजदूर की औरत हो।" बूढ़े सुन ने हाथ बढ़ाकर गहरी नींद में सोते बच्चे पर से मक्खियाँ उड़ाईं और अपनी बात जारी रक्खी—"डायरेक्टर वांग से इस विषय में रिपोर्ट करनी होगी। मुझे ऐसे मामलों का कोई अनुभव नहीं है। मैं नहीं जानता कि क्या करना अच्छा होगा।" पहले तो उसने सोचा कि वह स्वयं ही शहर जाय, लेकिन तुरन्त ही उसने सोचा कि अगर वह श्रीमती चांग को यहीं अकेला छोड़ जाता है तो हो सकता है कि वह अपनी ज़बान पर काबू न रख सके और खबर सभी को बता दे या अपना सन्देह ली सी-स्यान या तुंग पर ही प्रकट कर दे। इससे तो सारा मामला ही बिगड़ जायगा। इसलिए उसने उसे भी साथ ले जाने का निश्चय किया। वह डरता था कि कहीं उसकी भावना को ठेस न पहुँचे इसलिए उसने उसे अपने विचार सही-सही न बताकर दूसरी तरह से बात घुमाकर कही—"डायरेक्टर वांग इतना विस्तार से पूछताछ करते हैं और मैं विस्तार में बातें समझाकर कहने में इतना बुद्धू हूँ कि मुझे अपने पर विश्वास नहीं होता कि जब वे मुझसे इस-उसके बारे में प्रश्न करेंगे तो मैं उन्हें सही-सही सन्तोषप्रद उत्तर दे पाऊँगा। अच्छा हो कि तुम स्वयं ही जाओ तो तुम सारी बातें विस्तार से उन्हें बता सकोगी। मैं भी तुम्हारे साथ चला चलूँगा। तुम क्या सोचती हो?" उसने जान-बूझकर श्रीमती चांग को सोचने का अवसर दिया, तब शंका से कि वह अब भी निश्चय नहीं कर पा रही है उसे फिर समझाते हुए उसने कहा : "तुम गढ़कर एक कहानी बता सकती हो कि बच्चा बीमार है और चूँकि मैं शहर जा रहा हूँ तो तुम इस अवसर का फायदा उठाकर मेरे साथ बच्चे को किसी डॉक्टर को दिखाने के लिए जा रही हो। हम खाने से पहले ही तुम्हारे पति को बिना बताए ही जा सकते हैं। तुम क्या कहती हो? इससे दरअसल तुम्हें बड़ा श्रेय मिलेगा।"

यह सुनकर श्रीमती चांग इतनी भावावेश से विभोर हो गई कि

थोड़ी देर तक तो उसके मुँह से बात ही न निकली और यूनियन के सभापति के कुर्ते की बाँहों को मरोड़ती रही। थोड़ी देर बाद वह बोली—"तुम्हारा कारखाना एक जहाज की तरह है, यहाँ के औरत-मर्द, बच्चे-बूढ़े और जवान सभी उस जहाज पर यात्री के समान हैं और तुम हो उसके अच्छे कप्तान। तुम्हारे-जैसे अच्छे अनुभवी कप्तान के रहते हमें अन्धड़ और लहरों से डरने की कोई आवश्यकता नहीं! तुम्हारे साथ...."

अपने दाँत सख्त करके उसने अपने बच्चे को, जो प्यारी गहरी शांति की नींद सो रहा था, जोर से एक चुटकी काट ली। बच्चा बिलबिलाकर जोर से चीख पड़ा और पूरे जोर से रोने-चिल्लाने लगा। बूढ़े सुन ने इस अवसर पर कहना आरम्भ किया कि बच्चे के पेट में जरूर जोर का दर्द हो रहा है, और झटपट उसके लिए थोड़ा पानी गर्म करने लगा। श्रीमती चांग आसपास की औरतों को भी जताने के लिए इधर-उधर दवा की तलाश में दौड़ी, फिरी। बच्चा कच्ची नींद में ही चौंककर जाग पड़ा था और अब इन सबको अपने आसपास जमा देखकर और भी सहमकर जोर-ज़ोर से चीखने लगा। जब वहाँ और लोग-बाग भी जमा हो गए तो बूढ़े सुन ने कहा कि अब वह जाता है, क्योंकि उसके शहर जाने का समय हो गया। इस पर किसी ने श्रीमती चांग को सुझाया कि वह भी सुन के साथ बच्चे को लेकर शहर चली जाय और उसे किसी डॉक्टर को दिखा दे। श्रीमती चांग ने जान-बूझकर थोड़ी देर आगा-पीछा किया और हिचकिचाहट प्रकट की और बाद में सहमत हो गई। आध घण्टे बाद वे लोग जादे गरडिल झील से चलकर सी ल्यांग-चेन के लिए रेल पकड़ रहे थे।

जब डायरेक्टर वांग पूरी कहानी सुन चुके तब भी उनके चेहरे पर आश्चर्य और उद्विग्नता की एक भी शिकन न आई और सदैव की तरह शान्ति से सिर हिलाते रहे। सुन को उनके इस व्यवहार से

आश्चर्य हो रहा था। उसने अपने मन में कहा, 'मालूम होता है इन्हें पहले ही पता लग गया है।'

डायरेक्टर वांग ने श्रीमती चांग से वहीं रुके रहने की प्रार्थना की और अपनी बीवी से बच्चे की और इनकी देखभाल करते रहने को कहा और स्वयं सुन से बातें करने के बाद इस सम्बन्ध में गेरिजन केन्द्रीय दफ्तर से बातचीत करने के विचार से काफी रात गए पार्टी की स्थानीय कमेटी के दफ्तर गये। उस रात वह सो नहीं सके। दूसरे दिन उन्होंने फिर से बात की और उससे वापस जाकर उत्सव का सब प्रबन्ध ठीक करने के लिए कहा। उन्होंने उसे कुछ चीजों से चौकन्ने रहने की भी चेतावनी दी।

डायरेक्टर वांग से बातचीत करने पर सुन ने वर्गों और पार्टी के बारे में और भी गहराई से और साफ-साफ समझा। उसने समझा कि दो वर्गों के बीच किस तरह अन्त तक तगड़ा संघर्ष होता रहता है। उसने कारखाने की रक्षा करने के भी कई तरीके जाने। उसने चलते-चलते डायरेक्टर वांग से फिर एक बार प्रार्थना की कि वह कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य होना चाहता है।

उत्सव पूर्व योजना के अनुसार ही हुआ। डायरेक्टर वांग कमिश्नर हो और सेनापति वू गेरिज़न केन्द्रीय दफ्तर के बड़े अफसर को लेकर जादे गरडिल झील पहुँचे। लु ल्यू-ई भी पहली बार वहाँ आई और उन्हीं के साथ श्रीमती चांग भी और उसका बच्चा भी। श्रीमती चांग ने लु ल्यू-ई से बहुत-सी नई बातें, नए विचार सीखे। पिछले तीन दिनों से वह इतनी सकपका रही थी जितना पहली बार मोर्चे पर गया हुआ सिपाही खोया-खोया-सा हो जाता है। उद्विग्नता, व्यग्रता, जोश, खुशी, डर और उत्सुकता सभी भाव एक-साथ उसके दिल में उठ रहे थे। "क्या मैं आठवीं रूट के स्तर के आधे के बराबर भी हूँ ?"

चेन सु-तिंग और दूसरे जवान मजदूरों की मेहनत का ही श्रेय था कि पुराना टूटा पड़ा सभा-भवन बड़े सुन्दर ढंग से ठीक-ठाक कर

कागज के रंग-बिरंगे फूलों, रंग-बिरंगे कागजों पर लिखे नारों से खूब सजाया गया था। स्थानीय पार्टी कमेटी ने एक नारा लिखवाकर लगाने को भेजा था—"जनता की बिजली का जाल फैला दो। जनता के बिजली-उद्योग का विकास करो।" गेरिजन केन्द्रीय दफ्तर ने पीले रेशमी कपड़े पर लिखाकर एक नारा भेजा था—"लड़ाई जीतो, मोर्चे की अगली पंक्ति की सहायता के लिए उत्पादन बढ़ाओ; मोर्चे के पिछवाड़े को मजबूत करने के लिए बिजली का जाल फैला दो।" "मजदूर ही विश्व-संस्कृति के निर्माता हैं। सर्वहारा के नेतृत्व में सिर्फ जनता की सरकार ही मजदूरों के हितों की रक्षा कर सकती है और उनके उत्पादन तथा निर्माण की शक्ति को बढ़ा सकती है।" यह राजनीतिक केन्द्रीय दफ्तर से भेंट आई थी। बधाई के पत्र तो शहर से अनेकों को आये थे। दूसरी बिजली कम्पनियों, बिजली-घरों, मेटल के कारखानों और लकड़ी के मिलों से भी बधाई के सन्देश आए थे।

सभी नेताओं ने अपने कारखानों में बताया कि कारखाने के निर्माण और सफलताओं का सारा श्रेय मजदूरों को है और सभी ने बूढ़े सुन के उत्साह और मशीनों की रक्षा करने की बुद्धिमानी की भूरि-भूरि सराहना की। मीटिंग में डायरेक्टर वांग ने अपनी आलोचना भी की कि उन्होंने जनता की नीति नहीं अपनाई थी। जैसे उसने बोलना बन्द किया कि ली चान-चुन अपने पैरों पर उछल पड़ा और बोला—"सभापति सुन, मुझे भी कुछ कहना है।" डायरेक्टर वांग ने जो-कुछ कहा है वह सही नहीं है; वह हर चीज का दोष अपने ऊपर कैसे ले सकते हैं? हम मजदूरों का भी तो दोष है; उस समय तक हम में उतनी चेतना नहीं आई थी, हम जनवादी नहीं हुए थे, हम जो-कुछ महसूस करते थे उसे स्पष्ट तौर पर कहते नहीं थे, सिर्फ छिपे-छिपे अफवाहें फुसफुसाते रहते थे। हमने जनवादी तरीका नहीं अपनाया था। उसे डर भी लग रहा था कि कहीं कोई उसे रोक न दे इसलिए जल्दी-जल्दी कहता गया, "जापानियों के जमाने में हर सफलता का श्रेय अफसरों को मिलता

था और गलतियाँ सभी हम मजदूरों के मत्थे मढ़ी जाती थीं। जनवाद में सारी गलतियाँ अफसरों के मत्थे होती हैं और सफलता का सारा श्रेय मजदूरों को मिलता है। वह भी सही नहीं है। अगर डायरेक्टर वांग न होते तो यहाँ यह सब-कुछ हो भी कैसे पाता? एक दूसरी बात और भी है कि वे अधिक मेहनत करने के कारण बीमार पड़ गए लेकिन उस समय भी जब वे बेहोश थे, हमारे बारे में ही सोचते रहते थे—यह श्रेय उनको ही है।"

लो चान-चुन और भी कहना चाहता था, लेकिन चेन सू-तिंग ने तभी खड़े होकर उसके मुँह के शब्द छीन लिए और उतावला हो बोला, "सारी गलतियों की जिम्मेदारी मेरे ऊपर थोपनी चाहिए। मैं नौकरशाहियत बरतता था। मैं निरंकुश अफसरशाही चलाता था। हर काम अपने हाथ में रखता था और किसी दूसरे की सलाह और सीख पर कान नहीं देता था। मेरी मनोवृत्ति थोथी, पुरानी मंचूकू-मनोवृत्ति थी।..."

इस समय सभी मजदूर कुछ-न-कुछ बोलने के लिए उतावले हो रहे थे और सुन को सभी को शान्त कर डायरेक्टर वांग को बोलने देने का अवसर देना मुश्किल हो रहा था। जब सभी खास-खास और मेहमान बोल चुके तो सहायक डायरेक्टर लु ने पारितोषिक वितरित किये। ये इनाम तीन तरह के थे—एक इनाम तो सभी मजदूरों को दिया गया जिसमें एक पोशाक, एक तौलिया, एक दाँतों का ब्रुश और साबुन की दो-दो बट्टियाँ थीं, दूसरा इनाम था जिसमें ये चीजें तो थीं ही साथ में ही २,००,००० डालर थे और तीसरा इनाम था जिसमें पहले इनाम की चीजों के साथ ४,००,००० डालर थे। औरतों के ग्रुप को भी जिसने आदमियों को खाना खिलाने, सफाई और मेहमानों के आराम का प्रबन्ध किया था, एक-एक पोशाक इनाम में दी गई। अन्तिम कार्यक्रम में मजदूरों द्वारा ही तैयार किये गए प्रहसन तथा दूसरे प्रदर्शन थे। किसी को सन्देह न हो इसलिए ली सी-स्यान ने भी मंच पर जाकर एक गाना

सुनाया। उत्सव-स्थान रात होने पर ४०० वाट के बल्बों से जगमगा उठा। उत्सव-भवन में भी मेजें लगी थीं और बाहर भी और उन पर लगभग एक दर्जन मछली और गोश्त की प्लेटें सजी रखी थीं। मेजों पर शराब लगाने के लिए स्थान नहीं बचा था इसलिए शराब के टीन एक कोने में रखे थे। उन्हें देख-देखकर शराब पीने वालों की प्यास और भी उत्तेजित होती जा रही थी। नौ बजे से ठीक पहले खाना तैयार था, लेकिन शराब के टीन नहीं खोले गए। चांग जुंग-सी को अपने पर नियन्त्रण रखना कठिन हो रहा था। वह अपनी बीवी से जितना दूर हो सकता था उतना दूर रह रहा था क्योंकि उसने उसे उस शाम को एक बूँद शराब भी न पीने की कड़ी चेतावनी दे रखी थी। "अगर हम आज रात को नहीं पीते तो कल क्या पियेंगे ?" वह अपने मन में ऐसे ही तर्क-वितर्क कर झल्ला रहा था कि तभी उसे पता चला कि डायरेक्टर वांग ने एक आज्ञा दी है—कि जब तक वह इशारा न करें तब तक कोई भी शराब न छुए। यह सुनकर वह व्यथित हो अपने ओंठ चाटता हुआ वहीं खड़ा रहा। उसके मन में कटुता फिर पैदा होने लगी थी। "यह कैसा जनवाद है ? पीने के बारे में ऐसा नियम तो जनवाद नहीं है !" वह खड़ा-खड़ा बड़े कटु भाव से यह सब सोच रहा था, तभी उसने अपने बगल में ली सी-स्यान को देखा। उसका चेहरा एकदम ज़र्द पीला पड़ रहा था और वह बड़ा उदास बीमार-सा और व्यग्र दीख रहा था। उसने सोचा—"सम्भवतः वह भी शराब के लिए परेशान हो रहा है।" जब वह यह सोच ही रहा था, तभी उसने सुना कि किसी ने डायरेक्टर वांग से टेलीफोन पर जाने को कहा है। पाँच मिनट बाद वे फोन पर से वापस लौट आये। वह भीतर जोर से कहते हुए घुसे। उनके माथे और हाथ की नसें फूल रही थीं और आँखें पूरी फटी हुई थीं। स्टाफ चीफ वू और कमिश्नर हो के पास से जाते हुए उन्होंने उन्हें बधाई दी और धीरे से कहा, "अब सब ठीक हो गया। सभी लोग पकड़ लिये गए हैं, कोई भी बचकर भाग नहीं

सका।....'' तब उन्होंने सभी से ज़ोर से कहा—"आओ, और अब शराब का एक दौर चलने दो।"

जब सभी शराब का एक-एक जाम पी चुके तब डायरेक्टर वांग व्याख्यान देने के लिए उठकर खड़े हुए। तभी दो सन्तरी तुंग को घसीट कर हॉल में सबके सामने ले आये। सभी अचम्भे में पड़ गए और जो लोग मैदान में बैठे खा-पी रहे थे वे भी हॉल के पास जमा हो गए। सभी सुनने के लिए कि क्या मामला है। साँस रोके खड़े थे। डायरेक्टर वांग ने कहा—"मज़दूर साथियो, अब हम पूरी तरह महसूस कर सकते हैं कि हमारा उत्सव खतरे से बाहर हो, शान्तिपूर्वक सफल हो रहा है। जो हमारे बिजली के कारखाने को तोड़ना चाहते थे इन सभी बदमाशों को जनता की संयुक्त सेना ने तीन मील दूर पर गिरफ्तार कर लिया है।" तालियों की गड़गड़ाहट से उन्हें रुक जाना पड़ा, फिर बोले—"हमारे बीच में भी जो गद्दार था वह भी पकड़ लिया गया है। क्योंकि तीन घण्टे पहले बहुत से हथियारबन्द साथियों ने इस बिजली-घर को घेर लिया था......कम्युनिस्टों के रहते, जनता की सरकार के रहते, जनता की संयुक्त सरकार के रहते तथा मज़दूरों की एकता के कायम रहते हमें किसी चीज़ से डरने की जरूरत नहीं है अगर हम तीन ही होते तो भी दुश्मन को परास्त होना पड़ता। आओ, हम इसी नाम पर एक जाम और पियें।" फिर उसने अपना जाम ऊपर उठा कर हवा में एक महराब बनाते हुए सब की अंगुआई की ओर एक बार में ही पूरा जाम साफ़ कर दिया।

कुमिन्तांग ने उत्सव के समय रात को छिपकर उपद्रव मचाने के लिए और कार्यकर्ताओं को मार डालने और मशीनों को तोड़ डालने के लिए अपने सैनिक भेजे थे। उनका एजेंट ली सी-स्यान भीतर घुस कर काम करने को था और तुंग तथा छोटे सुंग को उसमें इस्तेमाल करना था। लेकिन कम्यूनिस्टों ने छिपे-छिपे पहले से ही रक्षात्मक तैयारियाँ कर ली थीं और डेढ़ घण्टा पहले सभी को गिरफ्तार कर लिया

था। डायरेक्टर वांग की इस घोषणा के बाद सभी मज़दूरों के दिल आश्चर्य, खुशी, एहसान, अपने नेताओं पर विश्वास आदि अनेक मिश्रित भावो से विभोर हो उठे। थोड़ी देर की शान्ति के बाद उन्होंने ज़ोर से ताली पीटी, कुछ मारे खुशी के चिल्ला उठे, कुछ ने अपने शराब के प्याले आपस में टकराये जिनसे मधुर खनक गूँज उठी और कुछ के तो मारे खुशी के आँसू ही बह चले। चेन सू-विंग मारे शर्म के छिप रहा था। लेकिन तभी उसके मन में एक और विचार उठा। उसने सोचा कि ली सी-स्यान का भी इसमें जरूर हाथ होगा। इस विषय में डारेक्टर वांग से बात करनी चाहिए। लेकिन ली कहीं दिखाई नहीं दे रहा था, इसलिए पहले तो उसने उसे तलाश करने की ठानी। वह हाल में से निकलकर बाहर गया।

तुंग वांग के पैरों पर घुटनों के बल बैठा बुरी तरह सिसक रहा था। श्रीमती वांग मारे गुस्से के काँप रही थीं। उन्होंने अपना बच्चा किसी और की गोद में दे दिया था। वे एकाएक आगे बढ़कर गईं और जाकर एक हाथ से अपराधी का गिरेबान पकड़ लिया जिससे उसे अपना चेहरा ऊपर उठाना पड़ा। फिर उसने उसे दिल खोलकर कोसा—"हमने तो तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ा था, फिर भी तुमने मशीनों को बरबाद करने के लिए कुमिन्तांग वालों से साँठ-गाँठ कर ली। तुम भी एक मज़दूर हो, लेकिन तुम्हारे अन्दर सच्चे मज़दूर के खून की एक बूँद भी नहीं है। तुम्हारे बाप और भाई किसान हैं। उन्होंने तुझ-जैसा खरगोश कैसे पैदा किया ?"

इसके बाद डायरेक्टर वांग ने उसे वहाँ से ले जाने की आज्ञा दी। सभी ने फिर खुशी-खुशी खाया और पिया। जब शराब के दोनों टिन खाली होने को आए तभी सन्तरियों के प्रधान और चेन सू-तिंग ने भीतर आकर कहा कि ली सी-स्यान और छोटा सुंग भी पकड़ लिये गए हैं और पूछा कि क्या उन्हें भी भीतर ही ले आया जाय। डारेक्टर वांग ने उन्हें अलग ताले में बन्द करने की आज्ञा दी और ली सी-

स्थान की निगरानी में सचेत रहने को कहा। फिर वह सेनापति वू और कमिश्नर हो को साथ लेकर कैदियों से पूछताछ करने गये। मज़दूर रातभर उत्सव मनाते रहे।

उस घटना के बाद मजदूरों का चौकन्नापन और चौकसी भी बढ़ गई। उन्होंने अपने संगठन को और भी तगड़ा बनाया और उसमें रिपोर्ट करने का तरीक़ा भी अपनाया। दूसरे दिन ल्यू एह-सुहान ने चेन सू-तिंग से कहा—"बूढ़े चेन, आखिरकार तुम सही निकले। मशीन की ओर ही पूरा ध्यान देना और राजनीति पर कोई ध्यान न देना गलत है। इस बार देखो, अगर हम में राजनीतिक चेतना न होती तो फिर सारा मामला चौपट ही हुआ था कुमिन्तांग के बदमाश उसे नष्ट ही कर देते। वे हम मज़दूरों को भी न छोड़ते।"

लेकिन चेन सू-तिंग ने झेंपते हुए उत्तर दिया, "यह मेरे सही होने का प्रमाण नहीं है। मैं तो आरम्भ से ही गलती पर था। मैंने जो कम्यू-निस्टों के साथ रहने का निश्चय किया था सिर्फ़ उसे छोड़कर मेरे सारे काम गलत थे। मुझ में न तो कोई टेकनीकल कुशलता थी, न कोई राजनीतिक ज्ञान ही था और मेरे व्यवहार भी गलत थे। मैंने बुरे आद-मियों को भला समझने की गलती की। मैं शराब की एक खाली बोतल हूँ जिसमें जब शराब भर दी जाती है तब तो महक भर जाती है और जब खाली हो जाता है तो फिर उसमें क्या रह जाता है? सिर्फ सभा-पति सुन, वू और श्रीमती चांग को ही कहा जा सकता है कि वे राजनीति समझते हैं। मैं तो एक औरत के बराबर भी नहीं हूँ।"

एक दिन चांग जुंग-सी ने अपने बच्चे को गोद में लिये हुए उससे कहा, "तुम्हारी माँ वास्तव में एक सच्ची चीनी हीरोइन है।"

श्रीमती चांग ने यह सुनकर उसके अगल-बगल नज़र डालते हुए कहा, "क्या तुम अब भी कहते हो कि मैं सिर्फ बढ़ बढ़कर बातें ही कर सकती हूँ?"

चांग ने विकृत हँसी हँसते हुए कहा, "तुम, तुम बढ़-बढ़ कर बातें

कर सकती हो, चिल्ला सकती हो, लेकिन तुम चोरों को भी पकड़ सकती हो। सच, मैं तुमसे डरता था, लेकिन अब मैं तुम्हारा आदर करता हूँ।"

श्रीमती चांग भी हँस दी और बोली—"शुरू में तो मुझे विश्वास नहीं होता था कि औरतें भी कुछ कर सकती हैं। आह, सिर्फ कम्यूनिस्ट ही औरतों के प्रति इतने सदय होते हैं। उन्होंने वास्तव में हमें आज़ाद कर दिया है और हमें सही काम करने की शिक्षा भी दी।... सेक्रेटरी ल्यू वास्तव में बड़ी अच्छी हैं, वे बहादुर हैं और बड़ी अनुभवी हैं।...अगर इस छोटे यान की दिक्कत न होती तो मैं भी उनके साथ शामिल होना चाहती।..."

उत्सव के बाद सुन और वू स्यांग-ती दोनों ने अपने-अपने इनाम ५,०००,०० डालर मज़दूर यूनियन को मजदूर-हित के काम करने के लिए भेंट कर दिये, और उदाहरण के तौर पर एक छोटे से सहकारी संघ की स्थापना की। वू स्यांग-ती के पास बिजली का काफ़ी सामान था उसने वह भी कारखाने को भेंट कर दिया। मज़दूर-यूनियन में उसने दूसरों से भी अपील की, "ये चीज़ें मेरे किसी काम की न थीं और अगर मैं इन्हें अपने पास रखे रहता तो वास्तव में बड़े दुःख की बात होती। जापानी शासन में अगर आपने मुझसे ये चीज़ें देने को कहा होता तो मैं हरगिज़ भी न देता। पर अब जब कारखाना मज़दूरों का ही है तो मैं ये चीज़ें अपने पास क्यों रखूँ?"

तुरन्त ही ल्यू एह सुआन ने भी अपने पास के बिजली के सामान को कारखाने को भेंट कर दिया। थोड़ी देर में ही कई लोगों ने अपने अपने पास की मशीन, तार आदि बिजली के सामान कारखाने को भेंट कर दिये। तुंग के पिता ने भी जब गाँव में यह बात सुनी तो वह और उसका बड़ा लड़का, छोटा लड़का और पोता सभी मिलकर सारा सामान लेकर वहाँ पहुँच गए जिसे तुंग ने कारखाने से चुरा-चुरा कर वहाँ छिपा रखा था। वह बूढ़े सुन को देखकर कहने लगा—"मैं कुछ

कहने योग्य नहीं हूँ। ये चीज़ें कारखाने की ही थीं और इन्हें मैं लौटा रहा हूँ। मेरा लड़का लालच के कारण बुरी आदतों में फँस गया था, और बेईमानी पर उतर आया था। वह कायर और मौत से डरता था था, बन्दूक से डरता था; डरता था कि और लोग पैसा पैदा कर लेंगे और डरता था कि और लोग शक्तिशाली हो जायंगे।..." अपने खुरदुरे हाथों से उसने अपने झुर्री पड़े मुँह पर से आँसू पोंछे और बड़ी मुश्किल से अपने को सम्हालते हुए बोला—"उसने जो-कुछ किया उसके लिए उसे मर ही जाना चाहिए। मैं...मैं अब कुछ कह नहीं सकता। यह सब मेरी गलती थी कि मैंने उसे सही शिक्षा नहीं दी और बचपन से ही उसे आवारागर्दी करने दी। अगर तुम्हें उसके सुधरने की ज़रा भी आशा है और अगर सरकार दयावान हो, तो सभापति सुन मैं उसके लिए आपसे एक बार प्रार्थना करूँगा।"

बूढ़े तुंग की उम्र सतहतर वर्ष की थी और वह अब भी अपने हाथ से खेतों में काम करता था। सुनने उसे सान्त्वना दी और गाँव तक पहुँचा दिया। इस अवसर पर उसने गाँव पहुँचकर गांव वालों की एक सभा भी की और उन्हें समझाया कि बिजली-घर और गांव एक परिवार के समान है और अगर किसी एक को कुछ हो जाता है तो उसके नुकसान का असर दोनों पर समान रूप से पड़ेगा। उसने उनसे सचेत रहने को कहा कि कहीं बुरे आदमी वहाँ आश्रय न पा सकें। तब उसने बूढ़े तुंग के कारखाने की सभी चीज़ें लौटाने के व्यवहार की सराहना की और सभी से अपील की कि अगर उनके पास भी कुछ चीज़ें हों तो वे उन्हें वापस करदें ताकि जल्दी से उनके गाँव में बिजली लग सके। लौटते समय उसके साथ ढेर-सा बिजली का समान था।

एक महीने बाद गाँव का घर-घर बिजली के प्रकाश से जगमगा रहा था।

१०

मार्च १९४७ में जब राजनीतिक केन्द्रीय दफ्तर ने औद्योगिक केन्द्रों के श्रम सूरमाओं[1] का एक सम्मेलन बुलाया तो जल-विद्युत कारखाने से उसमें शामिल होने के लिए तीन श्रम सूरमाओं का नाम स्वीकृत किया गया—ये तीन थे बूढ़ा सुन, ल्यू एह सुआन, और वू स्यांग-ती।

फरवरी में जल-विद्युत कारखाने का आरम्भिक चुनाव हुआ था और सात अच्छे मज़दूर चुने गए थे—बूढ़ा सुन, वू स्यांग-ती, ल्यू एह-सुआन, श्रीमती चांग, ल्यू पिंग चेन, चूजू-चेन और ली चान-चुन। श्रीमती चांग का कारनामा था—दुश्मन के जासूसों के जाल का पता लगाना; लू पिंग चेन बड़ा मेहनती मज़दूर था और उसने बड़ी चतुरता से मज़दूरों के काम में नेतृत्व किया था तथा उसने पानी से चलने वाले यन्त्र और जोड़ने की मशीन की मरम्मत की थी, चूजू-चेन ने दो मिनट चालीस सैकेण्ड में छलनी के बदलने का एक नया तरीका खोज निकाला था और छानने का एक आसान और कम खर्च का तरीका खोजा था। ली चान-चुन ने लकड़ी की मिल को चालू करने में मज़दूरों का नेतृत्व किया था। इन सभी को किसी-न-किसी काम को सफलता से करने का श्रेय प्राप्त था, लेकिन जब उनकी समानता चू मिंग नदी के जिले के सभी अच्छे मज़दूरों के कारनामों से की गई तो वे उनकी समानता में कहीं न टिके। सिर्फ बूढ़ा सुन ल्यू एह सुआन

१. लेबर हीरो हीरो श्रम सूरमा

और वू स्यांग-ती ही उस समानता में आ सके। बूढ़ा सुन और ल्यू एह सुआन सम्मान-प्राप्त श्रम सूरमा थे जबकि वू स्यांग-ती पहली श्रेणी का श्रम-सूरमा था।

बूढ़े सुन के गुणों को सभी जानते थे; वह लोगों को एक करने में और पूरे ग्रुप की सामूहिक शक्ति का संचालन करने में अत्यन्त पटु था। उसने मशीनों की रक्षा की थी और उनकी मरम्मत करने का रास्ता खोजा था तथा सब को संघटित कर मरम्मत का कार्य सफलता से पूरा कराया था। पुराने सामान की रक्षा की थी और मज़दूरों और गांव वालों से उसे प्राप्त किया था। उसका एक गुण यह भी था कि वह जनता और नेताओं के बीच एकता स्थापित करना खूब जानता था। वू स्यांग-ती के बारे में भी सब जानते थे कि उसने अपने को जला-कर भी मशीनों की रक्षा की थी और इस तरह सबके हित के लिए त्याग किया था। उसने दूसरों को सुधारने में भी सहायता पहुँचाई थी। ल्यू एह-सुआन की खूबी खोज और आविष्कार में थी। उसने कई नई बातों की खोज की थी और नये आविष्कार किये थे, जिनसे कार-खाने को पैसे और सामान दोनों की ही काफी बचत हुई थी। उसने दो-तीन और मज़दूरों द्वारा छोटे पानी के पहिए की मरम्मत कराई थी। उस तरह अगर बिजली की मशीन में कोई गड़बड़ी उत्पन्न हो जाय और बाहर से कोई सहायता न मिल पाए तो उस छोटे पानी के पहिए से बिजली उत्पन्न की जा सकती थी। एक बार बिजली बिगड़ गई थी। मशीन से कुछ गड़बड़ी हो गई थी। सभी इन्जीनियर सिर मारते रहे पर कोई कारण उनकी समझ में नहीं आया। ल्यू एह-स्यान ने भी उससे दो दिन और दो रात सिर मारा और खराबी पकड़ ली और उसे ठीक कर मशीन फिर से चालू कर दी थी।

बूढ़ा सुन, ल्यू एह-सुआन और वू स्यांग-ती अपना-अपना इनाम ले चुकने के बाद शहर में स्कूल अस्पताल और दूसरी संस्थाओं को देखने गये। वे उस अस्पताल में भी गये जिसमें वू स्यांग-ती जल जाने

पर रहा था। वे जब वार्ड में घूम रहे थे तो वू ने स्विच दबाया और प्रकाश पर एक नज़र डाली तथा मुस्कराते हुए ल्यू एह सुश्रान से कहा, "जब मैं यहाँ था उस समय से कहीं ज्यादा तेज़ प्रकाश है।"

बड़ी नर्स ने भी बात का सिलसिला जोड़ते हुए कहा, "पहले से कहीं ज्यादा तेज़ प्रकाश है। पहले तो रोशनी सिर्फ एक लाल डोरे जैसी लगती थी।"

वू स्यांग-ती ने उससे ल्यू एह-सुश्रान का परिचय कराया और बताया—"यह इन्हीं के आविष्कार का परिणाम है कि शहर की रोशनी तेज़ हो गई है।"

बड़ी नर्स और बाकी सभी ने जो उस जगह मौजूद थे उसे प्यार और सराहना की आंखों से देखा।

वे लोहे का कारखाना भी देखने गए; और उन्होंने वर्दी बनाने का कारखाना और कारतूस बनाने का कारखाना भी देखा। कारतूस के कारखाने में एक विभाग के प्रधान ने उन्हें कारतूस बनाने का तरीका और एक मिनट में कितने कारतूस बनते हैं बहुत-सी बातें समझाई। बूढ़ा सुन सुन रहा था और सोच रहा था कि कैसे हर एक कारतूस जनता के और आज़ाद इलाके के दुश्मन को खत्म करेगा। "यही कारण है कि वे इतने सारे दुश्मनों को खतम करने में कामयाब हो रहे हैं।" उसने मन में सोचा—"हम मोर्चे के पिछवाड़े निर्माण-कार्य कर पा रहे हैं; भूमि और सम्पत्ति का बँटवारा कर पा रहे हैं। स्वतन्त्रता से शिक्षा पा रहे हैं और आज़ादी से व्यापार चला पा रहे हैं। वह इतना भावना से भर उठा था कि उसने एक हाथ से ल्यू एह-सुश्रान को पकड़ लिया और वू स्यांग-ती पर धक्का देकर भावावेश में बोला, "हमें एक मिनट के लिए भी बिजली नहीं बन्द होने देनी चाहिए। क्या तुम नहीं देख रहे कि अगर वह एक मिनट को भी बन्द होती है तो कारतूसों के उत्पादन में कितनी कमी आ जायगी।"

डायरेक्टर वांग जो उनके पीछे था, यह बात सुन ली और आगे

बढ़ते हुए उसकी बात में ही अपनी बात जोड़ते हुए बोला, "अगर तुम एक मिनट भी बिजली बन्द हो जाने देते तो इस जिले को दस लाख डालर से भी ज्यादा का नुकसान होगा। अगर तुम और मेहनत से काम करते हो और बिजली-उद्योग को और भी विकसित करते हो तो हम और भी ज्यादा-से-ज्यादा सामान पैदा कर सकते हैं।"

जब उन तीनों ने यह बात सुनी तो उनकी नसों में खून की रवानी तेज़ हो गई; दिलों की धड़कन बढ़ गई। उन्होंने अपने काम की जिम्मेदारी के महत्व को समझा और हर एक ने अपने-अपने दिल में ही प्रण किया, "मैं गारण्टी करता हूँ कि कोई गड़बड़ी नहीं होगी।" पर किसी ने मुँह से एक शब्द भी नहीं कहा।

शाम को राजनीतिक केन्द्रीय दफ्तर की ओर से उन्हें फिल्म दिखाया गया; एक फिल्म न्यूज़ रील था—जनवादी उत्तर-पूर्व, भाग दो। और दूसरा एक रूसी लड़ाई का फिल्म था। "अगर वे हमारे कारखाने को भी फिल्म में दिखाएँ तो बड़ा अच्छा हो," चू स्यांग-तो ने न्यूज़ रील देखते हुए कहा। "हम इस सम्बन्ध में डारेक्टर वांग से बातचीत कर सकते हैं," बूढ़े सुन ने भी अपनी सहमति प्रकट की। वे खेल देख रहे थे तभी एकाएक बिजली खराब हो गई। नौजवान दर्शकों ने अधीर होकर सीटी बजाना आरम्भ कर दिया। किसी एक ने चिल्ला कर कहा— "क्या कृपा कर बिजली कम्पनी के साथी आकर बिजली ठीक कर देंगे?"

चू स्यांग-तो तेज़ी से बिजली ठीक करने के लिए लपका। ल्यू एह-सुआन आँखें बन्द कर बूढ़े सुन की थोड़ी देर पहले कही बात पर सोचने लगा कि उसे पार्टी मेम्बर होने की इजाज़त मिल गई है। वह बड़ा खुश था और गम्भीरता से अपने को ही चैलेञ्ज करते हुए उसने कहा, "तो अब मैं एक कम्यूनिस्ट हूँ!" उसी समय उसे चेन सू-तिंग के लिए दुःख हुआ—"वह अब भी इस योग्य नहीं हो पाया है। अब भी उसे पार्टी सदस्य के लिए परखा जाना है।" अभी वह सोच ही रहा था

कि खेल फिर से आरम्भ हो गया और वू स्यांग-ती लौटकर अपनी जगह पर आ गया था। ल्यू ने उससे पूछा—"क्या बिगड़ा था ?"

पर्दे पर ही आँखें जमाए वू ने उत्तर दिया—"कोई विशेष खराबी न थीं; सिर्फ तार ज़रा ढीला हो गया था।"

दूसरे दिन एक चित्रकार बिजली-कम्पनी के बुज़ुर्ग श्रेष्ठतम मज़दूर का चित्र बनाने आया। वूढ़े सुन ने अपना हाथ घुमाते हुए कहा—"मेरे वूढ़े बदसूरत चेहरे में चित्र बनाने योग्य क्या है। कामरेड आओ तुम मेरे आइडिया पर एक चित्र बनाओ, या कई चित्र बनाओ। पहले में दिखाओ कि एक बिजली की मशीन को लोग-बाग देख रहे हैं, दूसरे में बिजली के प्रकाश में पढ़ते हुए विद्यार्थियों को दिखाओ, और तीसरे में किसी साथी को किसी दफ्तर में बिजली की रोशनी में काम करते दिखाओ; एक दूसरी तस्वीर में लोहे के कारखाने में मज़दूरों को काम करते दिखाओ और एक दूसरी में खुशहाल प्रसन्न परिवार-पिता, माता और लड़कों को बिजली की रोशनी में खाना खाते दिखाओ; और एक अन्य चित्र में दिखाओ कि सभी फिल्म देख रहे हैं और अन्तिम चित्र में दिखाओ कि एक मज़दूर आँखें फाड़े हुए श्विच-बोर्ड पर काम करने में व्यस्त है। मैं इस तरह चित्र बनवाना चाहता हूँ।"

जब चित्रकार ने उसके कथनानुसार चित्र बना लिए और उसे दिखा दिये तो उसने सिर हिलाकर धीरे से कहा, "बहुत अच्छे चित्र बनाए हैं, सिर्फ जो मज़दूर स्विच-बोर्ड पर काम कर रहा है उसकी आँखें काफी चौड़ी नहीं हैं; जितनी ही चौड़ी होतीं उतनी ही अच्छी होतीं।" तब उसने मुस्कराते हुए आगे कहा, "मैं सिर्फ बात कर सकता हूँ। मैं चित्र बना नहीं सकता। जब मेरा टाइगर प्राइमरी स्कूल में पढ़ता था तब उसे तरह-तरह के चित्र बनाने का बड़ा शौक था। कामरेड आपको धन्यवाद है !"

छः महीने बाद जल-विद्युत कारखाने में काम करने वालों में कुछ परिवर्तन हुए। ल्यू पिंग चेन डायरेक्टर बन गया और बूढ़ा सुन सर्व--

सम्मति से सहायक डायरेक्टर चुना गया। चू स्यांग-ती मज़दूर-यूनियन का सभापति चुना गया और साथ-ही-साथ उसे कर्मचारियों के विभाग के मैनेजर का काम भी सौंपा गया। ल्यू एह्-सुश्रान बिजली विभाग का मैनेजर ही रहा। चेन सू-तिंग की बदली बिजली कम्पनी के लिए हो गई और कम्पनी ने उसकी जगह पर काम करने के लिए किसी और को भेज दिया। चू ज़ू-चेन का पहले का स्वप्न पूरा हुआ। अब वह तेल के पम्प का इञ्चार्ज था। ली चान-चुन की तरक्की सामान के गोदाम विभाग के मैनेजर की हैसियत से हो गई और वह धीरे-धीरे ढिलाई और ज़िद्दीपन छोड़ता जा रहा था। सिर्फ सवेरे उठने में उसे ज़रूर दिक्कत होती थी और खाने के बाद के उसके आलस्य को देखकर लोगों को उसके पुराने आलसी जीवन की याद आ जाती थी। जब कभी मुश्किल काम आ पड़ता था उसका ज़िद्दीपन वापस आ जाता था और बिना खाये पिये और सोये उसमें लगा रहता और किसी की न सुनता था। गोदाम-विभाग के कर्मचारी भी अनजाने उसी के रास्ते पर चल रहे थे। काम पर कड़ी मेहनत करने के अलावा वह सांस्कृतिक पढ़ाई में भी मेहनत करता था। उसने 'दीवाल-अखबार' के लिए एक कविता लिखी थी :

मेरा नाम ली चान चुन है,
जो वस्तुओं का निर्माण करता है।
आरी घर-घर करती है, और
लकड़ी का बुरादा मेरे ऊपर उड़कर,
छा जाता है।
जब जापानी यहाँ थे
कोई भी उनके लिए मन से काम
नहीं करता था;

हालाँकि श्रीमती चांग ही केवल जनता की सरकार के शासन में धूर्त और सुस्त थी। वह संकुचित विचारों से पूरी तरह छुटकारा नहीं

पा सकी थी और दूसरी ही औरतों की तरह साधारण-साधारण-सी बातें सोचती रहती थी; फिर भी वह दूसरों के साथ-साथ ही प्रगति करती जा रही थीं और अब वे मजदूर यूनियन की संगठन मन्त्री चुनी गई थीं। इस वर्ष उसने सभी औरतों को तरकारी बोने के काम में लगा दिया था और सूअर और मुर्गी पलवा दी थी। दो मोटरगाड़ियों की भी मरम्मत कर ली गई थी और चांग जुंग-सी शहर और जादे गरडिल झील के बीच अक्सर चक्कर लगाया करता था।

जादे गरडिल झील सदैव से ही बड़ा सुन्दर और आकर्षक स्थान था और चूँकि अब वहाँ के मज़दूरों ने अनेक अच्छे-अच्छे प्रशंसा के काम किये थे इसलिए सम्बन्धित दफ्तरों के अनेक जिम्मेदार अधिकारी उस स्थान पर घूमने आये। मन्त्री ली, उत्तर-पूर्व बोर्ड के विभाग के प्रधान वांग और उत्तर-पूर्व की राजनीतिक काउन्सिल के सभापति लिन तथा और दूसरे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति वहाँ आये थे। बाहर के उत्पादक संगठनों के लोग भी वहाँ आते थे।

एक दिन किसी दफ्तर का प्रधान कुछ कार्यकर्ताओं को वहाँ घुमाने लाया। बूढ़ा सुन बिलकुल ठीक पहले जैसा ही था। वह मेहमानों को हर मशीन के कार्य को विस्तार से समझाता हुआ घुमा रहा था और बताता जाता था कि इसे किस प्रकार दुबारा ठीक किया गया था। जब वह समझाना समाप्त कर चुका तो एक बिलकुल नौजवान कार्यकर्ता ने जल्दी से कहा—"यानी वास्तविक संचालन शक्ति तो पानी और तेल में हुआ?"

इंचार्ज कामरेड ने मुस्कराते हुए उसे सुधारा और कहा—"महत्त्व पूर्ण चीज़ तो यह है कि ये अच्छे मज़दूर हैं।"

बूढ़े सुन ने अपने धीमे किन्तु जोरदार स्वर से कहा, "अगर जनता की सरकार का शासन न होता तो मज़दूर भी कुछ न कर सकते थे।" सभी सुनकर मुस्करा दिए।

मई के महीने में एक दिन खाना खाने के बाद कुछ लोग अपने

काम पर गए थे, कुछ खेत जोतने में लगे थे और कुछ नहा रहे थे; पहाड़ी पर बच्चे खेल-कूद रहे थे। बूढ़ा सुन पहाड़ी के बगल में एक पेड़ के नीचे बैठा था और बिजली-घर की ओर देख रहा था। वर्षों की याद ताज़ी होकर उसके मस्तिष्क में चलचित्र की भाँति घूम रही थी। उसने हिसाब लगाया। करीब ठीक एक वर्ष पहले ही तेल कांछने की घटना हुई थी। इस वर्ष कारखाने में कोई साधारण परिवर्तन नहीं हुए थे। विकास भी कम नहीं हुआ था फिर भी बहुत-सी बातें अब भी खटकती थीं। हालाँकि मज़दूरों के रहने की बड़ी बैरिक फिर से बन गई थी, फिर भी बहुत से छोटे-छोटे झोंपड़े, सभा-भवन और दफ्तर फिर से बनने ज़रूरी थे। कारखाने में कोई डाक्टर नहीं था और इलाज के लिए शहर जाना काफी दूर पड़ता था। अगर कोई शोचनीय रूप से बीमार होता तो उसे शहर तक मोटर-कार से ले जाने में कई घण्टे लग जाते थे। इसलिए वहाँ एक चिकित्सा-विभाग खुलना भी ज़रूरी था। कारखाने में कोई मास्टर भी न था। इसलिए मज़दूरों की राजनीतिक और सांस्कृतिक चेतना को विकसित करना भी कठिन हो रहा था। सहकारी संघ का पुनःसंगठन भी आवश्यक था, ताकि सभी का जीवन-स्तर ऊँचा उठ सके। एक क्लब की भी स्थापना होनी चाहिए थी जिसमें खेल-कूद का और गाने-बजाने का सामान हो ताकि मज़दूर वहाँ आनन्द ले सकें और अपनी थकान मिटा सकें। इनके अतिरिक्त भी बच्चों के स्कूल, सफाई आदि अनेक चीज़ों की आवश्यकता थी।

'खैर, और सब तो होती रहेंगी और होंगी ही, हमें पहले चू स्यांग-ती के लिए एक अच्छी-सी बीबी तलाश करनी चाहिए। उसकी जवानी अब ढलाव पर है, तैंतीस वर्ष की उसकी उम्र हो चली है,' बूढ़े सुन ने सोचा। तभी एक-दूसरा विचार मन में उठा—'मैं ?—मैं बूढ़ा नहीं हूँ। अभी तो पचास का भी नहीं हुआ—अभी तो मैं जवान हूँ।' और वास्तव में यह बात सच है कि पचास के करीब होकर भी बिना बच्चे के रहने के अर्थ हैं कि उसकी खुशी का प्याला भर नहीं

सकता। हालाँकि उसे खुशी के दूसरे सहारे मिल गए थे दूसरों के लिए काम करते रहने के रूप में और अपनी मेहनत के फल के रूप में; फिर भी बूढ़े सुन के जीवन में ऐसे क्षण आते थे जब वह अपने जीवन में कमी अनुभव करता था। उसने यह कहकर अपने को सान्त्वना दी, "कोई जल्दी नहीं है, मैं अभी कुछ और साल प्रतीक्षा कर सकता हूँ।" थोड़ा इधर-उधर घूमने का विचार कर वह उठकर घूमने लगा। ज्यों ही उसने लकड़ी वाला छोटा पुल पार किया कि उसके कानों में नदी में बहते हुए तेज़ पानी की आवाज़ पड़ी। वह उसे ध्यान से सुनने लगा। आश्चर्य है? जापानियों के समय में वह आवाज़ की तेज़ी से प्रभावित नहीं हुआ था। उसने मन में कहा—"देखो, पानी में कितनी तेज़ी है—यह उतनी तेज़ी और प्रसन्नता से कलकल ध्वनि कर रहा है जैसे नौजवान मज़दूर करते हैं!' वह वहीं खड़ा रहा और झुककर आवाज़ सुनने लगा। अब उसने देखा कि बिजली की मशीन ने इस धारा में भी आश्चर्यजनक परिवर्तन पैदा कर दिया है। सन्ध्या कालीन सूरज इतना बड़ा, इतना लाल और इतना गोल था। नदी के पानी पर उसका चमकदार झिलमिल प्रतिबिम्ब पड़ रहा था। सन्ध्या-कालीन हवा की मस्ती वातावरण में व्याप्त थी। हवा की पेंगों पर झूलती किरणें पानी में बड़ी मनमोहक झिलमिल समा उत्पन्न कर रही थीं। यह समा दिन-भर के थके मज़दूर की सारी थकान को मिटाकर उसे ताज़गी प्रदान करती थी। वह उसी दृश्य में विभोर हो गया था। वहाँ से थोड़ी दूर पर कुछ मज़दूर अपनी कुदाली चलाने में व्यस्त थे और औरतें डोलचियों में हरी तरकारी भरकर घर को ले जा रही थीं। बच्चे किलकारियाँ भरते अपने माँ-बाप से मिलने दौड़ रहे थे। बूढ़े सुन ने इस सन्ध्या-कालीन नदी में डूबते हुए सूरज की सुन्दर आभा की ओर संकेत करते हुए कहा—"देखो, कितना आकर्षक दृश्य है। कितना दुःख है कि हमारे बीच कोई ऐसा नहीं है जो इसका चित्र बना सके। इसका चित्र बड़ा सुन्दर होगा।"

छोटा लिंग बूढ़े सुन के कुर्ते की बाँह पकड़ने के लिए उछला और चिल्लाकर बोला, "जब मैं स्कूल में पढ़ने जाऊँगा तो मैं तस्वीरें बनाना सीखूँगा, और मैं उसका चित्र बनाऊँगा।"

बूढ़े सुन ने एक हाथ से उसकी पीठ थपथपाई और दूसरे हाथ से उसकी मुलायम और चिकनी ठुड्डी को सहलाते हुए ऊपर उठाया और प्यार-भरी आवाज़ में उससे कहा—"जब तक तुम तस्वीर बनाने योग्य होगे उस समय तक तो तुम्हारे लिए चित्र बनाने को संसार में और भी अनेकों इससे भी कहीं ज्यादा सुन्दर आकर्षक और आश्चर्यजनक चीज़ें होंगी।"

अस्त होते सूरज की इस मनमोहक आभा को थोड़ी देर तक विभोर होकर निरखने के बाद मर्द और औरतें, जवान और बूढ़े अपनी बस्ती को लौट गये।